



शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान
मध्यप्रदेश, जबलपुर
स्थापना : 16 अगस्त 1954



बालाध्याण

उत्कृष्ट बाल शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थान द्वारा वन्दे मातरम् 150 को समर्पित

150
वन्दे मातरम्



तीसवां अंक

सत्र-2025-26

वन्दे मातरम्

सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्,
शस्यश्यामलाम् मातरम् । वन्दे मातरम् ॥1॥

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्वुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम् । वन्दे मातरम् ॥2॥

कोटि-कोटि कण्ठ कल-कल निनाद कराले,
कोटि-कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
के बॉले तुमि अबले,
बहुबलधारिणी नमामि तारिणीम्,
रिपुदलवारिणी मातरम् । वन्दे मातरम् ॥3॥

तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म,
त्वम् हि प्राणः शरीरे, बाहुते तुमि माँ शक्ति,
हृदये तुमि माँ भक्ति, तोमारेई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे ।
वन्दे मातरम् ॥4॥

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्,
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम् । वन्दे मातरम् ॥5॥

श्यामलाम् सरलाम्, सुरिमताम् भूषिताम्,
धरणीम् भरणीम् मातरम् । वन्दे मातरम् ॥6॥

- बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

बालारुण

वर्ष : 2025-26



तीसवां अंक

संरक्षक - प्राचार्य

डॉ. राममोहन तिवारी

सम्पादक

श्रीमती अंजलि सक्सेना

उप-सम्पादक

श्रीमती बरखा खरे

सम्पादक मण्डल

श्रीमती अर्चना शर्मा

डॉ. समीहा तिवारी

डॉ. शशि सराफ

श्रीमती शीबा खान

श्रीमती रशिम दवे

प्रशिक्षणार्थी प्रतिनिधि

कु. वापुष्टिमा मार्को, कु. प्रतीक्षा तिवारी

शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान (मॉण्टेसरी)

नेपियर-टाऊन, जबलपुर, मध्य प्रदेश

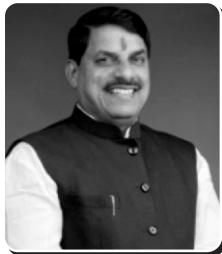
फोन : 0761-2409188, 2409888



6, श्यामला हिल्स,
भोपाल - 462 002

कंदेर

क्रमांक-20/मु.मं.प्रे.प्र./26
भोपाल, दिनांक :- 15/01/2026



डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

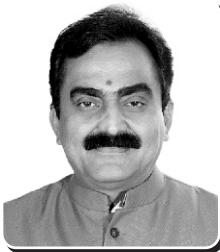
प्रसन्नता का विषय है कि शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान, जबलपुर की वार्षिक पत्रिका बालारूण के 30वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

शिक्षण संस्थानों के प्रकाशन विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति का मंच उपलब्ध करवाते हैं। संस्थान की गतिविधियों का विवरण भी स्मारिका से प्राप्त होता है।

आशा है यह प्रकाशसन सफल होगा। हार्दिक शुभकामनाएं।



(डॉ. मोहन यादव)



राकेश सिंह
मंत्री
लोक निर्माण विभाग
मध्यप्रदेश शासन



संदेश

निवास : बी-10, चार इमली, भोपाल (म.प्र.)

मंत्रालय : कक्ष क्र. बी-105,

बल्लभ भवन क्र. 11, भोपाल

दूरभाष : (नि.) 0755-2553939, 2760188

मंत्रालय: 0755-2708388

भोपाल, दिनांक : 23.12.2025

पत्र क्र. 940/मंत्री/लो.नि.वि./2025

अत्यंत हर्ष की बात है की शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान जबलपुर अपनी शालेय पत्रिका “बालारुण” के 30वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। जिसमें छात्रों एवं शिक्षकों के सृजनात्मक लेखों के प्रकाशन के साथ संस्था की विभिन्न उपलब्धियों का भी समावेश होगा, ऐसा मेरा मानना है।

संस्था बाल केन्द्रित शिक्षा की सुगंध से संस्था के परिवेश को सदैव सुवासित रखती है। बाल कक्षाओं और शिक्षकों के आपसी व्यवहार, संवेदनशीलता, मर्यादा और व्यवहार का संतुलन सदैव अनुकरणीय रहा है।

मांटेरसी संस्था में गतिविधि आधारित शिक्षा, शिक्षण को और अधिक संवेदनशीलता प्रदान करती है।

पत्रिका के संपादक, गुरुजनों एवं छात्रों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(राकेश सिंह)



न्यायाधीश विवेक रूसिया
मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान, जबलपुर अपनी वार्षिक पत्रिका ‘बालारुण’ के 30वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। विशेष रूप से यह जानकर गर्व की अनुभूति हो रही है कि यह अंक ‘वन्देमातरम्’ के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में समर्पित है।

इस प्रतिष्ठित संस्थान का पूर्व छात्र (Ex-Student) होने के नाते, मेरा यहाँ से गहरा भावनात्मक लगाव रहा है। यह संस्थान न केवल शिक्षा का केंद्र है, बल्कि वह आधारशिला है जहाँ भविष्य की पीढ़ियों को गढ़ने वाले शिक्षकों का निर्माण होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के परिप्रेक्ष्य में, पूर्व प्राथमिक शिक्षा (ECCE) के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता और खेल-आधारित शिक्षण पद्धति की सराहना की जानी चाहिए।

पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए मैं प्राचार्य डॉ. राम मोहन तिवारी जी, समस्त शिक्षकों, प्रशिक्षणार्थियों और कर्मचारियों को हार्दिक बधाइ एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। मुझे विश्वास है कि ‘बालारुण’ का यह अंक ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ सभी पाठकों के लिए प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

संस्थान की निरंतर प्रगति की कामना सहित।

(न्यायाधीश विवेक रूसिया)
मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय



आशीष दुबे
संसद सदस्य (लोक सभा)
जबलपुर (म.प्र.)



कार्यालय:- 1387, नेपियर टाउन
होमसाइंस कॉलेज रोड, जबलपुर (म.प्र.)
पिन-482001 दूरभाष - 0761-2925737
मोबाइल : 9425125737
ई-मेल : ashishdubey.mp@sansad.nic.in

क्रमांक/नि./73/2005 दि. 29.12.2025

शंदेश

हर्ष का विषय है कि शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान, जबलपुर अपनी वार्षिक पत्रिका “बालारुण” के 30वें अंक (वंदेमातरम् 150 को समर्पित) का प्रकाशन करने जा रहा है। निश्चित ही यह पत्रिका विद्यार्थियों के लिये रुचिकर और ज्ञानवर्धक होगी, ऐसा मुझे विश्वास है।

पत्रिका प्रकाशन पर समस्त विद्यालय परिवार सहित संपादक मंडल को बहुत-बहुत शुभकामनाएं...

(आशीष दुबे)



अभिलाष पाण्डेय
(विधायक)
सेवक - जबलपुर उत्तर 98



कार्यालय: एफ-1210, होम साइंस
कॉलेज के सामने, नेपियर टाउन, जबलपुर
दूरभाष: 0761-4084976 मो: 9826561218
ईमेल : abhilash645@gmail.com
officeofabilashpandey@gmail.com

शंदेश

पत्र क्रमांक/1073/स्था./एमएलए/2025
दिनांक : 26.12.2025

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिददुःखभाग्भवेत् ॥
मुझे जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान जबलपुर म.प्र. विगत 70 वर्षों से महिला प्रशिक्षणार्थियों को पूर्व प्राथमिक शिशु शिक्षा से संबंधित प्रशिक्षण देकर गौरवमयी योगदान को आत्मसात किये हुए प्रदेश की एक मात्र शासकीय संस्था है। नयी शिक्षा नीति (NEP) 2020 में शाला पूर्व शिक्षा को अनिवार्य किये जाने पर संस्थान का कतर्व्यबोध और भी बढ़ गया है। यह गौरवमयी त्रिवेणी संस्थान अपनी वार्षिक पत्रिका बालारुण के 30वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है, जो कि वंदेमातरम् 150 को समर्पित है। पत्रिका के प्रकाशन अवसर पर मैं संस्थान के समस्त सदस्यों को हृदय से शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ, एवं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी संस्थान द्वारा इस तरह की पत्रिका का प्रकाशन किया जाता रहेगा। शुभकामनाओं सहित

(अभिलाष पाण्डेय)



जगत बहादुर सिंह अनू
महापौर-नगर निगम



मोबाइल: +91 9301109796
कार्यालय नं. : 0761-2611451
नगर पालिका निगम, जबलपुर (म.प्र.)

दिनांक : 03/12/2025

अंदेश

मैं यह अभिज्ञात होने पर अतीव प्रसन्न हूं कि शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान जबलपुर द्वारा वार्षिक शालेय पत्रिका **बालारूण** के 30वें अंक वर्ष 2025-26 (वन्देमातरम् 150 को समर्पित) का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इसमें अन्तर्निहित रचनाओं और शालेय गतिविधियों के चित्रणों से छात्राओं में अपने भविष्य के प्रति जागरूक और अनुशासित रहने की भावनाओं का उन्नेष हो सकेगा जिससे वे महिला सशक्तीकरण को चरितार्थ करने में सफल हो सकेंगी। साथ ही छात्र जीवन में जिन सदाचारों के गुणों का प्रादुर्भाव होता है, निश्चिततौर पर वे ही तत्व जीवन में हर पल सार्थकता प्रमाणित करते रहने में सक्षम बनाते हैं।

साथ-ही-साथ संस्था 70 वर्षों से महिला प्रशिक्षणार्थियों को पूर्व प्राथमिक शिशु शिक्षा से संबंधित प्रशिक्षण देकर गौरवमयी योगदान को आत्मसात किये हुये हैं। नयी शिक्षा नीति 2020 में शाला पूर्व शिक्षा को अनिवार्य किये जाने पर संस्थान का कर्तव्यबोध और भी बढ़ गया है, उनसे विचारों तथा अनुभवों की श्रेष्ठता से समाज के कल्याण का दिशा - बोध और भी समृद्ध बने।

सम्प्रति, मैं पत्रिका की बहुमुखी सुसफलताओं के लिये हार्दिक शुभकामनायें प्रगट करता हूं।

(जगत बहादुर सिंह “अनू”)



क्षी. श्रीनिवास राव
उपाध्यक्ष

मा.शि.मंडल, म.प्र. भोपाल

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान, जबलपुर के द्वारा वार्षिक पत्रिका “बालारूण” के 30वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

आज के बालक ही भविष्य के निर्माता हैं। बचपन से ही उन्हें शिक्षित और संस्कारित करने के साथ स्वाध्याय के प्रति उनका रूझान उत्पन्न करने के लिए बाल मनोविज्ञान पर आधारित कविता, कहानी और अन्य प्रेरणादायक सामग्री युक्त पत्रिका का प्रकाशन अपने आप में महत्वपूर्ण है। आशा है पत्रिका में बच्चों के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से ज्ञानवर्धक सामग्री का समावेश किया जा सकेगा।

मैं शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान, जबलपुर के इस प्रकाशन की सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूं।



अंदेश

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश
शिवाजी नगर, भोपाल
दूरभाष (का.): 0755-2993181
मो. 9425152264
ई-मेल: shrinivas67@gmail.com
Website: mpbse.nic.in

क्रमांक : माशिम/12/01
दिनांक 19.12.2025

(क्षी. श्रीनिवास राव)



शिल्पा गुप्ता, आई.ए.एस.
आयुक्त, लोक शिक्षण म.प्र.

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि प्राचार्य, शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान, जबलपुर, मध्यप्रदेश द्वारा वार्षिक शालेय पत्रिका “बालारूण” का प्रकाशन किया जा रहा है।

यह पत्रिका निश्चित रूप से विद्यार्थियों की रचनात्मकता और छिपी हुई प्रतिभा को एक मंच प्रदान करेगी। नई शिक्षा नीति 2020 में शाला पूर्व शिक्षा को अनिवार्य किये जाने पर संस्थान का कर्तव्यबोध और भी बढ़ गया है। “बालारूण” केवल एक पत्रिका ही नहीं, बल्कि संस्थान की गतिविधियों, क्षैक्षणिक उपलब्धियों और छात्रों के विचारों का सच्चा दर्पण है। यह विद्यार्थियों में लेखन, कला और साहित्य के प्रति रुचि को बढ़ावा देने का एक सराहनीय प्रयास है। मैं संस्थान के समस्त शिक्षकों और बच्चों को इस प्रशंसनीय पहल के लिए बधाई देती हूँ और सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ। मेरी आरे से पत्रिका “बालारूण” के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।



राघवेन्द्र सिंह
कलेक्टर
जिला जबलपुर

अंदेश

कार्यालय कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी

जिला-जबलपुर, मध्यप्रदेश, भारत

पिन-482002

दूरभाष : +91 761 2624100 (का.)

+91 761 2603333 (नि.)

फैक्स : +91 761 2624200 (का.)

E-mail : dmjabalpur@mp.gov.in

Website : www.jabalpur.nic.in

शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान, जबलपुर द्वारा प्रकाशित की जा रही वार्षिक पत्रिका “बालारूण” के 30वें अंक के प्रकाशन के शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि विगत कई दशकों से यह संस्था पूर्व प्राथमिक एवं प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण प्रदान करते हुए बाल शिक्षा, महिला सशक्तिकरण तथा राष्ट्र निर्माण में सतत एवं उल्लेखनीय योगदान दे रही है। “बालारूण” पत्रिका के माध्यम से शैक्षिक नवाचार, विचार, अनुभव एवं उपलब्धियाँ समाज के समक्ष प्रस्तुत होती हैं, जो निश्चित ही शिक्षकों, प्रशिक्षणार्थियों एवं पाठकों के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध होगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी शैक्षिक मूल्यों, रचनात्मकता एवं बौद्धिक समृद्धि को प्रोत्साहित करेगा तथा संस्थान की गरिमा को और अधिक ऊँचाइयों तक ले जाएगा।

इस सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल, लेखकों एवं समस्त सहयोगियों को हार्दिक बधाई देते हुए पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।



के. के. द्विवेदी
संचालक-लोक शिक्षण म.प्र. शासन

अध्येता

अर्द्ध शास. पत्र क्र. पी.ए./संचालक 2026/02
दूरभाष ऑफिस : 0755-2583650
फैक्स : 0755-2583651
ईमेल: dpimpbpl@gmail.com

लोक शिक्षण संचालनालय
मध्यप्रदेश शासन
गौतम नगर, भोपाल-462023
दिनांक 07/01/2026

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान जबलपुर (म.प्र.) द्वारा वार्षिक पत्रिका “बालारुण” का वर्ष 2025-26 में 30वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

बालारुण पत्रिका संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों के बहुमुखी प्रतिभा के प्रतिबिम्बन का माध्यम है, जो उनकी लेखनी, अभिव्यक्ति, चित्रकला की कूँची, खेलकूद के माध्यम से शिक्षा संबंधी अनेक कौशलों तथा साथ ही अनुभवी विषय विशेषज्ञ शिक्षकों के ज्ञानवर्धक, शोधपूर्ण नवाचारों का प्रामाणिक दस्तावेज है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं संस्थान की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए मैं संस्था परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(के. के. द्विवेदी)



अर्शन कुमार इंगले
संयुक्त संचालक लोक शिक्षण
संभाग-जबलपुर

अध्येता

कार्यालय संयुक्त संचालक लोक शिक्षण
जबलपुर संभाग, जबलपुर
जिला पंचायत के पास, छोटी ओमती, जबलपुर
दूरभाष : 0761-2933249
ई-मेल: jdejaba@gmail.com

यह प्रसन्नता का विषय है शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान जबलपुर (मांटेसरी) की संस्थान पत्रिका “बालारुण” 2025-26 (वन्देमातरम् 150 को समर्पित) अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। NEP 2020 के क्रियान्वयन काल में शाला पूर्व शिक्षा हेतु पूर्व प्राथमिक कक्षाओं एवं शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में द्रुत विस्तार हो रहा है। यह अंक निश्चित ही संस्थान के सुदीर्घ अनुभव और गुणवत्ता को संजोय हुये समाज को सकारात्मक उर्जा प्रदान करेगा।

मैं शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान जबलपुर की पत्रिका “बालारुण” 2025-26 के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(अर्शन कुमार इंगले)



घनश्याम सोनी
जिला शिक्षा अधिकारी
जबलपुर (म.प्र.)

मुझे यह जानकर बेहद प्रसन्नता हो रही है कि शा. पू. प्रा. प्रशिक्षण संस्थान द्वारा (वन्दे मातरम् 150 को समर्पित) वार्षिक पत्रिका बालारुण के 30वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। संस्था में योग्य शिक्षक व अभ्यास शाला के रूप में शिक्षा मांटेसरी / गतिविधि आधारित खेल पद्धति बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक होगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि शिक्षण पद्धति नई शिक्षा नीति 2020 के साथ मिलकर बच्चों के विकास के सम्पूर्ण आयामों को और भी पुष्टि व पल्लवित करने में सहायक सिद्ध होगी।

खंडेश

कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी
जिला जबलपुर
फोन : 0761-2625670
ई-मेल : deojbp@gmail.com

पत्र क्र./विद्या/2025/10509
दिनांक - 18/12/2026



(घनश्याम सोनी)



अमरीश मिश्र
नेता प्रतिपक्ष
नगर पालिका निगम, जबलपुर



खंडेश

पार्वद-सुभद्रा कुमारी चौहान वार्ड क्र. 32
मोबा. 9300122042, 6269002832
नगर पालिका निगम, जबलपुर (म.प्र.)
निवास: 2332/36, राइट टाउन, डेयरी के पास
सुभद्रा कुमारी चौहान वार्ड, जबलपुर

बड़े हर्ष का विषय है कि शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान जबलपुर के 70 वर्ष पूर्ण हो गये हैं। इसके लिए मैं, आप सभी को बधाई देता हूँ। इस संस्था द्वारा महिला प्रशिक्षणार्थियों को पूर्व प्राथमिक शिशु शिक्षा से संबंधित प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त कर महिलाएँ शिक्षा जगत को सही दिशा की ओर अग्रसर करने में अपना सहयोग प्रदान करेंगी।

इस संस्थान में अबोध-बालिकाएँ शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं उन्हें खेल-खिलौनों के माध्यम से शिक्षित कर सुबोध बनाया जा रहा है। जिससे हम सभी को बालक-बालिकाएँ भविष्य में सभ्य नागरिक के रूप में देखने को मिलेंगे।

मैं, वार्षिक पत्रिका बालारुण के 30वें अंक के प्रकाशन अवसर पर संस्थान के सभी पदाधिकारी, शिक्षक एवं बालक-बालिकाओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।



(अमरीश मिश्र)



प्राचार्य की लेखनी से ...

मेरे अनुभव और संस्थान की
उपलब्धियाँ



किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसकी शिक्षा व्यवस्था की सुदृढ़ता पर निर्भर करती है। शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह व्यक्ति के चरित्र, आचार-विचार, सामाजिक चेतना और नैतिक मूल्यों का निर्माण करती है। एक प्रभावी शिक्षा प्रणाली समाज को दिशा देने के साथ-साथ भावी पीढ़ी को जिम्मेदार नागरिक बनाने का कार्य करती है।

शिक्षा विभाग में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए यह अनुभव हुआ कि किसी भी व्यवस्था की सफलता उसके पदों की ऊँचाई से नहीं, बल्कि कार्य के प्रति समर्पण और सकारात्मक सोच से निर्धारित होती है। अध्यापन, प्रशिक्षण एवं शैक्षिक प्रशासन के विभिन्न दायित्वों ने यह सिखाया कि समयबद्धता, कर्तव्यनिष्ठा, पारदर्शिता, अनुशासन, संवेदनशीलता और नैतिकता जैसे गुण शिक्षा व्यवस्था की आधारशिला हैं। जब इन मूल्यों को व्यवहार में उतारा जाता है, तभी सार्थक परिणाम प्राप्त होते हैं।

शिक्षण कार्य के दौरान विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान दिया गया। अध्ययन के साथ-साथ खेल, योग, सांस्कृतिक गतिविधियाँ और नैतिक शिक्षा को भी समान महत्व दिया गया, जिससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक जिम्मेदारी का विकास हो सके। पूर्व-प्राथमिक स्तर से ही बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण - भविष्य के सशक्त समाज की नींव रखता है। इसी दृष्टिकोण के साथ शा.पू.प्राथ.प्रशि.संस्थान ने शिक्षा के क्षेत्र में एक विशिष्ट पहचान स्थापित की है। संस्था का परीक्षा परिणाम निरंतर उत्कृष्ट रहा है, जो इसकी सुदृढ़ शिक्षण-प्रणाली और अनुशासित शैक्षिक वातावरण का प्रमाण है। वर्ष 2021-22 में प्राप्त राज्य स्तरीय पर्यावरण पुरस्कार संस्थान की उपलब्धियों में एक महत्वपूर्ण बिंदु है। यह सम्मान इस बात का प्रतीक है कि संस्था शिक्षा के साथ-साथ पर्यावरणीय चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व को भी महत्व देती है।

इस सफलता के पीछे संस्था के समर्पित शिक्षकों, प्रशिक्षार्थियों, प्रशासनिक स्टाफ और अभिभावकों का सहयोग निहित है। सामूहिक प्रयासों से ही संस्था निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। सहयोग, समन्वय और पारस्परिक सम्मान ने संस्था के शैक्षिक वातावरण को और अधिक सशक्त बनाया है।

अंततः: यह कहा जा सकता है कि शिक्षा तभी पूर्ण होती है जब वह ज्ञान के साथ चरित्र निर्माण भी करे। हमारा संस्थान इसी लक्ष्य के साथ कार्य करते हुए भविष्य में भी शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करने हेतु प्रतिबद्ध है। ऐसे प्रयास न केवल विद्यार्थियों का, बल्कि पूरे समाज का उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित करते हैं।

डॉ. राम मोहन तिवारी
प्राचार्य



संयुक्तीय



चलो उठें, बढ़ें, सपने सँवारें, नवभारत का सूरज ऊगता है,
वंदे मातरम् की पावन ध्वनि, हृदय में दीप जलाती है।”

वंदे मातरम् 150 वर्ष : राष्ट्रभावना का अमर गीत

हम बड़े हर्ष और गर्व के साथ “बालारुण” के इस विशेष वास्तुकांक को अपने पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं, जो वंदे मातरम् की 150वीं वर्षगांठ को समर्पित है। यह अंक केवल एक ऐतिहासिक गीत का उत्सव नहीं, बल्कि उस राष्ट्रीय चेतना का स्मरण है जिसने स्वतंत्रता आंदोलन को नई ऊर्जा और दिशा प्रदान की। “वंदे मातरम्” केवल शब्द नहीं – यह भारत की आत्मा, संघर्ष का शौर्य और मातृभूमि के प्रति अपार प्रेम का उद्घोष है।

आज के नवभारत में, जहाँ तकनीक, नवाचार और वैश्विक प्रतिस्पर्धा की दौड़ तेज़ है, वहीं इस गीत का संदेश हमें मूल्यों, कर्तव्य और राष्ट्रभक्ति की याद दिलाता है। युवा पीढ़ी से यही अपेक्षा है कि वह अपने ज्ञान, अनुशासन और कर्मशीलता से भारत को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाए। “बालारुण” का यह अंक उसी नई सुबह – उस बाल अरुणोदय का प्रतीक है, जो उज्ज्वल भारत के उदय का संकेत देता है।

इस विशेषांक में संकलित रचनाएँ, लेख, बाल कविताएँ, विचार न केवल ज्ञानवर्धक हैं, बल्कि यह भी दर्शते हैं कि हमारे विद्यार्थी और लेखक बाल शिक्षण तथा राष्ट्रीय चेतना के प्रति कितने सजग और समर्पित हैं। हमारा संस्थान शिक्षक प्रशिक्षण, प्राथमिक कक्षाओं और बाल कक्षाओं का त्रिवेणी संगम है अतः इसमें 3 वर्ष के बालक की चित्रकारी से लेकर युवा प्रशिक्षणार्थियों एवं शिक्षकों की रचनायें सम्मिलित हैं। इस अंक को तीन भागों में व्यवस्थित किया गया है 1. सुखदाम् 2. वरदाम् 3. सुफलाम्, जिनमें क्रमशः प्रशिक्षणार्थियों प्राथमिक कक्षा के बच्चों एवं संस्थान के स्टॉफ सदस्यों के लेखों का समावेश है।

बालारुण के पूर्ववर्ती दो संस्करणों की भाँति इस बार भी इसका इलेक्ट्रॉनिक संस्करण e-balarun साथ में जारी किया जा रहा है। इसे पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर दिये गये क्यू-आर कोड के माध्यम से स्कैन कर प्राप्त किया जा सकता है। e-balarun में नवाचार करते हुए हमने पत्रिका की सॉफ्ट कॉपी के साथ संस्थान प्राचार्य, संस्थान की पूर्व शिक्षकों, पूर्व प्रशिक्षणार्थियों एवं वर्तमान शिक्षकों के वीडियो संदेश के साथ ही एक इमेज गैलरी भी सम्मिलित की गई है।

संस्थान प्राचार्य डॉ. राममोहन तिवारी का मार्गदर्शन एवं नैतिक सहयोग के साथ ही संपादक मंडल के सदस्यों बहुमूल्य सुझावों को यथासंभव समावेश ने पत्रिका के सफल प्रकाशन को संभव बनाया। यहाँ मैं पत्रिका की उप संपादक श्रीमती बरखा खरे, के पत्रिका प्रकाशन में दिये गये विशेष सहयोग को रेखांकित कर रही हूँ। संस्थान की सहायक प्राध्यापक श्रीमती अर्चना शर्मा को त्रुटि निवारण हेतु विशेष आभार। डॉ. समीहा तिवारी द्वारा त्रुटिरहित अनुक्रमणिका तैयार करने में दिए गए सहयोग हेतु आभार। बालारुण के विशिष्ट मुख्यपृष्ठ एवं e-balarun को तैयार करने में मेरे सुपुत्र स्पंदन के सहयोग हेतु शुभाशीष।

पत्रिका को इस सुंदर कलेक्शन में प्रस्तुत करने हेतु एम.पी. प्रिंटिंग प्रेस, जबलपुर को भी आभार एवं शुभकामनाएँ। बालारुण के तीसवें अंक को पाठकों को सौंपते हुए हर्षित और उत्साहित हूँ। आशा है आप सब इसे पसंद करेंगे।

अंजलि सक्सेना



बायें से दायें – श्रीमती शीदा खान, डॉ. समीहा तिवारी, श्रीमती बरखा खरे, डॉ. रामगोहन तिवारी (प्राचार्य),
श्रीमती अंजली सक्सेना, श्रीमती अर्चना शर्मा, डॉ. श्रीमती शशि सराफ, श्रीमती रश्मि दवे,
डीपीएसई प्रशिक्षणार्थी – वापुस्टिमा द्वितीय वर्ष, प्रतीक्षा तिवारी प्रथम वर्ष



शासकीय पूर्व-प्रायमिक प्रशिक्षण संस्थान, जवलपुर
(माण्टेसरी विद्यालय कक्षा 5वीं 2025-26)



डी.पी.एस.ई. प्रथम वर्ष छात्राएँ (2025-27) एवं प्रशिक्षण स्टाफ



डी.पी.एस.ई. द्वितीय वर्ष छात्राएँ (2024-26) एवं प्रशिक्षण स्टाफ

बालाकृष्ण

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	रचनाकार	पृष्ठ क्र.
1.	संदेश	-	-
2.	संस्थान परिवार	-	1
3.	विद्यालयीन समितियां	-	2-3
4.	प्रतिवेदन	-	4-8
5.	मेधावी विद्यार्थियों को प्रदत्त स्मृति चिन्ह	-	9-10
6.	संस्थान से सेवानिवृत्त प्राचार्य व शिक्षकों की सूची सुखदाम्-प्रशिक्षणार्थियों का खण्ड	-	10
7.	Riddles of fruits, Riddles of Vegetable	सना कौसर, द्वितीय वर्ष	12
8.	मेरा भारत महान	स्नेहा विश्वकर्मा, प्रथम वर्ष	13
9.	लाल चुकंदर	स्नेहा विश्वकर्मा, प्रथम वर्ष	13
10.	प्रकृति	स्नेहा विश्वकर्मा, प्रथम वर्ष	13
11.	माटेसरी विद्यालय	स्नेहा विश्वकर्मा, प्रथम वर्ष	13
12.	लाल गुब्बारा उड़ता जाए	भारती बन्देवार, द्वितीय वर्ष	13
13.	दोस्ती	दरक्षा राइन, द्वितीय वर्ष	13
14.	आम	रक्षा यादव, प्रथम वर्ष	13
15.	पेड़	दिव्या हनवत, द्वितीय वर्ष	14
16.	पर्यावरण	श्वेता काढी, द्वितीय वर्ष	14
17.	संस्कार	तन्वी झारिया, प्रथम वर्ष	14
18.	बारिश आई	तन्वी झारिया, प्रथम वर्ष	14
19.	सूरज बोला	महिमा पटैल, प्रथम वर्ष	14
20.	रोटी	महिमा पटैल, प्रथम वर्ष	14
21.	हम सभी का ख्वाब	अनुराधा मरावी, द्वितीय वर्ष	15
22.	खिचड़ी	अनुराधा मरावी, द्वितीय वर्ष	15
23.	बीज	सरगम सारंग, द्वितीय वर्ष	15
24.	माँ	सुरभी मेहरा, प्रथम वर्ष	15
25.	स्वतंत्रता	दरक्षा राइन, द्वितीय वर्ष	15
26.	बम चिकी	अनुरागिनी सिंगौर, प्रथम वर्ष	16
27.	रेलगाड़ी	अनुरागिनी सिंगौर, प्रथम वर्ष	16
28.	बंदर	अनुरागिनी सिंगौर, प्रथम वर्ष	16
29.	सबेरे जलदी उठा करो	अनुरागिनी सिंगौर, प्रथम वर्ष	16
30.	मेरा बस्ता	अनुरागिनी सिंगौर, प्रथम वर्ष	16
31.	पानी है मंजिल तो	नीतू कुर्मी, प्रथम वर्ष	16
32.	ओ वर्षा ओ वर्षा	नीतू कुर्मी, प्रथम वर्ष	16

बालाकृष्ण

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	रचनाकार	पृष्ठ क्र.
33.	पर्यावरण	नीतू कुर्मी, प्रथम वर्ष	17
34.	नदियां	खुशबू मेहरा, द्वितीय वर्ष	17
35.	मध्याहन भोजन गीत	सोनाली विश्वकर्मा, प्रथम वर्ष	17
36.	बादल	सोनाली विश्वकर्मा, प्रथम वर्ष	17
37.	छतरी	अंशु झारिया, द्वितीय वर्ष	18
38.	पढ़ते जाओ	अंशु झारिया, द्वितीय वर्ष	18
39.	धरती	अंशु झारिया, द्वितीय वर्ष	18
40.	बगीचा	खुशबू मेहरा, द्वितीय वर्ष	18
41.	पाठशाला	खुशबू मेहरा, द्वितीय वर्ष	18
42.	बीज पौधा, फूल	खुशबू मेहरा, द्वितीय वर्ष	18
43.	नन्हा बादल और रंग रंग की बारिश (कहानी)	सीमा प्रजापति, प्रथम वर्ष	19
44.	दिशा	सीमा प्रजापति, प्रथम वर्ष	19
45.	चिंपू बंदर और मीठा आम	नवोदिता वर्मा, प्रथम वर्ष	19
46.	रेलगाड़ी	नवोदिता वर्मा, प्रथम वर्ष	19
47.	पत्ती	नवोदिता वर्मा, प्रथम वर्ष	19
48.	भारत देश हमारा है	सोनम यादव, प्रथम वर्ष	20
49.	वर्णों से कविता	सोनम यादव, प्रथम वर्ष	20
50.	यात्रा	महिमा जंघेला, द्वितीय वर्ष	20
51.	चिंड़िया	महिमा जंघेला, द्वितीय वर्ष	20
52.	कविता माला	स्वेच्छा रघुवंशी, प्रथम वर्ष	21
53.	तोता	रीना यादव, प्रथम वर्ष	21
54.	अच्छे बच्चे	रीना यादव, प्रथम वर्ष	21
55.	बूझो तो जाने	ज्योति अग्रवाल, द्वितीय वर्ष	21
56.	आसमान	रेणुका मरकाम, प्रथम वर्ष	22
57.	रोटी	रेणुका मरकाम, प्रथम वर्ष	22
58.	हाथी	रेणुका मरकाम, प्रथम वर्ष	22
59.	तोता	रेणुका मरकाम, प्रथम वर्ष	22
60.	आग	रेणुका मरकाम, प्रथम वर्ष	22
61.	तारे	रेणुका मरकाम, प्रथम वर्ष	22
62.	फूल	रेणुका मरकाम, प्रथम वर्ष	22
63.	कविता माला	स्वेच्छा तिवारी, प्रथम वर्ष	23
64.	चिंड़िया	मुस्कान बन्देवार, प्रथम वर्ष	23
65.	समय	मुस्कान बन्देवार, प्रथम वर्ष	23

बालाकृष्ण

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	रचनाकार	पृष्ठ क्र.
66.	मेंटक	मुस्कान बन्देवार, प्रथम वर्ष	23
67.	सूरज	मुस्कान बन्देवार, प्रथम वर्ष	23
68.	बरसता पानी	नौशीन जहां, प्रथम वर्ष	23
69.	बारिश	नौशीन जहां, प्रथम वर्ष	23
70.	गुब्बारा	नौशीन जहां, प्रथम वर्ष	23
71.	मेरी पाठशाला	तनु तिवारी, द्वितीय वर्ष	24
72.	माटेसरी कक्षा	वापुष्टिमा मार्कों, द्वितीय वर्ष	24
73.	बाजार	रितु सेन, द्वितीय वर्ष	24
74.	मेरी मां पर कविता	निहारिका पटैल, द्वितीय वर्ष	25
75.	समय पर कविता	निहारिका पटैल, द्वितीय वर्ष	25
76.	सुबह की सीख	बसु कुशवाहा, द्वितीय वर्ष	25
77.	हिमालय	रानू विश्वकर्मा, द्वितीय वर्ष	25
78.	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी समाज	स्वेच्छा रघुवंशी, प्रथम वर्ष	26
79.	वर्तमान समाज में डिप्लोमा इन प्री-प्राय. एजुकेशन	तनु वर्मा, द्वितीय वर्ष	27
80.	भारत में परिवार परंपरा	योजना पारधी, द्वितीय वर्ष	28-29
81.	सर्दी का मौसम है आया	रेखा कोरी, द्वितीय वर्ष	29
82.	हफ्ते के ये सात दिन	रेखा कोरी, द्वितीय वर्ष	29
83.	प्रिय शिक्षक	स्वेच्छा रघुवंशी, प्रथम वर्ष	30
84.	पर्यावरण	साक्षी धुर्वे, द्वितीय वर्ष	30
85.	रेलगाड़ी	निधि जंघेला, द्वितीय वर्ष	30
86.	कृत्रिम बुद्धिमत्ता	काजल यादव, प्रथम वर्ष	31-33
87.	पोस्टर्स प्रोजेक्ट डीपीएसई प्रशिक्षणार्थी	-	34
वरदाम् - बच्चों का खण्ड			
88.	मेरी मां	निकिता परस्ते, पहली	36
89.	गुड़िया रानी	आरोही पटैल, पहली	36
90.	बादल राजा	नव्या चौधरी, पहली	36
91.	तिरंगा झंडा	आरोही दुबे, तीसरी	36
92.	मेरी प्यारी मां	अहाना अधव, दूसरी	36
93.	सूरज	रोही समद, पहली	37
94.	शेर और खरगोश की कहानी	आरोही जयवाल, दूसरी	37
95.	पेड़ लगाओ	सुष्टि ठाकुर, दूसरी	37
96.	मोर	समर रैकवार, पहली	37
97.	अच्छी बातें	मिष्टी चौरसिया, दूसरी	37

बालाकृष्ण

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	रचनाकार	पृष्ठ क्र.
98.	हम नन्हे-मुन्ने बच्चे हैं	शिवांशी शुक्ला, चौथी	38
99.	मेरी शिक्षिका	वैष्णवी गुप्ता, चौथी	38
100.	चूहा मामा	वंशिका सोनकर, पहली	38
101.	कुछ कर दिखाऊंगा	करन जायसवाल, चौथी	38
102.	सोनपुर गांव	नैन्सी दुबे, पाँचवीं	39
103.	माँ पर कविता	शिवांश गोटिया, पाँचवीं	39
104.	बारिश आई बारिश आई	चिराग लखेरा, पाँचवीं	39
105.	लालची साँप और चॉटी	लक्ष्य कलसा	39
106.	ईशा के सपने	अनुष्का लोधी, पाँचवीं	40
107.	नन्ही चिड़िया	अनुष्का पटेल, पाँचवीं	40
108.	सांप और गिलहरी की दोस्ती	सुभी सोंधिया, पाँचवीं	40
109.	बालकक्ष की चित्रकारी	-	41
	सुफलाम् - संस्थान परिवार		
110.	2003 से 2026 संस्थानगत महत्वपूर्ण कार्य	डॉ. राममोहन तिवारी, प्राचार्य	43
111.	बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय	श्रीमती अर्चना शर्मा, सहा.प्रा.	44
112.	संवर्धित बचपन का आधार खेल खेल में शिक्षा	श्रीमती बरखा खरे, प्राचार्य हा.स्कूल संवर्ग	45
113.	डिजिटल युग में शिक्षकों की भूमिका	डॉ. समीहा तिवारी, उ.मा.शि.	46
114.	पिपलौदा के संस्मरण	सुश्री स्वर्णप्रीत कौर, ई.सी.सी.ई. शिक्षक	48
115.	मेरी बेटी	सुश्री स्वर्णप्रीत कौर	48
116.	वर्तमान भारत और योग की भूमिका	श्रीमती नीतू जैन, माध्य. शिक्षक	49
117.	शिक्षाप्रद दोहे	डॉ. समीहा तिवारी, उ.मा.शि.	50
118.	राष्ट्रीय ध्वज “तिरंगा”	डॉ. शशि सराफ, प्राथमिक प्रभारी	51
119.	लक्ष्य निर्धारण	डॉ. शशि सराफ, प्राथमिक प्रभारी	52
120.	बच्चे मन के सच्चे	श्रीमती रश्मि श्रीवास्तव प्राथमिक शिक्षक	53
121.	शिक्षा का महत्व	श्रीमती संगीता श्रीवास्तव सहायक शिक्षक	53
122.	मस्ती वाले बच्चे	श्रीमती किरण महोबिया सहायक शिक्षक	53
123.	मॉन्टेसोरी का बैण्ड दल	श्रीमती किरण महोबिया सहायक शिक्षक	53
124.	बाज से प्रेरणा	श्रीमती कुसुम पासी, सहायक शिक्षक	54
125.	मानव धर्म	श्रीमती शीबा खान, सहायक शिक्षक	55
126.	पूर्व प्राथमिक कक्षाओं में भाषा कौशल का विकास	श्रीमती रश्मि दवे, सहा. शिक्षक	56
127.	खेलों से लाभ	विनोद पोद्दार कार्यालय सहायक	57
128.	संस्मरण	आशा विश्कर्मा	58
129.	समाचार पत्रों से ...	-	59
130.	संस्थान अतिथियों की नजर से...	-	60

बालाकृष्ण

संस्थान परिवार

प्रशिक्षण संवर्ग

क्र.	नाम	पद	शैक्षणिक योग्यता
1.	डॉ. राममोहन तिवारी	प्राचार्य उपसंचालक संवर्ग	एम.एस.सी. (रसायन शास्त्र) एम.एड., एल.एल.बी., सी.सी.वाई, पी.एच.डी., गीतांजली डिप्लोमा (सुगम संगीत)
2.	श्रीमती अर्चना शर्मा	सहा. प्राध्या.	एम.एस.सी. (गणित) एम.एड.
3.	श्रीमती बरखा खरे	प्राचार्य हा.स्कूल	एम.ए. (अंग्रेजी) एम.एड.
4.	श्रीमती अंजलि सक्सेना	प्राचार्य हा.स्कूल	एम.एस.सी. (रसायन शास्त्र), एम.ए.(इतिहास)एम.एड.
5.	श्रीमती श्रद्धा शुक्ला	उ.मा.शिक्षक	एम.एस.सी. (गणित), एम.एड. (विज्ञान)
6.	डॉ. समीहा तिवारी	उ.मा.शिक्षक	एम.एस.सी., (फुड एंड न्यूट्रीशन) एम.एड., पी.एच.डी.
7.	सुश्री स्वर्णप्रीत कौर	उ.श्रे.शिक्षक	एम.ए.समाज शास्त्र, पी.पी.टी.सी.
8.	श्रीमती नीतू जैन	मा.शिक्षक	एम.ए. (शिक्षा), एम.ए.(अंग्रेजी),डिप्लोमा इन गाइडेंस एंड काउंसलिंग, पी.जी.पी.डी.व्ही.आई.

कार्यालयीन रुटाफ

क्र.	नाम	पद	शैक्षणिक योग्यता
1.	श्री विनोद पोद्दार	सहा.ग्रेड-3	एम.ए., हिन्दी टाईपिंग

प्राथमिक संवर्ग

क्र.	नाम	पद	शैक्षणिक योग्यता
1	डॉ (श्रीमती) शशि सराफ	सहा.शि.(प्रा.प्रभारी)	एम.ए., एम.एड., एम.फिल, पी.एच.डी.
2	श्रीमती संगीता श्रीवास्तव	सहायक शिक्षक	एम.ए., बी.एड.
3	श्रीमती कुसुम पासी	सहायक शिक्षक	एम.ए., डी.एड.
4	श्रीमती रशिम दवे	सहायक शिक्षक	बी.एस.सी., बी.एड.
5	श्रीमती शीबा खान	सहायक शिक्षक	एम.ए., बी.एड.
6	श्रीमती किरण महोबिया	सहायक शिक्षक	एम.ए., एम.एड.
7	श्रीमती रशिम श्रीवास्तव	प्राथमिक शिक्षक	एम.ए., डी.एड.

चतुर्थ वर्ण

श्रीमती सावित्री चक्रवर्ती	श्रीमती विद्या कोल श्रीमती मिथलेश तिवारी	श्रीमती आशा विश्वकर्मा श्री राशिद खान	श्री आनंद दुबे
----------------------------	---	--	----------------

बालाङण

विद्यालयीन समितियाँ

प्रशिक्षण संवर्ग की समितियाँ

(1) संस्थान विकास समिति (प्रशिक्षण संवर्ग)

(सामान्य परिषद)

अध्यक्ष - संचालक, राज्य शिक्षा केन्द्र

सचिव - प्राचार्य

कोषाध्यक्ष - श्रीमती अर्चना शर्मा

सदस्य - श्रीमती अंजलि सक्सेना

प्रशिक्षणार्थी- 1. बापुष्टिमा 2. प्रतीक्षा तिवारी

(2) संस्थान विकास समिति (वित्त समिति)

पदेन अध्यक्ष - प्राचार्य

कोषाध्यक्ष - श्रीमती अर्चना शर्मा

सदस्य - श्रीमती बरखा खरे

सदस्य - श्री विनोद पोद्दार

(3) क्रय समिति (प्रशिक्षण संवर्ग)

प्रभारी - श्रीमती अर्चना शर्मा

सदस्य - श्रीमती बरखा खरे

श्रीमती अंजलि सक्सेना

डॉ. शशि सराफ

श्री विनोद पोद्दार

(4) प्रवेश समिति (प्रशिक्षण संवर्ग)

प्रभारी - श्रीमती अर्चना शर्मा

सदस्य - श्रीमती बरखा खरे

श्रीमती अंजलि सक्सेना

श्रीमती श्रद्धा शुक्ला

डॉ. समीहा तिवारी

श्रीमती नीतू जैन

(5) परीक्षा समिति (प्रशिक्षण संवर्ग)

प्रभारी - श्रीमती बरखा खरे

सदस्य - श्रीमती अर्चना शर्मा

श्रीमती अंजलि सक्सेना

डॉ. समीहा तिवारी

सुश्री स्वर्णप्रीत कौर

(6) ई.सी.सी.ई. प्रकोष्ठ प्रशिक्षण संवर्ग

प्रभारी - श्रीमती बरखा खरे

सदस्य - श्रीमती अंजलि सक्सेना

डॉ. समीहा तिवारी

सुश्री स्वर्णप्रीत कौर

श्रीमती नीतू जैन

(8) अनुशासन समिति (प्रशिक्षण)

प्रभारी - श्रीमती अर्चना शर्मा

सदस्य - श्रीमती अंजलि सक्सेना

श्रीमती श्रद्धा शुक्ला

डॉ. समीहा तिवारी

सुश्री स्वर्णप्रीत कौर

(9) पुस्तकालय समिति

प्रभारी - श्रीमती अंजलि सक्सेना

सदस्य - श्रीमती अर्चना शर्मा

श्रीमती नीतू जैन

श्री विनोद पोद्दार

(10) छात्रावास समिति

डॉ. राममोहन तिवारी (प्राचार्य संरक्षक)

प्रभारी - श्रीमती अर्चना शर्मा

सहप्रभारी - श्रीमती श्रद्धा शुक्ला

एवं सुश्री स्वर्णप्रीत कौर

सदस्य - डॉ. समीहा तिवारी

श्रीमती नीतू जैन

श्रीमती सावित्री चक्रवर्ती

प्राथमिक एवम् बालकक्ष संवर्ग की समितियाँ

(1) प्रवेश समिति (प्राथमिक)

प्रभारी - डॉ. श्रीमती शशि सराफ

सदस्य - श्रीमती रश्मि दबे (स. शि.)

श्रीमती शीबा खान (स. शि.)

श्रीमती रश्मि श्रीवास्तव

श्रीमती विद्या कोल

(2) परीक्षा समिति

प्रभारी - डॉ. श्रीमती शशि सराफ

सदस्य - श्रीमती रश्मि दुबे

श्रीमती शीबा खान

श्रीमती रश्मि श्रीवास्तव

श्रीमती विद्या कोल (भृत्य)

(3) खेलकूद/बैंड दल समिति

प्रभारी - श्री विनोद पोद्दार एवं

सदस्य - श्रीमती श्रद्धा शुक्ला

श्रीमती नीतू जैन

बैंड दल - श्रीमती किरण महोबिया

बालाकृष्ण

श्रीमती कुसुम पासी
श्रीमती मिथिलेश तिवारी (भृत्य)

(4) अनुशासन समिति (प्राथमिक)

प्रभारी -	डॉ. श्रीमती शशि सराफ
सदस्य -	श्रीमती कुसुम पासी
	श्रीमती किरण महोबिया
	श्रीमती संगीता श्रीवास्तव
	श्रीमती विद्या कोल (भृत्य)
	श्रीमती मिथिलेश तिवारी (भृत्य)

अन्य समितियाँ

(1) साहित्यिक/सांस्कृतिक समिति

प्रभारी -	श्रीमती अंजलि सक्सेना
सदस्य -	डॉ. समीहा तिवारी
	डॉ. श्रीमती शशि सराफ
	श्रीमती रश्मि दवे
	श्रीमती शीबा खान
	श्रीमती नीतू जैन

(2) पत्रिका समिति

डॉ. राममोहन तिवारी (प्राचार्य संरक्षक)
संपादक - श्रीमती अंजलि सक्सेना
उप संपादक-श्रीमती बरखा खरे
सदस्य - श्रीमती अर्चना शर्मा
डॉ. समीहा तिवारी
डा. शशि सराफ
श्रीमती शीबा खान
श्रीमती रश्मि दवे

(3) अभिनन्दन समिति

प्रभारी - श्रीमती बरखा खरे
सदस्य - श्रीमती अंजलि सक्सेना
श्रीमती रश्मि दवे
श्रीमती शीबा खान

(4) स्वच्छता समिति (प्रशिक्षण) प्राथमिक

प्रभारी - डॉ. समीहा तिवारी (उ.मा.शि.)
सदस्य - श्रीमती नीतू जैन (मा.शि.)
श्रीमती कुसुम पासी
श्रीमती किरण महोबिया
श्रीमती रश्मि श्रीवास्तव
श्रीमती विद्या कोल (भृत्य)
श्रीमती मिथिलेश तिवारी (भृत्य)

(4) पर्यावरण समिति

प्रभारी -	श्रीमती अंजलि सक्सेना
सदस्य -	श्रीमती बरखा खरे
	श्रीमती अंजलि सक्सेना
	श्रीमती रश्मि दवे
	श्रीमती शीबा खान
	श्रीमती रश्मि श्रीवास्तव

(5) अपलेखन समिति

प्रभारी-	श्रीमती अर्चना शर्मा
सदस्य-	श्रीमती बरखा खरे
	श्रीमती श्रद्धा शुक्ला
	डॉ. समीहा तिवारी
	डॉ. शशि सराफ
	श्रीमती रश्मि दवे

**शाला प्रबन्धन समिति के सदस्यों के नाम
समिति का गठन 29 अगस्त 2025 को हुआ
(प्राथमिक शाला)**

अध्यक्ष-	श्रीमती करुणा पटेल
उपाध्यक्ष-	श्री अजय
सदस्य-	<ol style="list-style-type: none"> 1. श्री अजय नामदेव 2. श्री सुखदास चौधरी 3. श्रीमती अर्चना साहू 4. श्रीमती सीमा झारिया 5. श्री सेमुअल मसीह 6. श्रीमती गायत्री ठाकुर 7. श्रीमती राखी कश्यप 8. श्रीमती ज्योति झारिया 9. श्री विवेक विश्वकर्मा 10. श्रीमती नंदनी ठाकुर 11. श्री सुनील कठने 12. श्री धर्मेन्द्र गुप्ता 13. श्री महेश प्रसाद झारिया 14. श्री राजेश रजक

सचिव -	श्रीमती शशि सराफ
वरिष्ठ शिक्षिका -	श्रीमती संगीता श्रीवास्तव
पार्षद -	श्री अमरीश मिश्रा

(महापौर का एक प्रतिनिधि)



बालाकृष्ण

प्रतिवेदन

डी.पी.एस.ई प्रवेश

प्रभारी - श्रीमती अर्चना शर्मा, सहा. प्राध्यापक

राज्य शिक्षा केंद्र मध्य प्रदेश भोपाल द्वारा सत्र 2021-22 से डी.पी.एस.ई. (विद्यालय पूर्व शिक्षा में डिप्लोमा) द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में प्रवेश हेतु एम.पी. ऑनलाइन द्वारा ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया आरंभ की गई है। पाठ्यक्रम में उन महिलाओं को प्रवेश दिया जाता है जिनकी आयु 1 जुलाई की स्थिति में न्यूनतम 18 वर्ष एवं अधिकतम 40 वर्ष हो। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के अभ्यर्थियों के लिए अधिकतम आयु सीमा 45 वर्ष है। हायर सेकेंडरी स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा 10+2 अथवा समकक्ष परीक्षा न्यूनतम 50 प्रतिशत प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण हो। प्रशिक्षण में मध्य प्रदेश शासन के नियमानुसार अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, विकलांग, भूतपूर्व सैनिक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के परिवार की महिलाएं, विधवा, परित्यक्ता आवेदकों के लिए स्थान आरक्षित है। प्रवेश हेतु अभ्यर्थी को एम.पी. ऑनलाइन पोर्टल पर पंजीयन कराना अनिवार्य है। कक्षा 12वीं के प्राप्तांकों के आधार पर तैयार मेरिट सूची के क्रम में अभ्यर्थियों को प्रवेश दिया जाता है। NEP 2020 के आने के पश्चात् संस्थान में प्रवेश हेतु रूझान बढ़ा है। सत्र-2024-25 एवं 2025-26 में सभी 40 सीटें पूरी तरह भर गयी हैं।

परीक्षा प्रक्रोष्ट

प्रभारी - श्रीमती बरखा खरे, प्राचार्य हाईस्कूल

संस्थान में पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण पत्रोपाधि का द्विवर्षीय महिला प्रशिक्षण विगत 7 दशकों से संचालित किया जा रहा है। यह नियमित प्रशिक्षण म.प्र. शासन स्कूल शिक्षा

विभाग के अधीन तथा राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद से मान्यता प्राप्त है। प्रथम वर्ष में 40 सीट तथा द्वितीय वर्ष में 40 सीट आवंटित है। पाठ्यक्रम का निर्धारण व परीक्षा आयोजन माध्यमिक शिक्षा मण्डल म.प्र. भोपाल द्वारा किया जाता है। परीक्षाफल सदैव शत प्रतिशत रहता है, तथा माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा घोषित प्रदेश स्तरीय प्रावीण्य सूची में भी संस्थान की छात्राएँ स्थान अर्जित करती रही हैं। सत्र 2015-16 से इस प्रशिक्षण का नाम मा.शि.मं. द्वारा डी.पी.एस.ई. (डिलोमा इन प्री स्कूल एजुकेशन) कर दिया गया है। मण्डल के नियमानुसार इस परीक्षा में पूरक की पात्रता नहीं होती। किसी विषय में अनुत्तीर्ण छात्रा को अगले वर्ष की वार्षिक परीक्षा के साथ ही द्वितीय अवसर प्राप्त होता है।

साहित्यिक/सांस्कृतिक प्रकोष्ठ

प्रभारी - श्रीमती अंजलि सक्सेना, प्राचार्य, हाईस्कूल

संस्थान के विद्यार्थियों के साहित्यिक, सांस्कृतिक विकास के उद्देश्य से संस्थान में साहित्यिक सांस्कृतिक प्रकोष्ठ है। इस प्रकोष्ठ द्वारा समस्त गतिविधियों के व्यवस्थित और नियमित संचालन हेतु सत्रांभ में गतिविधियों हेतु एक कैलेण्डर तैयार किया जाता है। इसके अनुरूप गुरुपूर्णिमा, स्वतंत्रता दिवस, तिलक पुण्यतिथि, कृष्ण जन्माष्टमी, संस्थान का स्थापना दिवस, शिक्षक दिवस, गणेश उत्सव (10 दिवसीय), गाँधी-शास्त्री जयन्ती, बाल दिवस, वार्षिक सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं क्रीड़ा गतिविधियाँ, गणतंत्र दिवस, बसंत पंचमी का आयोजन पारंपरिक रूप से किया जाता है।

सत्र 2023-24 व 2024-25 में शासन द्वारा हमारे संस्थान को प्रदान किये गये दायित्व राज्य स्तरीय जनसंख्या शिक्षा एवं रोल प्ले प्रतियोगिता का पूर्णतः सफल आयोजन

बालाकृष्ण

साहित्यिक, सांस्कृतिक प्रकोष्ठ व संस्थान परिवार की महत्वपूर्ण उपलब्धि रही।

बैण्ड दल

प्रभारी – श्रीमती किरण महोबिया

शा. पूर्व प्रा. प्रशि. संस्थान में बैण्ड दल का संचालन सन् 1988में शुरू हुआ, जो कि आज तक संचालित है। समय- समय पर यहाँ के बैण्ड दल ने अनेक राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में सहभागिता की है, और प्रमाण- पत्र प्राप्त किए हैं जो अत्यन्त सराहनीय है।

शा. पूर्व प्रा. प्रशि. संस्थान (मॉण्टेसरी) मध्यप्रदेश की शासकीय संस्थाओं में एक मात्र ऐसी संस्था है जहाँ प्राथमिक वर्ग के कक्षा 2 से 5 तक के बच्चे बैण्ड दल का संचालन करते हैं। इसमें लगभग 7 वाद्ययंत्रों का वादन किया जाता है।

संस्थान छात्रावास

प्रभारी – श्रीमती अर्चना शर्मा,

सहायक प्राध्यापक

हरियाली से आच्छादित संस्थान का छात्रावास मनोरम वातावरण में स्थित है। इस छात्रावास में मध्यप्रदेश के विभिन्न ज़िलों की प्रशिक्षणार्थी छात्राएँ निवास करती हैं। यहाँ अनेकता में एकता की मिसाल कायम करती सभी छात्राएँ मिलजुलकर दो वर्षीय मॉण्टेसरी प्रशिक्षण प्राप्त करती हैं।

छात्रावास में छात्राओं के लिये 12 कमरे प्रथम तल पर हैं। प्रत्येक कमरे में 02 छात्राएँ रहती हैं। कमरों में पर्याप्त हैं पंखों व फर्नीचर की व्यवस्था है। वॉश एरिया भी पर्याप्त है जिसकी स्वच्छता के लिए पर्याप्त व्यवस्था है। पानी के लिये बोरिंग है।

नीचे के तल में अधीक्षक आवास के साथ ही

रसोईघर एवं भोजन-कक्ष है, जिसमें छात्राएँ अपना भोजन मिलजुलकर बनाती एवं खाती हैं। ऊपर पूजा घर भी है। छात्राएँ दोनों समय आरती पूजन एवं समय-समय पर त्यौहारों पर भजन कीर्तन भी करती हैं।

15 अगस्त एवं 26जनवरी को छात्रावास में ध्वजारोहण का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है, जिसे प्राचार्य द्वारा सम्पन्न कराया जाता है। 24 छात्राओं की उपस्थिति से छात्रावास भरा पूरा चहक रहा है। एकसाथ रहकर छात्राओं का सामाजिक एवं व्यवहारिक पक्ष भी मजबूत होता है एवं स्थानीय भाषा व खान-पान का भी मजा छात्रावास में मिलता है।

पुस्तकालय

प्रभारी – श्रीमती अंजलि सक्सेना, प्राचार्य हाईस्कूल

संस्थान में एक सुव्यवस्थित पुस्तकालय है जो अनमोल पुस्तकों से सुसज्जित है। पुस्तकालय में लगभग 5900 पुस्तकें हैं, जिनमें हिन्दी एवम् अंग्रेजी माध्यम की पुस्तकें हैं। शैक्षिक प्रशासन, शिक्षा सिद्धांत, मनोविज्ञान, विज्ञान, नाटक, उपन्यास, हस्तकार्य, पर्यावरण, बाल साहित्य आदि की भरपूर पुस्तकें यहाँ संकलित हैं। पुस्तकालय से संस्थान के प्रशिक्षणार्थी, शिक्षक, बच्चों एवं अन्य स्टाफ सदस्यों को उनकी आवश्यकता एवं रूचि के अनुरूप पुस्तकें अधिकतम 15 दिन के लिए प्रदान की जाती हैं। प्रतिवर्ष उपलब्ध राशि से आवश्यकतानुसार दैनिक समाचार पत्र एवं पुस्तकें क्रय की जाती हैं।

ई.सी.सी.ई. प्रकोष्ठ प्रतिवेदन (2022-2025)

प्रभारी – श्रीमती बरखा खरे, प्राचार्य हाईस्कूल

ई.सी.सी.ई.प्रभारी

एनईपी 2020 भारत सरकार की बहुप्रतीक्षित शिक्षा नीति थी जिसकी घोषणा 29 जुलाई 2020 को की गयी।

बालाकृष्ण

भारत में पहली बार एक ऐसी शिक्षा नीति तैयार की गई है जिसमें शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत नवीनतम आवश्यकताओं को शामिल किया। इसी क्रम में शाला पूर्व शिक्षा (ई.सी.सी.ई) Early Child Care and Education को औपचारिक शिक्षा की मुख्यधारा में जोड़ दिया गया है, जिसकी आवश्यकता थी। एनईपी 2020 को शीघ्रता से लागू करने प्रदेश स्तर पर विभिन्न बैठकें, कार्यशालाएं आयोजित की गयी।

राज्य शिक्षा केन्द्र आरएसके भोपाल और यूनीसेफ के संयुक्त प्रयास से म.प्र. में शाला पूर्व शिक्षा प्रदेशभर में शीघ्रता से लागू की जा चुकी है। इसी क्रम में प्रदेश स्तर पर शाला पूर्व शिक्षा एवं शिक्षक प्रशिक्षण के लिए संचालित शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान (पीपीटीआई) जबलपुर को नोडल एजेंसी बनाया गया। संस्थान के ईसीसीई दल ने राज्य स्तर पर आयोजित विभिन्न बैठकों, कार्यशालाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, वर्कबुक लेखन शिक्षक संदर्शिका लेखन जैसे सभी कार्यों में राज्य स्तर पर सक्रिय सहभागिता की।

एनईपी 2020 के क्रियान्वयन में ईसीसीई के क्षेत्र में संस्थान की भूमिका का विवरण:-

- एनईपी 2020 के क्रियान्वयन हेतु राज्य पाठ्यचर्चा निर्माण पर आयोजित कार्यशाला में संस्थान की श्रीमती बरखा खरे व श्रीमती अंजलि सक्सेना ने सहभागिता की (दि. 31.3.2022)।
- संस्कृत बोर्ड द्वारा आरंभ की गयी एलकेजी (अरूण) यूकेजी (उदय) कक्षाओं के चयनित शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु आयोजित कार्यशाला में संस्थान के प्राचार्य डॉ. राममोहन तिवारी, श्रीमती बरखा खरे व श्रीमती अंजलि सक्सेना ने भोपाल के महर्षि पंतजलि संस्थान भोपाल में उपस्थित होकर सहभागिता की (27.4.2022)।
- यूनीसेफ द्वारा आयोजित आयु समूह 4-5 वर्ष के बालकों के लिए वर्कबुक तथा शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल विकास संबंधी कार्यशाला में संस्थान से श्रीमती बरखा खरे व श्रीमती अंजलि सक्सेना ने सहभागिता की (23.5.2022)।
- ईसीसीई हेतु राज्य स्तरीय स्त्रोत व्यक्तियों (एसआरजी) के उन्मुखीकरण कार्यशाला का आयोजन राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल, यूनीसेफ व परवरिश द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। जिसमें विषय विशेषज्ञ के रूप में संस्थान की वरिष्ठ व्याख्याता श्रीमती बरखा खरे व श्रीमती अंजलि सक्सेना ने सहभागिता की। इस कार्यशाला में रा.शि. के द्वारा प्रकाशित सहज शिक्षक संदर्शिका एवं वर्कबुक नं. 1 एवं वर्क बुक नं. 2 का फाइल ग्रिंट भी सभी के सामने रखा गया। (01-02 सितम्बर 2022)।
- डीआरजी का 5 दिवसीय प्रशिक्षण समर्थन सेंटर भोपाल में आयोजित किया गया जिसमें 5 आकांक्षी जिले जहां पायलट ईसीसीई शाला एं संचालित की जा रही थी के डीआरजी शिक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। उक्त प्रशिक्षण में संस्थान से श्रीमती बरखा खरे व श्रीमती अंजलि सक्सेना ने एसआरजी (राज्य स्तरीय स्त्रोत सदस्य) के तौर पर प्रशिक्षण को प्रभावी तरीके से सम्पन्न करने में सहभागिता की। (20.09.2022 से 24.09.2022 तक)।
- ईसीसीई शिक्षकों के ब्लाक स्तरीय प्रशिक्षण की मॉनीटरिंग छिन्दवाड़ा जिले के 10 ब्लॉक के प्रशिक्षण कार्यक्रम की चरणबद्ध मॉनीटरिंग संस्थान की श्रीमती बरखा खरे व श्रीमती अंजलि सक्सेना द्वारा दिनांक 10 अक्टूबर 2022 से 12 नवम्बर 2022 तक क्रमशः चार चरणों में की गई।
- सीएम राईज विद्यालयों की केजी कक्षाओं के शिक्षकों का ईसीसीई प्रशिक्षण कार्यक्रम आइकफ आश्रम भोपाल में दिनांक 16 से 20 नवम्बर 2022 तक आयोजित रहा। इस प्रशिक्षण में संस्थान से श्रीमती बरखा खरे ने एसआरजी के दायित्व का निर्वहन किया। नव नियुक्त

बालाकृष्ण

शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया। (दिनांक 16 से 20 नवम्बर 2022)।

- यूनीसेफ द्वारा दिनांक 29, 30 नवम्बर व 1 दिसम्बर 2022 को होटल अशोका लेकव्यू श्यामला हिल्स भोपाल में कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें ईसीसीई गतिविधियों के प्रभावी क्रियान्वयन पर चर्चा कर व्यक्तिगत कार्य सौंपे गए। कार्यशाला के अंत में स्त्रोत व्यक्तियों को आवंटित कार्यों को पूरा करके कार्ययोजना को लिखकर जमा कराया गया। तदनुसार व्यक्तिगत प्रजेन्टेशन दिया गया। इस कार्यशाला में संस्थान से श्रीमती बरखा खरे वरि. व्याख्याता ने एसआरजी के रूप में सहभागिता की।
- प्रदेश की को-लोकेटेड आंगनबाड़ियों के कार्यकलापों के प्रशिक्षण हेतु मास्टर ट्रेनर्स का प्रशिक्षण आइकफ आश्रम भोपाल में दिनांक 30.1.23 से 4.2.2023 तक आयोजित हुआ। उक्त प्रशिक्षण में अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के द्वारा ईसीसीई पर चर्चा की गयी। जिसमें संस्थान की ईसीसीई शिक्षक सुश्री स्वर्णप्रीत कौर ने सहभागिता की। (30.01.23 से 4.2.2023)।
- अपर मिशन संचालक के आदेश के परिपालन में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फाउंडेशन के अंतर्गत विचार विमर्श को अंतिम स्वरूप देने हेतु आयोजित कार्यशाला में सुश्री स्वर्णप्रीत कौर ईसीसीई शिक्षक ने सहभागिता दी। (10.03.2023 से 12.03.2023)।
- ई.सी.सी.ई. प्रशिक्षण मॉड्यूल कार्यशाला का आयोजन दिनांक 12.06.2023 से 14.6.2023 तक भोपाल में हुआ जिसमें मॉड्यूल के पुनरीक्षण, संशोधन व निर्माण पर कार्य हुआ। जिसमें संस्थान से श्रीमती बरखा खरे व श्रीमती अंजलि सक्सेना ने सहभागिता दी। (12.06.2023 से 14.06.2023)।
- ईसीसीई के मास्टर ट्रेनर्स के राज्य स्तरीय प्रशिक्षण में स्त्रोत व्यक्ति के आरपी के रूप में प्रशिक्षण दिया। यह

प्रशिक्षण डाइट भोपाल में दिनांक 21.8.2023 से 25.8.2023 तक (5 दिवसीय) आयोजित हुआ जिसमें संस्थान से श्रीमती बरखा खरे व श्रीमती अंजलि सक्सेना ने प्रभावी भूमिका का निर्वहन किया।

- ईसीसीई पढ़ाने वाले शिक्षकों के विकासखण्ड स्तर पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की मॉनीटरिंग एवं हेंडस ऑन सपोर्ट हेतु के.आर.पी. के दायित्व का निर्वहन संस्थान की श्रीमती बरखा खरे व श्रीमती अंजलि सक्सेना ने जिला सागर के विकासखण्ड स्तर पर मॉनीटरिंग कार्य किया व साथ ही प्रशिक्षण के दौरान उपस्थित होकर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। (15 से 17 सितम्बर 2023 व 20 से 22 सितम्बर 2023 तक)।
- सी.एम. राइज विद्यालयों के के.जी. कक्षाओं में पढ़ाने वाले शिक्षकों का रिफेशर कार्यक्रम दिनांक 9,10 व 11 जनवरी 2024 को भोपाल में आयोजित हुआ जिसमें संस्थान से श्रीमती बरखा खरे, श्रीमती अंजली सक्सेना व सुश्री स्वर्णप्रीत कौर ने प्रशिक्षण दिया। (9.1.24 से 11.1.2024)।

- वर्कबुक क्र. 01 - नसरी कक्षाओं हेतु वर्कबुक निर्माण कार्यशाला तीन चरणों में भोपाल में सम्पन्न हुई। यह कार्य यूनीसेफ के सहयोग से राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल द्वारा किया गया जिसमें 3-4 वर्ष की आयु के नसरी कक्षाओं हेतु सरल, रोचक रंगीन पृष्ठों वाली लाल रंग की नसरी बुक लेखन किया गया व उसे तीन चरणों में फाइनल स्वरूप दिया गया।

उक्त कार्य में संस्थान से श्रीमती बरखा खरे, वरि. व सुश्री स्वर्णप्रीत कौर ने सहभागिता की।

1 से 3 मई 2024, 13 से 14 मई 2024 एवं 28 से 29 मई 2024 तक।

- शाला पूर्व शिक्षण मार्गदर्शिका व वर्कबुक भाग 1 व 2 व 3 पुनरीक्षण उपरान्त संशोधित स्वरूप में महिला एवं

बालाकृष्ण

बाल विकास विभाग से प्राप्त हुई। उक्त सामग्री का परीक्षण कर अभियंत देने हेतु आर.एस.के. द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला भोपाल में दिनांक 5.8.2024 को सम्पन्न हुई। उक्त कार्यशाला में संस्थान से श्रीमती बरखा खरे व श्रीमती अंजलि सक्सेना ने सहभागिता देकर आवश्यक सुधार करने की अनुशंसा की व प्रभावी भूमिका का निर्वहन किया।

- 3-4 वर्ष के बालकों हेतु वर्कबुक व प्रशिक्षण मॉड्यूल निर्माण हेतु आयोजित कार्यशाला में संस्थान से श्रीमती बरखा खरे प्राचार्य हाईस्कूल संवर्ग व सुश्री स्वर्णप्रीत कौर डॉ.श्रे.शि. को आमंत्रित किया गया यह दो दिवसीय कार्यशाला अशोका लेकव्यू होटल भोपाल में आयोजित हुई जिसमें संस्थान द्वारा ईसीसीई शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिये प्री टेस्ट तैयार कर जमा किया गया। यह कार्यशाला यूनीसेफ व आर.एस.के. भोपाल द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गयी थी। (11.8.2024 से 13.8.2024 तक)।
- ईसीसीई प्रभारी शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु राज्य स्तर पर मास्टर ट्रेनर्स के प्रशिक्षण हेतु विषय विशेषज्ञ के रूप में संस्थान से श्रीमती बरखा खरे व श्रीमती अंजलि सक्सेना को आमंत्रित किया गया। इनके द्वारा डाइट भोपाल एवं प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान भोपाल में दिनांक 11.12.2024 से 14.12.2024 तक केआरपी के रूप में प्रशिक्षण प्रदान किया।
- प्रदेश में संचालित नयी केजी कक्षाओं में अध्यापन कराने वाले प्रशिक्षित शिक्षकों के रिफ्रेशर कोर्स में प्रशिक्षण देने हेतु भोपाल में प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमें संस्थान से श्रीमती बरखा खरे व श्रीमती अंजलि सक्सेना ने प्रशिक्षण को रोचक व प्रभावी तरीके से सम्पन्न कराया। (23.12.2024 से 25.12.2024)।
- पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के लिए ई.सी.सी.ई. किट के परीक्षण हेतु 2 दिवसीय कार्यशाला दिनांक 13.08.2025 व

14.08.2025 को आर.एस.के. भोपाल में आयोजित हुई उक्त कार्यशाला में संस्थान से श्रीमती बरखा खरे व श्रीमती अंजलि सक्सेना ने राज्य स्तर पर संस्थान का प्रतिनिधित्व किया। इसमें राज्य स्तरीय विषय विशेषज्ञों से प्राप्त परामर्श के उपरांत ही आगे की कार्यवाही प्रस्तावित की जायेगी तथा वार्षिक बजट स्वीकृति अनुसार नये ईसीसीई किट तैयार कर शालाओं में भेजी जायेगी।

पर्यावरण गतिविधियाँ :

प्रभारी - श्रीमती बरखा खरे, श्रीमती अंजलि सक्सेना संस्थान की संस्कृति हमेशा से पर्यावरण संरक्षण, संवर्धन एवम् जागरूकता की रही है। इसी के परिणामस्वरूप संस्थान में अनेक फलदार वृक्षों के साथ ही अनेक फूलदार और सजावटी पौधे क्यारियों व गमलों में रोपे गए हैं। इसी के अंतर्गत हमारी कक्षा - हमारा पौधा, एक पेड़ जन्मदिन पर, एक पेड़ माँ के नाम जैसे विचारों पर आधारित पौधा रोपण प्रतिवर्ष किया जा रहा है।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी नाटक/गीत/ नृत्य आदि माध्यम से भी पर्यावरण जागरूकता के प्रयास किए जाते हैं। संस्थान की प्रतिदिन विशेष स्वरूप में आयोजित होने वाली प्रार्थना सभा में प्रतिदिन एक पर्यावरण संदेश छात्रों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। संस्थान के पर्यावरणीय सरोकारों की प्रस्तुति राज्य स्तरीय पर्यावरण पुरस्कार 2021-22 हेतु दिनांक 24.05.2022 को मध्यप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण मंडल भोपाल में पावर प्लाइंट के माध्यम से दी गई। इस हेतु संस्थान से श्रीमती बरखा खरे एवं श्रीमती अंजलि सक्सेना ने संयुक्त रूप से सहभागिता की। सत्र 2021-22 का राज्य स्तरीय पर्यावरण पुरस्कार प्राप्त होना संस्थान द्वारा तत्संबंधी कार्यों का सम्मान है।

बालाङ्गण

मेधावी विद्यार्थियों को प्रदत्त पदक एवं मर्मति चिन्ह सन् २०२२ से २०२५

क्र.	प्रदायकर्ता	स्मृति चिन्ह/ट्रफी का नाम	राशि	प्राप्त करने का कारण	प्राप्त करने वालों के नाम			
					2022	2023	2024	2025
1.	सुश्री अचना श्रीवास्तव	स्व. हेमत कुमार वर्मा ट्राफी	स्वयं	कक्षा पांचवीं में प्रथम	कु. गैरी राजपूत	इयम कुशवाहा	पायथ कहर	नितलेश सॉधिया
2.	सुश्री अचना श्रीवास्तव	स्व. जयभारती वर्मा ट्राफी	स्वयं	प्रशिक्षण द्वितीय वर्ष में प्रथम	कु. विनीता द्विवेदी कु. अंजलि चौधरी	कु. नेहा परिहर	कु. प्रिया विश्वकर्मा	कु. अंजलि जैन
3.	स्रीमती शिवानी चटर्जी	स्व. जयभारती वर्मा ट्राफी	स्वयं	संस्थान में प्रथम	कु. नेहा परिहर द्वितीय वर्ष-	कु. शिवानी विश्वकर्मा कु. नेहा परिहर	कु.वंदना विश्वकर्मा	कु.अनुराधा मरावी कु.अंजलि जैन
					कु. विनीता द्विवेदी कु. अंजलि चौधरी	कु. प्रिया विश्वकर्मा		
4.	श्री ए.एल.सेठी	स्व.ए.जे.सेठी (भूपूषि.) स्मृति पदक	जमा	कक्षा पांचवीं में आदर्श छात्र/छात्रा	भूपूषि अ.गैरी राजपूत	भूमि समन इयम कुशवाहा	सार्थक कोरी कु.पायथा कहर नितलेश सॉधिया श्रद्धा पटेल मानसी साहू	नितलेश सॉधिया आयुषी कैथवास मानसी साहू
5.	भूतपूर्व विद्यार्थी आशीष तिवारी	सुमन ब्रिज ट्राफी	जमा	कक्षा पांचवीं में गणित में सर्वाधिक अंक	भूतपूर्व कु.नमामि श्रीवास्तव 4थी अ रैनक राजपूत 4थी ब विशेष विश्वकर्मा 3री अ सार्थक कोरी 3री ब नितन कुशवाहा 2री अ नितलेश सॉधिया 2री ब सिक्की जायसवाल 1ली अ अनुष्का लोधी 1ली ब अनुष्का पटेल	भूमि समन इयम कुशवाहा नितन कुशवाहा नितलेश सॉधिया श्रद्धा पटेल मानसी साहू आयुषी कैथवास सन्न्या रैकवार अनुष्का पटेल हर्ष रजक आर्यन पटेल अनन्या पटेल आरोही दुबे	संजय केवट आरती करने अनन्या पटेल अरोही तनुश्री आरोही जायसवाल अरोही दुबे	अनन्या पटेल अरोही, तनुश्री आरोही जायसवाल
					5वर्षां अ.गैरी राजपूत	मानसी पटेल इयम कुशवाहा	सार्थक कोरी नितन कुशवाहा प्रशि.वर्ग श्रीमती आशा पाड्डे	अराध्या प्रजपति आद्या तिवारी
								नितलेश सॉधिया दिपाली ठाकुर

बालाङ्ग

मेधावी विद्यारियों को प्रदत्त पदक एवं स्मृति चिन्ह सन् 2022 से 2025

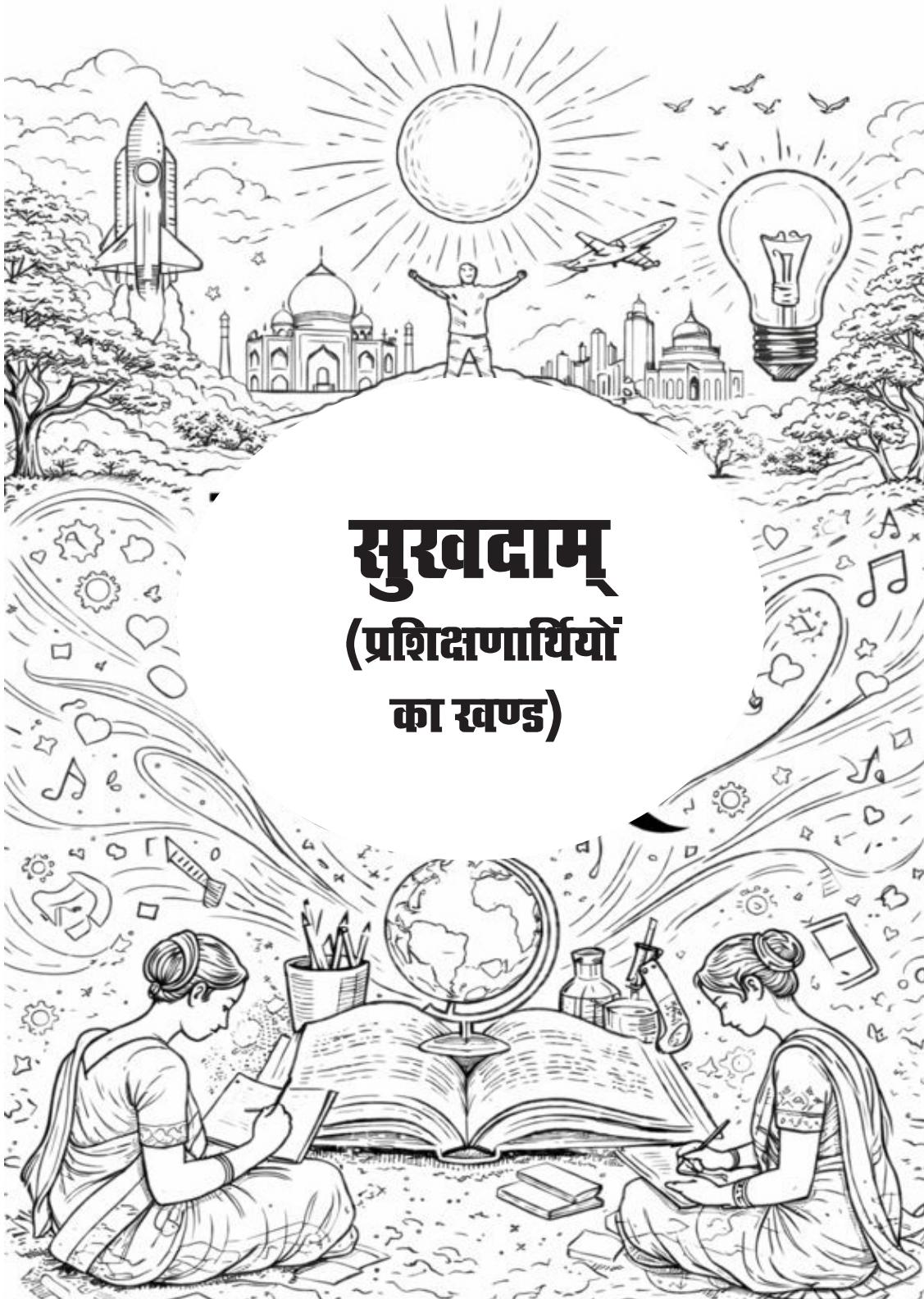
क्र.	प्रदायकर्ता	स्मृति चिन्ह/ टूफी का नाम	राशि	प्राप्त करने का कारण	प्राप्त करने वालों के नाम			
					2022	2023	2024	2025
6.	भूतपूर्व प्राचार्य श्री ए.के.डनायक	श्री रेवांकर डनायक स्मृति पदक	जमा प्रथम	प्रशिक्षण वर्ग में कु. विनीता द्विवेदी कु. अंजलि चौधरी	कु. नेहा परिहर	कु. प्रिया विश्वकर्मा	कु.अंजलि सौंधिया	
7.	डॉ. श्रीमती नीना सलोमन	इ.सी.मैसी	चालित	कक्षा पांचवीं में सर्वाधिक अंक	कु. गौरी राजपूत	श्याम कुशवाहा	पायल कहार	नितलेश सौंधिया
8.	भूतपूर्व विद्यार्थी सौरभ जैन	ख्ल. श्रीमती साक्षिरा तिवारी स्मृति	स्वयं	कक्षा 1ली से 5वीं तक अनुशासन	कु. पूर्वा बाजपेई	श्याम कुशवाहा	पायल कहार	आराध्या प्रजापति

शासकीय पूर्व प्रायमिक प्रशिक्षण संस्थान जबलपुर प्राचार्य सूची

- श्रीमती लक्ष्मी आयंगार 1954-1956
- श्रीमती मालती पण्डिया 1956-1963
- श्रीमती कमला भावे 1963-1966
- कु. सुशीला वैद्य 1966 - 1966
- श्रीमती आशा देशपांडे 1967 - 1976
- श्रीमती एस. दत्त 1976 - 1978
- श्रीमती जे.बी. वर्मा 1979 - 1986
- श्रीमती एम. श्रीवास्तव 1987-1990
- श्रीमती एस. के. जायसवाल 1990 - 1997
- श्री महेश कांत पांडे 1997 - 1998
- श्री अनुल कुमार डनायक 1998-2003
- डॉ. राममोहन तिवारी 2003 से वर्तमान

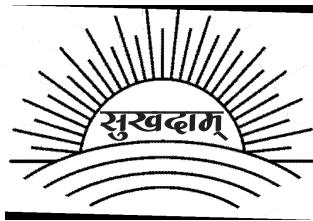
सेवानिवृत्त

- | | |
|-----------------------------|------------|
| 1. सुश्री रेखा शर्मा | 30.06.2022 |
| उच्च श्रेणी शिक्षक | |
| 2. श्रीमती रजनी द्विवेदी | 31.03.2023 |
| प्रधान अध्यापक (प्राथमिक) | |
| 4. श्री राजेश उपाध्याय | 31.08.2024 |
| लेखापाल | |
| 5. श्रीमती सरोज तिवारी | 30.12.2024 |
| चतुर्थ श्रेणी | |
| 3. श्रीमती वंदना श्रीवास्तव | 30.06.2025 |
| प्राथमिक शिक्षक | |
| 6. श्री शिवकुमार सौंधिया | 30.06.2025 |
| चतुर्थ श्रेणी | |



सुरवदाम्

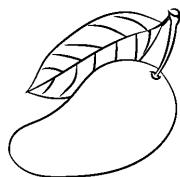
(प्रशिक्षणार्थियों
का खण्ड)



Sana Kausar, 2nd Year

Riddles on fruits

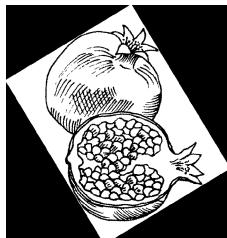
- I am yellow or green,
I am King of all fruits
People make pickle,
Juice or papad.
Who I am ?



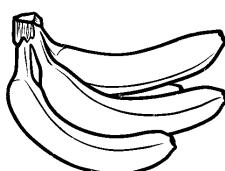
- I am fruits,
I am yellow in side
and brown outside
But I am not apple



- I wear a crown But
I am not a king,
Full of red juicy gems
inside,
Who I am ?



- I am yellow and Long.
I am a fruit.
Monkey eat me.
Who I am ?



Solution:- 1. Mango 2. Pineapple
3. Pomegranate 4. Banana

Riddles on vegetables

- I am most popular vegetable.
I grow underground,
I can not eat raw.
You can cook me in many ways.
I am king of vegetable.



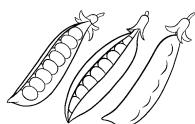
- I am green leafy vegetable.
Popeye the sailor man
Loves to eat me.
Doctor advice to eat me.
I am rich in iron.



- I am green but,
I am not chilli.
I have no finger and
I am not lady.
Who I am ?



- I am quite small, round and green.
I am like a pearl.
I came in winter
Who I am?



- I am a vegetable but
Flower is a part
of my name.
Who I am ?



- I am long & white,
Grow underground.
You can eat me raw.
I come in winter.



Solution:- 1. Potato 2. Spinach 3. Lady finger
4. Pea 5. Cauliflower 6. Redish

बालाङ्ग



स्नेहा विश्वकर्मा, प्रथम वर्ष

मेरा भारत महान्

भारत में रहते हैं हम सब, भारतीय कहलाते हैं।
 भारत माता की जय बोलें, हम उनको शीश नवाते हैं।
 गर्व से बोलो वन्दे मातरम्, बोलो वन्दे मातरम्,
 बोलो वन्दे मातरम्।
 जन्म मिला सौभाग्य यहां, जन्मे हैं भगवान यहां।
 हम उनको शीश झुकाते हैं, जो धर्म की राह बताते हैं।
 सत्य की होती जीत सदा, जो पल पल यही बताते हैं।
 भारत माता की जय बोलें, हम उनको शीश नवाते हैं।

लाल चुकन्दर

लाल चुकन्दर, लाल चुकन्दर,
 कड़वा लगता लाल चुकन्दर।
 लाल चुकन्दर खायेगें,
 हम अपना रक्त बढ़ायेगें।
 बीमारी को दूर भगायेगें,
 और स्वस्थ्य हो जायेगें।

प्रकृति

प्रकृति ने हमें सब कुछ दिया, हम भी तो कुछ देना सीखें।
 हानि नहीं उसको पहुँचायें, और अपना जीवन बचायें।
 पेंड़ लगायें काटे नहीं, फैलाये नहीं प्रदूषण।
 नदियों को स्वच्छ बनायें, गंदगी नहीं फैलायें।
 प्रकृति को रखना सुरक्षित, है यह सबकी जिम्मेदारी।
 पर्यावरण न बचा सुरक्षित, तो जीवन होगा भारी।

मॉन्टेसरी विद्यालय

मॉन्टेसरी में पढ़ते बच्चे। नन्हे मुने प्यारे बच्चे ॥
 खेल खेल में पाते शिक्षा। होशियार हो जाते बच्चे ॥



भारती बन्देवार, द्वितीय वर्ष

लाल गुब्बारा उड़ता जाए

नीला बादल सबको भाए।
 पीली-पीली धूप सुहाए,
 हरा भरा जंगल लहराए।
 चिड़िया बोले चूँ-चूँ-चूँ
 नन्हीं कली भी हँसकर बोले
 खुश रहो तुम, हम सब फलें फूलें ॥
 इंद्र धनुष के रंग निराले,
 सपने देखें हम सब मतवाले।
 हँसी खुशी से भर दे दुनिया,
 ये हैं हम सबकी प्यारी ।

दोस्ती



दरक्षा राईकिन,
 डी.पी.एस.ई.
 द्वितीय वर्ष

आम



मीठा मीठा ताजा आम,
 सभी फलों का राजा आम।
 जो चाहे वो खाये आम,
 सबका जी ललचाये आम।

रक्षा यादव,
 डी.पी.एस.ई.
 द्वितीय वर्ष

बालाङण



दिव्या हनवत, डी.पी.एस.ई प्रथम वर्ष



संस्कार



तन्वी धारिया, डी.पी.एस.ई. प्रथम वर्ष

पेड़ (कहानी)

एक खूबसूरत आम के पेड़ की शुरुआत एक चिंतित आम द्वारा बोए गए छोटे से बीज से हुई थी। आम को डर था कि उसके बजन के कारण वह डाल से गिरकर मर जाएगा। लेकिन पेड़ का नजरिया अलग था। उसने आम को दिलासा दी और समझाया कि डाल से गिरना अंत नहीं, बल्कि पुर्णजन्म है।

आम गिरने के बाद, वह बीज बन गया और कुछ समय बाद उस पर एक विशाल आम का पेड़ उग गया। उस पर एक विशाल आम पेड़ ने सिखाया कि जीवन में सब कुछ समाप्त होता है, लेकिन यह एक नई शुरुआत, एक पुर्णजन्म भी है। इसने दिखाया कि जीवन में परिवर्तन स्वाभाविक है और इससे डरने की कोई जरूरत नहीं है।



श्वेता कांचन,
डी.पी.एस.ई.
द्वितीय वर्ष



पर्यावरण

आस पास का यह परिवेश।
सबसे सुंदर अपना देश।।
पूर्व से निकलता सूरज।
पश्चिम को जाता है सूरज।।
हरा भरा हो यह परिवेश।
सबसे सुंदर अपना देश।।
उत्तर में देखो पर्वत है।
दक्षिण में बहता सागर है ॥।।
चारों तरफ का यह परिवेश।
सबसे सुंदर अपना देश ॥।।

सूरज बोला



महिमा पटेल, प्रथम वर्ष

देखा गोलू। तुम्हारा अपना जादू है।
गोलू खुशी से चमक उठा।
उस दिन से वह आसमान का प्यारा
नन्हा इंद्रधनुष बादल कहलाने लगा।
हर किसी के अंदर कुछ खास होता है
बस उसे पहचानने की जरूरत होती है।

रोटी

नरम है रोटी, दाल गरम
नरम है भाजी, भात गरम
नरम ह भजिया, चाय गरम
खाओ सब कुछ नरम, गरम।

बालारूण



अनुराधा मरावी,
डी.पी.एस.ई. द्वितीय वर्ष

डी.पी.एस.ई. के अंतिम दिन,
सभी साथी दीदियां थे गम में लीन।
दीदियों के दिल में था, यह डर,
कहीं जाये न छोटा सा कुटुम्ब बिखर।
किंतु यह जिंदगी का है ऐसा मोड़,
जहां मित्र जाते हैं अकेला छोड़।
लगन थी सबमें भविष्य में कुछ करने की,
लेकिन छोड़ी नहीं थी आशा फिर मिलने की।
हमने सोचा था कि करेंगे कारस्तानी,
जो हमारे अंतिम क्षणों की हो निशानी।
यही सोच सभी ने लिया एक मत,
ताकि हो जाये यादगार करामत।
सोचा हमने ऐसा ख्वाब,
क्यों न छपवाई जाये कोई स्मरणीय किताब।
तुरंत डी.पी.एस.ई. संस्था में पीटा ढाल,
कि सभी लाओ अपने लेख या बोल।
किसी ने लायी कहानी, तो किसी ने कवितायें चुटकुले।
इस प्रकार शिक्षकों ने किया लेखों का संग्रह,
और पूरा हुआ हमारा आग्रह।
बनाती बच्चों को निपुण,
बन गयी अपनी बालारूण।

खिचड़ी

सरपट सरपट आई दादी।
खटपट खटपट करती दादी।
झटपट झटपट खिचड़ी पकाई।
फट फट फट हमने खाई।



हम सभी का रघाव

बीज



सरगम सारंग, द्वितीय वर्ष

बीज है देखो बड़ा निराला,
धरती माँ ने इसको पाला।
बन गया सुंदर पेड़ निराला,
देता सबको फल फूल हवा।
रहता हर मौसम में खड़ा।

माँ



सुरभि मेहरा,
डी.पी.एस.ई. प्रथम वर्ष

माँ मेरी प्यारी माँ, आप कितनी अच्छी हो।
मेरा सब कुछ करती हो,
भूख मुझे जब लगती है, खाना मुझे खिलाती हो,
जब मैं गंदा हो जाऊँ तो, रोज मुझे नहलाती हो,
अगर मुझे कुछ हो जाये, परेशान बहुत हो जाती हो,
मुझे खुश देखकर माँ, आप खुश हो जाती हो,
खूब पढँूँ मैं खूब लिखूँ, यह आशीष देती हो।
आप जैसा कोई नहीं, आप सबसे पहले आती हो।
माँ मेरी प्यारी सी माँ, आप सबसे अच्छी हो।

स्वतंत्रता

दरक्षा राईन, द्वितीय वर्ष

तीर से न तलवार से,
न गोलियों की बौछार से।
गांधी जी ने आजादी दिलाई,
अहिंसा के बार से।

बालाकृष्ण



अनुरागिनी सिंगौर, डी.पी.एस.ई. प्रथम वर्ष

बम चिकी

एक दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात, आठ,
नौ दस बम चिकी बम बम बम,
बम चिकी बम बम चिकी बम बम
एक से लेकर दस तक,
गिनती अब सीखेंगे हम
एक हाथ में पाँच उँगलिया, 1,2,3,4,5
दूसरे हाथ में पाँच उँगलिया, 6,7,8,9,10,
बम चिकी बम बम बम, बम चिकी बम बम बम, बम।

रेल गाड़ी

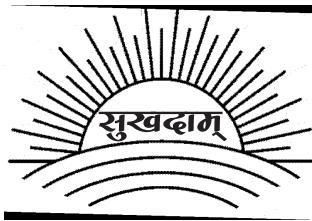
गाड़ी आयी छुक-छुक-छुक,
सीटी बजी छुक-छुक-छुक।
गाड़ी में बैठो सब चढ़-चढ़-चढ़,
सामान ऊपर रखो फट-फट-फट।
टिकट निकालो झट-झट-झट।

बंदर

एक बंदर ने खोली दुकान, सजा रखा सारा समान।
दूर से आये सारे बंदर मेहमान, बंदर की बढ़ गई आन और शान।
मेंढक भी आये झोला लेकर, हाथी भी आये सूँड हिलाकर।
मेंढक ने पूछा केलों के दाम, हाथी ने ले लिये सारे आम।

सबेरे जल्दी उठा करो

सबेरे जल्दी उठा करो, अच्छे से दांत साफ करो,
दूध एक ग्लास जम के पियो, अच्छे से नहाया करो।
बालों को कंघी करो, जल्दी से स्कूल पहुँचो,
बड़ों का सम्मान करो, अच्छे से पढ़ाई करो।
मम्मी पापा को खुश रखो, मम्मी पापा को खुश रखो,
सबेरे जल्दी उठा करो, अच्छे से दांत साफ करो।



नीतू कुर्मी, प्रथम वर्ष

मेरा बस्ता

मुझसे भारी मेरा बस्ता, कर दी मेरी हालत खस्ता।
इसे उठाकर चलना मुश्किल, सभी किताबें पढ़ना मुश्किल
कोई टीचर को समझाए।
बस्ते को हल्का करवायें।
कभी न फाड़ें कापी किताब।
टीचर की मानें बात।

पाना है जो मंजिल तो

पाना है जो मंजिल तो,
छोड़ना होगा घर संसार।
वो माँ की ममता,
और पिता का प्यार ॥
पाना है जो मंजिल तो,
लगा दो सारा तन मन मेरे यार।
छोड़ दो वो मौज मस्ती,
पुस्तक भी तो उठा लो मेरे यार ॥
पाना है जो मंजिल तो,
कसरत भी करो जोरदार।
सिर्फ सोचो मत,
मेहनत भी करो जोरदार
तभी तो सफलता भी होगी शानदार

ओ वर्षा, ओ वर्षा

तेरा अता है न पता।
कहां तू लापता।
सारी धरती तुझपे टिकी है।
कहां तू जाके छिपी है।

बालाकृष्ण



खुशबू मेहरा,
डी.पी.एस.ई. द्वितीय वर्ष

पर्यावरण

पेड़ लगाओ पर्यावरण बचाओ
पेड़ हमें ऑक्सीजन देते हैं,
ऑक्सीजन से हम जीवन जीते।
जीवन में हम कर्तव्य निभाते,
कर्तव्य निभा के हम पेड़ बचाते।
पेड़ लगाओ पर्यावरण बचाओ
पेड़ों से है हमारा जीवन,
यदि मनुष्य यह समझ जाये।
वह हर रोज एक पेड़ लगाये,
पेड़ लगाओ पर्यावरण बचाओ
हरियाली जब तक है भाई।
दुनिया सुंदर पड़े दिखाई ॥

नदियाँ

नदियाँ गाती सुंदर गाना, क्यों न हम उनसे सीखें।
कल कल करती गीत सुनाती, दिन रात हरदम वो गाती।
जात पात का धर्म मिटाकर, सब जीवों की प्यास बुझाती
बूंद बूंद बारिश का लेकर, नदियों से सागर बन जाती।
निर्मल, शीतल, जल धारण कर,
शीतलता का पाठ पढ़ाती।
चट्टानों से हरदम लड़ती, अपनी राहें खुद वो गढ़ती।
कभी न रुकती कभी न झुकती,
अपनी मंजिल तक वो चलती।



सोनाली विश्वकर्मा, प्रथम वर्ष

मध्यान्ह भोजन गीत

बुंदेली पारंपरिक गीत

दार राकटी खा के हम तो, फूले न समाएँ
सब्जी तनक सी मंगाएँ
अ से अमिया आ से आम, करने अच्छे अच्छे काम
लेके बऊ दद्दा को नाम
पढ़ के अक्षर करिया करिया, हम साहब बन जायें।
सब्जी तनक सी मंगाएँ
इ से इमली ई से ईख, मानो बड़ों बड़ों की सीख।
विद्या की हम मांगें भीख
पढ़ के अक्षर और किताबें, अरे गुण भारत के गाएँ।
सब्जी तनक सी मंगाएँ।

बादल

चम-चम चमके बिजली रानी,
गड़ गड़ गरजे बादल राजा।
देखो देखो वर्षा आई, देखो देखो वर्षा आई
छाता लेके निकले हम, फिर भी भीग जाते हम
आया वर्षा का मौसम,
अब आई सर्दी, खाँसी की बारी।
जुखाम हुआ तो दवा है खाई
दवा ने अपना असर दिखाया।
खेल कूद के मजा है आया ॥

बालाकृष्ण



अंशु झारिया, द्वितीय वर्ष

छतरी

आसमान में चमकी बिजली,
छतरी लेकर अंशु निकली।
काले काले बादल आए,
चाहे जितना जल बरसाए।
धूप बारिश से हमें बचाये,
छाता सबके मन को भाए।

पढ़ते जाओ

पढ़ते जाओ, लिखते जाओ,
सबसे आगे बढ़ते जाओ।
पढ़ने से ही ज्ञान मिले,
गुरु से विद्या दान मिले।
विद्या तो बेकार न होती,
पढ़े लिखों की हार न होती
आगे आगे बढ़ते जाओ,
मंजिल को फिर तुम छू जाओ।

धरती

मेरी धरती हरी भरी,
इसमें नदियाँ बड़ी बड़ी।
बड़े पेड़ और बड़े पहाड़,
इसमें है सुंदर संसार।



खुशबू मेहरा, द्वितीय वर्ष

बगीचा

हरा भरा हो बाग बगीचा।
रंग बिरंगे खिलते फूल
नहे नहे पौधे देखो,
कितने सुंदर लगते फूल।
सर्दी हो या बारिश देखो
सदा वो खिलते रहते फूल।
हरा भरा हो बाग बगीचा
रंग बिरंगे खिलते फूल
हरा भरा हो बाग बगीचा।



पाठशाला

चलो चले हम पाठशाला,
आओ चले हम पाठशाला।
मुनू आओ, राजू आओ,
देखो कोई छूट न पाओ।
मिलकर हम सब जायें शाला,
चलो चले हम पाठशाला।
आओ चले हम पाठशाला।

बीज/पौधा/फूल

नन्हा बीज मिट्टी में सोता,
धीरे धीरे पौधा होता।
खिल जाते हैं उसमें फूल,
रंग बिरंगे सुंदर फूल।
बच्चों तुम भी पढ़ लिख कर,
फूल के जैसे हो मशहूर।

बालाङ्ग



सीमा प्रजापति, प्रथम वर्ष
नन्हा बादल और रंग रंग की बारिश

कहानी

एक बार की बात है आसमान में एक नन्हा बादल रहता था उसका नाम था गोलू। गोलू बहुत प्यारा था लेकिन एक बात से दुखी रहता था। हर दिन बड़े-बड़े बादल बारिश करते छम-छम बूँदें गिरती, और बच्चे खुश होकर नाचते। गोलू सोचता काश में भी बारिश कर पाता। एक सुबह सूरज ने मुस्कुराकर कहा गोलू तुम कोशिश तो करो। हर किसी में कोई न कोई जादू तो होता है। गोलू ने हिम्मत जुटाई, गहरी सांस ली और फूँका। उसके अंदर से पानी की बूँदें निकली लेकिन ये बूँदें अलग थी। यह लाल, पीली, नीली, हरी, नारंगी इंद्र धनुषी बूँदें थी, रंग-बिरंगी बारिश। धरती पर गिरते ही फूल खिलखिलाने लगे, पक्षी नाचने लगे, और बच्चे चिल्लाएः : वाह रंग-रंग की बारिश। सूरज बोला “देखो गोलू तुम्हारा अपना जादू है”

गोलू खुशी से चमक उठा। उस दिन से वह आसमान का सबसे प्यारा सा नन्हा इंद्रधनुष बादल कहलाने लगा।

सीखः- हर किसी के अंदर कुछ विशेषता होती है, बस उसे पहचानने की जरूरत होती है।

दिशा

पीला पीला गोल सूरज, पूर्व से निकले
लाल लाल होकर सूरज पश्चिम में ढूँबे
ऊँचे नीचे लाल हरे पर्वत, उत्तर में खड़े
नीला समुद्र देखो भाई, दक्षिण में बहे।



नवोदिता वर्मा प्रथम वर्ष

चिंपू बंदर और मीठा आम

कहानी

एक पेड़ पर एक छोटा बंदर रहता था नाम था चिंपू। चिंपू को आम बहुत पसंद थे। एक दिन उसने देखा कि, पेड़ पर एक बड़ा पीला, मीठा आम लटक रहा है। वह जल्दी से कूदकर आम तोड़ना चाहता था, लेकिन आम बहुत ऊपर था। चिंपू बोला अरे यह तो मुझसे नहीं टूटेगा। तभी उसकी दोस्त लाली, तोता आई और बोली चिंपू धीरे धीरे ऊपर चढ़ो, डरना नहीं चिंपू ने हिम्मत की धीरे धीरे ठहनी पर चढ़ा हाथ बढ़ाया और पकड़ लिया मीठा आम। वह खुशी से चिल्लाया – मैंने कर दिखाया।

सीखः- डरना नहीं, हिम्मत करो, तो मुश्किल काम भी आसान हो जाते हैं।

रेलगाड़ी

दौड़ रही है पटरी पर
रेलगाड़ी छुक छुक छुक छुक
धुंआं उड़ती धुक धुक धुक धुक
मैं भी बैठूं रेल में
रेलगाड़ी रुक रुक रुक रुक
रेलगाड़ी छुक छुक छुक छुक

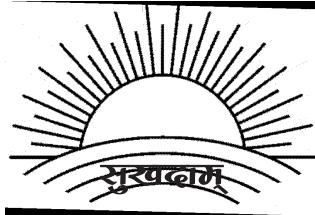
पत्ती

हरी हरी मैं होती हूँ,
पतझड़ में उड़ जाती हूँ।
बसंत में खिल जाती हूँ,
हवा में लह लहराती हूँ।
तेज हवा के झोंकों संग,
सुर से सुर मिलाती हूँ।

बालाकृष्ण



सोनम यादव, डी.पी.एस.ई. प्रथम वर्ष



महिमा जंगचेला, द्वितीय वर्ष

यात्रा

दो साल का सफर, नन्ही शुरूआत थी,
मन में जिज्ञासा, थोड़ी घबराहट की बात थी,
पहले दिन परिचय हुआ, नये विषय से नाता,
बाल विकास की गहराई शिक्षा बनी अब दाता,
थ्योरी के पने पलटे, असाइमेंट की लगी होड़,
प्रेक्टिकल की भी दुनिया में, मस्ती थी हर ओर,
कभी चार्ट बनाये, कभी क्राफ्ट में रात कटी,
टीचर ट्रेनिंग की राह पर, धीरे-धीरे बात बँटी
सहपाठियों का साथ मिला, दोस्ती की छांव में,
हर मुश्किल हुई आसान मिल जुलकर इस नाव में
दो साल में समझे हम बच्चे कूल हैं प्यारे,
देखभाल और प्यार से ही, निखरेंगे ये सारे
शरारत भी देखी, मासूमियत भी जानी,
हर बच्चे की अपनी कहानी, अपनी ही मनमानी
आज सफर पूरा हुआ, डिप्लोमा हाथ में है,
नई उम्मीदों का आसमान अब तुम्हारे हाथ में है।
अब जाओ और बनाओ, सपनों को साकार,
तुम ही हो भविष्य की पहली आधारशिला की दीवार

भारत देश हमारा है

भारत देश हमारा है, हमको जान से प्यारा है।
जो भी एक बार यहाँ आए, उसे यह जल्दी ही अपनाए।
इसके लिये कोई गैर नहीं, किसी से इसको बैर नहीं।
भारत मेरा प्यारा देश, सब देशों से न्यारा देश।
हिन्दू मुस्लिम भाई-भाई, मिलकर रहते सिख ईसाई।
इसकी धरती उगले सोना, इसकी धरती उगले सोना
ऊँचा हिमगिरी बड़ा सलोना, सागर धोता इसके पांव।
तभी कहा जाता भारत महान, सारे जग में फैली शान।

वर्णों से कविता

अ- अ से अनार खाओ, अदरक की चाय बनाओ।

अमरुद है मीठे फल, अजगर दिखे तो दूर निकल।

आ- आठ बजे स्कूल को जाना,

आलू की तुम सब्जी खाना।

आम खा के मजा आया,

आग को देख दूर हट जाना।

इ- मेहनत का फल मिला इनाम,

ऊँची बनी इमारत तमाम।

खट्टी-मीठी लगी इमली शाम,

अच्छे काम करे हर इंसान।

ई- ईश्वर की भक्ति सबसे महान,

ईख चूसो मीठा रस पाओ जान।

ईट से बनता है मकान,

उ- रात को जागे प्यारा उल्लू, जन्मदिन पर मिला उपहार खोलूं।

पंछी भरते नीले गगन में उड़ान, फूलों से महका सुंदर उपवन।

चिड़िया

आसमान में उड़ती चिड़िया,

चीं-चीं करती रहती है।

यहाँ वहाँ फुदक फुदक कर, हमको खुश कर देती है।

जब जायें हम पास उसके, उड़कर भाग जाती है।

जब डालें हम दाना उसको, पास हमारे आती है।

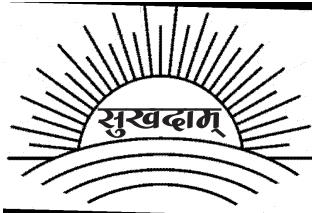
बालाङ्ग



कविता माला

स्वेच्छा रघुवंशी, डी.पी.एस.ई. प्रथम वर्ष

1. वृक्ष हमारे लिये हैं वरदान।
इन्हें मत समझो तुम नादान,
यह करते सबको फल प्रदान।
हम कभी न भूलेंगे इनका अहसान ॥
2. पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ,
खट्टे-मीठे फल तुम खाओ।
सबके मन को तुम बहलाओ,
बातें नई-नई सिखलाओ।
3. बादल आया बादल आया।
मौसम आया मौसम आया ॥।
पानी आया पानी आया।
मजा आया मजा आया ॥।
4. झूले के हैं रंग निराले,
हम सबके हैं वो रखवाले।
खेल हैं इनके अजब निराले,
प्यारे बच्चे हैं मतवाले।
5. रोज सुबह मैं मंदिर जाता,
मम्मी को यह बतलाता।
मेरे मन को यह बहुत भाता,
तब तो मुझको पढ़ना आता।
6. बगीचे में हैं रंग बिरंगे फूल,
लगते कितने कूल कूल।
छोटा समझकर करो न भूल,
बच्चों का बहुत है मूल्य।



रीना यादव, द्वितीय वर्ष

तोता

हरा भरा तोता, पिंजरे में सोता।
काली-काली जामुन खाता,
बड़े सबेरे उड़ जाता।

अच्छे बच्चे

नहे मुने हम हैं बच्चे,
काम करेंगे अच्छे-अच्छे।
आपस में हम कभी न लड़ते,
हिम्मत से हम आगे बढ़ते।
मन पढ़ने में सदा लगाते,
सही समय विद्यालय जाते।



ज्योति अग्रवाल, द्वितीय वर्ष

बूझो तो जाने

- (1) बिना तेल के चलता है, बिना तेल के जलता है
कर उजाला दुनिया में, दूर अंधेरा करता है।
- (2) राजा हूं बिना ताज के जंगल जंगल डोलू,
डर के मारे कांपे सारे, जब अपना मुँह खोलूं।
- (3) घेरदार है लहंगा उसका, एक टांग पर रहे खड़ी
करते हैं सब चाह उसकी, वर्षा हो या धूप कड़ी।

मुझे (३) प्रकृति (२) ताज - (१) लहंगा

बालाकृष्ण



रेनुका मरकाम, प्रथम वर्ष

आसमान

आसमान पर छाए बादल,
बारिश लेकर आए बादल।
छम-छम नाच दिखाए बादल,
चली हवाएँ सन-सन-सन।
मधुर गीत सुनाएँ बादल,
आसमान पर छाए बादल।

रोटी

गोल-गोल बनती है रोटी।
तवे पे छम-छम करती रोटी।।
भोजन में शामिल है रोटी।
सबकी भूख मिटाती रोटी।।

हाथी

हाथी आता, हाथी आता,
सदा झूमता सूंड हिलाता।
छोटी आंखे कान सूपा से,
दांत बड़े-बड़े दिखलाता।
हाथी आता हाथी आता,
भारी भरकम शरीर है पाता।
जी भरकर ये है नहाता,
सूंड में भरकर पानी गिराता।
हाथी आता हाथी आता,
सदा झूमता सूंड हिलाता।



तोता

तोता हूँ, मैं तोता हूँ।
हरे रंग का तोता हूँ।।
नीले आसमान में उड़ता हूँ।
मीठे फल मैं खाता हूँ।।
घर घर में पाला जाता हूँ।
तोता हूँ मैं तोता हूँ।।

आम

मीठा-मीठा ताजा आम,
सभी फलों का राजा आम।
आम से जूस और शेक है बनता
शरीर को हेल्दी-वेल्दी रखता।
मीठा मीठा ताजा आम,
खट्टा-मीठा रसीला आम।

तारे

आसमान में टिमटिमाते तारे,
कितने सारे कितने प्यारे।
झिलमिल-झिलमिल करते तारे,
रात में जब ये हैं टिमटिमाते।
अंधियारे को दूर हैं भगाते,
चमकीले तारे चमकीले तारे।
आसमान में टिमटिमाते तारे,
कितने सारे कितने प्यारे।

फूल

मिट्टी का हम गमला लाएँ,
उसमें सुंदर फूल का पौधा लगाएँ।
तेज धूप से उसे बचाएँ,
सर्च-सर्च कर खूब बढ़ाएँ।
तितली, भौंरा पास मेरे आएँ,
मधुर रस वो खींच ले जाएँ।
रंग बिरंगे फूल है आए,
सबके मन को खूब है भाए।

बालाङ्गण



मुस्कान बन्देवार, प्रथम वर्ष

चिड़िया

चिड़िया चीं-चीं करती है।
पिंजरे में ना रहती है।
सुबह सबेरे उठती है।
दाने को वह खाती है।
पानी को वो पीती है।
चिड़िया चीं-चीं करती है।

समय

सुबह सबेरे जागो बच्चों,
मेरा कहना मानो बच्चों।
समय की कीमत जानो बच्चों,
समय बड़ा बलवान है।
यही बनाता अच्छा इंसान है।

मेंढक राजा

मेंढक राजा बजाते बाजा,
खूब मजा वो करते हैं।
रात हुई तो वो अपने बिल में,
छुपके के टर-टर करते हैं।

सूरज

उगता सूरज हमें बताता,
उगता सूरज हमें बताता।
जीवन एक प्रकाश है।
सूर्य की किरण हमें बताती।
प्रकाश से उज्ज्वल होता संसार है।
उगता सूरज हमें बताता।



नौशीन जहौं
प्रथम वर्ष

बरसता पानी

छम,छम,छम,छम बरसा पानी ॥
छाता लेकर निकली रानी ॥
तेज हवा का झोंका आया।
छाता उसने दूर उड़ाया
पीछे-पीछे भागी रानी ॥
छम,छम,छम,छम बरसा पानी ॥



बारिश

टिप-टिप करती आई बारिश,
लेकर ठंडी-ठंडी बौछार।
कूदे बच्चे छप-छप करते,
जल से भर गई हर गलियाँ।
बादल दादा ढोल बजाएँ,
बिजली चमके ताली मार।
मेंढक भाई गीत सुनाएँ,
नाचें पत्ते बारंबार
कागज की नावें तैर रही हैं,
छोटी-छोटी झीलों पर।
रंग बिरंगी खुशियाँ बरसी,
इस प्यारी सी बारिश में।

गुब्बारा

लाल-नीला-पीला गुब्बारा
उड़ता जाता कितना प्यारा।
हवा भरी तो फूल सा फूला, देख-देख कर मन भी झूला।
उँगली से जो बाँध के रखना, नहीं तो यह छूट कर भागता।
आसमान को छूने जाता, हवा संग हँस-हँसकर गाता।
मेले में हैं सबको भाता है, बच्चों का प्यारा कहलाता।

बालाङ्ग

मेरी पाठशाला

तनु तिवारी, द्वितीय वर्ष



रितु सेन, द्वितीय वर्ष

मेरी पाठशाला में हैं माँ शारदा,
शिक्षक यहाँ के हैं देवी देवता।
मेरे वर्ग मित्र सरस्वती भक्त,
मेरी किताबें हैं जीवन ग्रंथ।
पाना नहीं सिर्फ यहाँ किताबी ज्ञान,
कला क्रीड़ा विज्ञान का भी है ये धाम।
पढ़ना पढ़ना ही केवल न ध्येय,
व्यक्तित्व बनाने का चले यहाँ कार्य।
चली जाऊँगी यहाँ से प्रशिक्षित होकर,
भुला न पाऊँगी पल पल यहाँ के।



मॉण्टेसरी कक्षा

कक्षा में सब खेले साथ,
सीखे मिलकर अच्छी बात।
अंक सीढ़ी से अंकों को गिनते,
रेतीय कार्ड से अक्षर चुनते।
लंबी-सीढ़ी, चौड़ी-सीढ़ी,
रंग पट्टी है नीली पीली।
सबका क्रम हम रखते ध्यान,
साफ सुथरा हो हर सामान।
अपनी कक्षा कितनी प्यारी,
शिक्षा लगती खेल सी प्यारी

सुबह सुबह जब सूरज निकले,
खुलता है अपना बाजार।
रंग बिरंगे फूलों की खुशबू,
मोह लेती हर एक दरबार।
सब्जी वाले की मीठी आवाज,
लो भइया ताजी ले जाओ।
बच्चों की हँसी, दुकानों की रौनक,
चलते-चलते मन बहलाओ।
कपड़ों पर रंगों की बारिश,
मीना बाजार की अलग पहचान।
छिलौने से लेकर छोटी गुड़ियों तक,
सब मिल जाता एक ही स्थान पर
भीड़ में भी अपनापन झलके,
हर चेहरे पर मुस्कान।
जीवन की हलचल दिखती यहाँ,
यही है अपना शहर का मान।
कभी यह बाजार एक शहर की तरह लगता है,
हर किसी की अपनी कहानी अपना सपना है।
पर यह बाजार सिर्फ एक दुकान नहीं,
यह तो जिदंगी की एक राह है।
यहाँ हर चीज बिकती है,
और कुछ नया भी बिकता है।
यहाँ सबकुछ मिलता है,
यही बाजार का खेल है।

बालाङ्गण



निहारिका पटेल, द्वितीय वर्ष

1. मेरी माँ पर कविता

प्यारी जग से न्यारी माँ,
खुशियां देती सारी माँ।
चलना हमें सिखाती माँ,
मंजिल हमें दिखाती माँ।
मेरे दिल में रहती माँ,
मेरी छोटी सी खुशी के लिए
लिये सबकुछ सह जाती माँ।

2. समय पर कविता

समय का जो रखता ध्यान,
जग में होता उसका नाम।
समय को जो खोता है,
बाद में रोता रहता है।
समय कभी नहीं रुकता है।
चलता है, बस चलता है,
सफल वही रहता है।
समय के साथ जो चलता है।

**बिना किसी प्रणाली के लिए
गए अध्ययन से कोई सार्थक
परिणाम मिलने की संभावना
नहीं है।**

- बांकिम चंद्र चटर्जी



सुखह की सीख



बसु कुशवाहा
द्वितीय वर्ष

सूरज निकला घेरे में,
चमके उसकी किरणें।
उठो-उठो अब वक्त हुआ,
नया सबेरा जग में आया।
हाथ धोओ मुँह भी धोओ,
साफ सुथरे कपड़े पहनो।
नाशता करके स्कूल जाओ,
सबको मिलकर प्यार लुटाओ।
मेहनत से जो पढ़ता है,
वही आगे बढ़ता है।
सच बोलो और नेक बनो,
माता पिता का मान करो।



हिमालय

रानू विश्वकर्मा, द्वितीय वर्ष
जिसका ताज हिमालय है,
जहां बहती गंगा की धारा है।
जहां एकता में अनेकता,
सत्यमेव जयते जहां का नारा है।
वह भारत देश हमारा है,
यही हिमालय, यही है गंगा,
यही हिन्द की शान है।
और तीन रंगों में रंगा हुआ,
ये अपना हिन्दुस्तान है।

बालाङण



भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी समाज का योगदान

स्वेच्छा रघुवंशी, प्रथम वर्ष

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासियों का योगदान अमूल्य और वीरतापूर्ण रहा है, जिसमें उन्होंने जल, जंगल और जमीन अपने संसाधनों की रक्षा के लिये संथाल विद्रोह, मुंडा विद्रोह छबिरसा मुंडात्र, भील विद्रोह, कोल विद्रोह और ताना भगत आंदोलन जैसे कई बड़े संघर्षों के माध्यम से ब्रिटिश शोषण का जमकर विरोध किया, जो देश के स्वतंत्रता आंदोलन को मजबूत करने में सहायक सि) हुए।

प्रमुख आदिवासी विद्रोह

संथाल विद्रोह - (1855-56) सिध्दू और कान्हा मुर्मू के नेतृत्व में यह विद्रोह अंग्रेजों और जमीदारों के शोषण के खिलाफ था।

मुंडा विद्रोह - (1899-1900) उलगुलान- भगवान बिरसा मुंडा ने उलगुलान छमहान हलचलऋ का नेतृत्व किया, जो उनके बन अधिकारों और शोषण के खिलाफ था।

भील विद्रोह - (1878-89) टंट्या भील जैसे नायकों ने अंग्रेजों का विरोध किया और आदिवासियों को संगठित किया।

कोल विद्रोह - (1832-33) बिंदराय मानकी और सिंदराय मानकी जैसे नेताओं ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रमुख आदिवासी स्वतंत्रता संग्राम नायक

भगवान बिरसा मुंडा धरती आबा - झारखंड के मुंडा जनजाति के नेता जिन्होंने 19वीं सदी के अंत में उलगुलान महान हलचल नामक आंदोलन का नेतृत्व किया, जमीनदारों और अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया। धरती आबा पृथ्वी के पिता के रूप में पूजे जाते हैं।

अटलूरी सीताराम राजू - आंध्र प्रदेश के रंपा विद्रोह 1922-24 के नेता जिन्होंने जन जातिय हितो के लिये अंग्रेजों से लोहा लिया और अपनी वीरता के लिये जाने जाते हैं।

रानी गाइदिन्ल्यू - नागालैंड की रानी लक्ष्मी बाई जिन्होंने 13 साल की उम्र में नागाशासन की बहाली के लिए हिराका आंदोलन चलाया और बाद में स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सिध्दू-कान्हू - संथाल विद्रोह 1855 के नायक, जिन्होंने संथालों को संगठित कर जमीनदारों और अंग्रेजों के शोषण के खिलाफ विद्रोह किया और फाँसी पर चढ़ गए।

कोमपुरम भीम - तेलंगाना के गौड़ आदिवासी नेता जिन्होंने 1928-40 के दौरान अपने समुदाय के अधिकारों आक्र जंगल के लिए संघर्ष किया।

तिलका मांझी - संथाल नेता, जिन्होंने 1784 में मंगल पाण्डेय से भी पहले अंग्रेजों के खिलाफ हथियार उठाए और संथाल विद्रोह किया।

जतरा भगत - ताना भगत आंदोलन 1914-1920 के नेता जिसने ब्रिटिस जमीनदारों और साहूकारों के शोषण के खिलाफ शांतिपूर्ण प्रतिरोध किया।

तंत्या भील - भील समुदाय के क्रांतिकारी जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया और उन्हे रॉबिनहुड कहा गया।

वुधु भगत - कोल विद्रोह 1832-33, के प्रमुख नेता

जगन्नाथ सिंह - चुआड़ विद्रोह 1766-71 से जुड़े इन सभी नेताओं और उनके समुदायों ने अपनी भूमि, संस्कृति और अधिकारों की रक्षा के लिए अंग्रेजों से जमकर लोहा लिया, जिससे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को मजबूती मिली।



बालाकृष्ण

वर्तमान समय में डिप्लोमा इन प्री प्राइमरी एजुकेशन का बढ़ता महत्व



तनु वर्मा, डी.पी.एस.ई., द्वितीय वर्ष

आज के समय शिक्षा की नींव को मजबूत बनाना अत्यंत आवश्यक हो गया है। बच्चों का प्रारंभिक विकास उनके पूरे जीवन को प्रभावित करता है। इसी कारण डिप्लोमा इन प्री स्कूल एजुकेशन का महत्व पहले की तुलना में बहुत तेजी से बढ़ा है यह कोर्स शिक्षकों को छोटे बच्चों की शैक्षिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक जरूरतों को समझने और पूरा करने के लिए विशेष रूप से तैयार करता है।

1. नई शिक्षा नीति (एन.ई.पी.2020) के कारण बढ़ता महत्व

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अलीं चाइल्डहुड केयर एजुकेशन (ई.सी.सी.ई.) पर विशेष ध्यान दिया गया है। अब से 3 से 8 वर्ष की आयु को शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण चरण माना जा रहा है। एन.ई.पी.के अनुसार :

- ◆ प्ले वे मेथड
- ◆ एक्टिविटी-बेस्ट लर्निंग
- ◆ कॉर्गिनिटिव स्किल डेवलपमेंट
- ◆ भाषा और भावनात्मक विकास

इन सभी पहलुओं को समझने के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों की जरूरत तेजी से बढ़ी है। इस वजह से डी.पी.एस.ई कोर्स की मांग बढ़ गई है।

2. निजी स्कूलों में बढ़ती मांग - आज लगभग हर निजी स्कूल अच्छी तरह प्रशिक्षित प्री प्राइमरी को ही नियुक्त करता है। क्योंकि माता पिता भी अब ऐसे स्कूलों को महत्व देते हैं जहां -

- ◆ जहां बच्चे की सीखने की प्रक्रिया रचनात्मक हो
- ◆ शिक्षक बच्चों को प्यार से संभाल सके
- ◆ कलासरूम आकर्षक और सुरक्षित हो
- ◆ हर बच्चे पर व्यक्तिगत ध्यान दिया जाये

ऐसे में डी.पी.एस.ई. करने वाले उम्मीदवार को बेहतर नौकरी के अवसर मिलते हैं।

3. बाल विकास में विशेषज्ञता की जरूरत - छोटे बच्चों का विकास बहुत संवेदनशील होता है। एक प्रशिक्षित

शिक्षक :

- ◆ बच्चों की भाषा की क्षमता
- ◆ सामाजिक व्यवहार
- ◆ भावनात्मक संतुलन
- ◆ मानसिक विकास को सही दिशा दे सकता है।

डी.पी.एस.ई. शिक्षक को यह समझ सिखाता है कि बच्चे कैसे सीखते हैं। कैसे खेल खेल में पढ़ाया जाए और कैसे उनकी रुचि बनाए रखी जाए।

4. रोजगार और करियर में बढ़ते अवसर -

डी.पी.एस.ई. कोर्स करने के बाद नौकरी के अवसर बहुत बढ़ जाते हैं जैसे -

- ◆ प्री-प्राइमरी शिक्षक ◆ नर्सरी/ के.जी. शिक्षक
- ◆ जे केयर सेंटर में केयर-टेकर
- ◆ प्ले स्कूल को ऑर्डिनेटर
- ◆ स्वयं का प्ले स्कूल अथवा प्री-प्राइमरी स्कूल खोलने का अवसर।

आजकल महिलाएँ भी इस कोर्स को करके घर से चलने वाले होम प्ले स्कूल शुरू कर रही हैं।

5. समाज में बढ़ती जागरूकता -

आज माता पिता छोटे बच्चों को सिर्फ स्कूल भेजने की जगह सही सीखने का माहौल देना चाहते हैं। इसलिए समाज में यह समझ बढ़ रही है कि एक प्रशिक्षित और संवेदनशील शिक्षक ही सही दिशा दे सकता है। यही कारण है कि डी.पी.एस.ई. की मांग समाज और शिक्षक दोनों में बढ़ रही है।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में डिप्लोमा इन प्री-प्राइमरी एजुकेशन को अत्यधिक महत्व इसलिए मिला है क्योंकि यह बच्चों की शुरूआती शिक्षा को मजबूत बनाता है और समाज में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बदलती शैक्षिक जरूरतें और अभिभावकों की जागरूकता - इन सबने मिलकर इस कोर्स को अधिक महत्वपूर्ण और भविष्य के लिए लाभदायक बना दिया है।

बालाङ्ग



भारत में परिवार परंपरा

योजना पारधी, प्रथम वर्ष

परिवार विश्व के अधिकांश हिस्सों में विशेष रूप से भारत में समाज की एक मूलभूत संस्था रहा है। प्रतिबंध आंतरिक संगठन, स्वायत्तता के आधार पर परिवार अलग अलग तरह के होते हैं। भारत में परिवारिक संरचना के डायनामिक्स में कुछ वर्षों में महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। ये परिवर्तन परम्पराओं आधुनिकता, सामाजिक, आर्थिक कारक और सांस्कृतिक बदलावों के बीच जटिल अंतर संबंधों से हुए हैं। ये शहरीकरण, वैष्वीकरण, शैक्षिक प्राप्ति, लैंगिक भूमिकाओं से भी प्रभावित हुए हैं साथ ही प्रायोगिकी का भी योगदान रहा है।

परिवार एक ऐसी इकाई या समूह है जिसमें जैविक और सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक संबंधों द्वारा एक दूसरे से जुड़े व्यक्ति रहते हैं। इसमें हम अपने जीवन के महत्वपूर्ण पलों की संजोकर रखते हैं।

भारत में वसुधैव कुटुम्बकम् के दर्शन का पालन किया जाता है जो कि विश्व बंधुत्व व वैश्विक एकता का प्रतीक है। जिसका अर्थ है पूरी दुनिया एक परिवार है यह एक संस्कृत भाषा का वाक्य है। इसे भारत ही नहीं पूरी दुनिया मानती आई है। भारत में हुए जी 20 शिखर सम्मेलन 2023 जो कि 9-10 दिसम्बर 2023 को भारत के नई दिल्ली में भारत मण्डपम् में आयोजित हुआ था की थीम रखी गई थी - वसुधैव कुटुम्बकम्।

भारतीय समाज सामूहिकतावादी दृष्टिकोण रखता है व पश्चिमी समाज व्यक्तिवादी दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है। भारत सामूहिक दृष्टिकोण परस्पर निर्भरता, सामाजिक एकीकरण और सहयोग को बढ़ावा देता है। जिससे परिवार सामाजिक संरचना का केन्द्र बिंदु होता है। इसी तरह परिवारों की अपनी एक महत्ता होती है।

संयुक्त परिवार - ऐतिहासिक रूप से संयुक्त परिवार ही

भारत में परम्परा व आदर्श और वांछित परिवार माने जाते हैं। यह परिवार पारिवारिक एक जुट्टा, निष्ठा व एकता पर जोर देते हैं। हालं ही की 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में संयुक्त परिवार 20 प्रतिशत हैं और ये निरंतर कम होते जा रहे हैं।

एकल परिवार - ये शाहीकरण शैक्षिक प्रगति, ग्रामीण विस्तार आर्थिक व व्यवसायिक परिवर्तन या स्वतंत्रता की चाह से उत्पन्न होते हैं। हाल ही की जनगणना 2011 के अनुसार एकल परिवारों में बढ़ोत्तरी हुई व हिस्सेदारी 70 प्रतिशत तक बढ़ गई है।

प्राधिकार - आमतौर पर भारत में परिवार पितृसत्तात्मक विचारधारा पर आधारित होते हैं। निवास पितृस्थानीय होता है अर्थात पति शादी के बाद पति के घर रहती है। घर का बड़ा सदस्य मुखिया पिता होते हैं। केरल में और कुछ अन्य समुदायों में घर की मुखिया महिलाएं होती हैं।

लैंगिक भूमिका - भारत में पारम्परिक परिवार परम्परागत लैंगिक भूमिकाओं की प्राथमिकता देने का समर्थन करते हैं।

विवाह प्रणाली - सजातीय विवाह पर आधारित परम्परा चलती आती है। एकल विवाह पर जोर दिया जाता है। हलाकि कुछ समुदायों में बहुपलि प्रथा या बहुपति प्रथा का भी प्रचलन है। अब भारत में परिवारिक संरचना में विविध परिवर्तन देखे जा रहे हैं जो कुछ विशेष मानदण्डों पर चित्रित हैं।

1-मानदण्ड- पारिवारिक व्यवस्था

पारंपरिक संरचना- संयुक्त परिवार व्यवस्था

बदलाव- संयुक्त परिवार का लुप्त होना व एकल परिवारों का बढ़ना।

2- मानदण्ड प्राधिकार।



परिवार का मुखिया पारंपरिक संरचना- पितृसत्रात्मक परिवार, परिवार का मुखिया बड़ा पुरुष होता है।

बदलाव- पितृसत्रात्मक परिवार, परन्तु महिला मुखिया वाले परिवारों में वृद्धि देखी जा सकती है।

3- लैंगिक भूमिका : पारंपरिक संरचना- पुत्र की चाह, पुत्र प्राप्ति तक संतान उत्पन्न करना व महिलाओं की सीमित शिक्षा।

बदलाव- बालिकाओं की प्राथमिकता, आर्थिक गतिविधियों व निर्णय गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी व शिक्षा में बढ़ोतरी।

4- विवाह संबंधी मानदण्ड

परिवारिक संरचना-बाल विवाह के मामले, अर्एंज मैरिज, विवाह जीवन भर का बंधन।

बदलाव - विवाह की औसत आयु निर्धारित की गई प्रेम विवाह का प्रचलन, तलाक व अलग होने की पृवत्ति में वृद्धि।

5. जिम्मेदारी संबंधी मानदण्ड:-

पारंपरिक संरचना - परिवारिक झगड़ों की कमी व मुखिया का निर्विरोध अधिकार व जिम्मेदारी को अच्छी तरह निभाना।

बदलाव - परिवारिक संबंधों में संघर्ष, माता-पिता के निर्णयों में बच्चों की सहभागिता व जिम्मेदारियों से बचने के प्रयास।

भारतीय परिवार परंपरा में जो बदलाव सामने आ रहे हैं उनसे कुछ लाभ हैं तो कुछ हानियां भी स्पष्ट देखी जा सकती हैं।



रेखा कोरी, द्वितीय वर्ष

सर्दी का मौसम है आया

बारिश का मौसम है बीता, और कड़कती ठंड है आई,
लाओ न माँ कम्बल और रजाई।

स्वेटर की भी बारी आई,
माँ गरम, गरम चाय पकोड़े सबके मन को भाएं।
दो माँ पूँड़ी खाने को, पानी गरम नहाने को
खूब सुहानी लगती है धूप,
सूरज चाचा का है बदला रूप।

हफ्ते के ये सात दिन

बच्चों का प्यारा रविवार,
मौज, मस्ती, धूम, धड़ाका,
सैट सपाटे के लिये हैं तैयार।
सोमवार की सुबह हम सब जाते हैं।
अपने विद्यालय होकर तैयार।।
मंगलवार है मीठा-मीठा
बुधवार है इमली का चटकार।।
गुरुवार है उपहारो से भरा हुआ दिन।
शुक्रवार को प्यारी तितली रानी।
दिखलाती हमें रंग हजार।।
और शनिवार को हम सब आकर।
धूम मचाते हर बार।।

बालाकृष्ण



प्रिय शिक्षक

स्वेच्छा रघुवंशी, डी.पी.एस.ई. प्रथम वर्ष

एक शिक्षक का विद्यार्थी के जीवन में बहुत बड़ा योगदान है। शिक्षक हम बच्चों के लिए ईश्वर द्वारा दिया गया ऐसा माध्यम है, जो हमें जीवन जीना सिखाते हैं, सही राह दिखाते हैं, हमारे अंदर की अज्ञानता को दूर करके अंधकार को दूर करके, अहंकार को दूर करके, हमारे अंदर ज्ञान का प्रकाश जगाते हैं। आत्म विश्वास से जीना सिखाते हैं। अनुशासन से रहना सिखाते हैं। आत्मनिर्भर बनाना सिखाते हैं। आत्म विश्वास से रहना सिखाते हैं। आत्म अभिव्यक्ति करना सिखाते हैं। और हमारे अंदर छिपी कलाओं को निखारते हैं। हमें प्रोत्साहित करते हैं। हमें सादगी से जीना सिखाते हैं। संस्कारों में रहना सिखाते हैं। समय के अनुसार चलना सिखाते हैं। और हमारे जीवन को साकार और सुंदर बनाने के लिए हर मोड़ पर हमें रास्ता दिखाते हैं। शिक्षक हमारी अलग पहचान बनाते हैं। देश के लिए जीना और समाज के लिए जीना और परिवार में खुश रहना सिखाते हैं। शिक्षक हर मुसीबत से लड़ना सिखाते हैं। सत्य की पहचान



पर्यावरण

साक्षी धुर्वे, द्वितीय वर्ष

खतरे में है पृथ्वी हमारी,
मिलकर हमें बचाना है।
आओ मिलकर कसम ये खाएँ,
कूड़ा कचरा न फैलाए।
धरती को सुदर बनाएँ,
पर्यावरण को स्वच्छ बनाएँ।



करते हैं। हमें अपने अनुभव से नई-नई बातें सिखाते हैं। हर कदम पर राह दिखाते हैं। शिक्षक का भाव बड़ा निराला होता है। उनके व्यवहारों में ही एक अलग निराली शान होती है। शिक्षक उस दीपक के समान है जो खुद अंधेरे में रहकर बच्चों के जीवन में प्रकाश देते हैं, उजाला करते हैं। शिक्षक उस पुष्प के समान हैं जो इतने कोमल पवित्र होकर भी अनेक कांटों के बीच में रहकर भी अनेक मुसीबतों का सामना करके भी हमें नई उर्जा और हमारे जीवन में नये नये रंग भरते हैं।

शिक्षक हमारे लिए ऐसी पूँजी है। जो हमारे जीवन को ज्ञान के भंडार से भर देते हैं। और हमारे लिए नये नये तरीके से जीवन जीने के दरवाजे खोल देते हैं।

ऐसे हैं हमारे मॉन्टेसरी विद्यालय के आदरणीय शिक्षक जो हमें किस्मत से मिले हैं। इनके द्वारा दिए गए हम बच्चों को संस्कार सदाचार और व्यवहार और शिक्षा की पहचान ही निराली है। ये हमारे जीवन की खुशहाली है। हर खुशी के पल आनंद की अनुभूति और विद्या का भंडार और प्रिय शिक्षकों का मार्गदर्शन व आर्शीवाद ऐसे ही मिलते रहें।



रेल गाड़ी

निधि जंघेला, द्वितीय वर्ष

छुक-छुक-छुक-छुक करती जाती,
पूं-पूं-पूं-पूं करती जाती।
लाल झण्डी सिग्नल देती जब-जब,
रुक जाती है ये तो झटपट।
हरी झण्डी सिग्नल देती,
चल जाती है ये तो फट-फट।
नाम क्या है? बताओ उसका,
रेलगाड़ी नाम है उसका।



कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence)

AI मानव द्वारा विकसित की गई एक ऐसी सोच है जो, मानव जैसा सोच सकती है मानव के जैसा चिंतन कर सकती है मानव के जैसे समस्या का हल निकाल सकती है यहाँ तक कि अगर उसे चार विकल्प दिये जायें तो उसमें से अच्छे विकल्प का चयन भी AI द्वारा किया जा सकता है। AI अब केवल मानव द्वारा विकसित सोच नहीं रह गई बल्कि मशीन सूचना के द्वारा स्वयं ही अपनी सोच विकसित करने में सक्षम हो चुकी है AI यहाँ तक कि क्रियात्मक कार्य करने में सक्षम हैं जैसे पेंटिंग बनाना, लोगो डिजाइन करना, संगीत व किताब लिखना आदि।

AI शब्द का प्रयोग :- सर्वप्रथम अमेरिका के कम्प्यूटर वैज्ञानिक जॉन मेकार्थी के द्वारा 1956 में किया गया था, एवं इन्हें AI का जन्मदाता भी कहते हैं, 1956 में कम फंडिंग के चलते यह तब, उतनी तेजी से विकसित नहीं हो पाया। AI को मानव ने दो रूपों में अत्यधिक तेजी से विकसित किया है। 1 - कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर के रूप में तथा 2 - मशीनरी एवं रोबोट के रूप में इन दो रूपों में हमें AI अत्यधिक देखने को मिलता है।

AI का मानव जीवन को बदलान :- देश की उन्नति चिकित्सा व शिक्षा पर आधारित होती है तो चलिये देखते हैं AI का चिकित्सा व शिक्षा में महत्व।

1 - AI का चिकित्सा क्षेत्र में योगदान - AI ने मेडिकल क्षेत्र में अभूतपूर्व बदलाव किये हैं। यह चिकित्सा इमेजिंग जैसे X-Ray, MRI, CT-Scan को बहुत अधिक सटीकता के साथ पढ़ सकता है जिससे बीमारी को शुरूआती स्तर पर ही पकड़ना मुमकिन हो जाता है। AI संचालित रोबोटिक सर्जरी ने ऑपरेशन को अधिक सुरक्षित कर दर्दनाक और तेज बना

दिया है। मरीजों की दवाईयों, पल्स, BP और स्वास्थ्य रिकॉर्ड्स को 24X7 मॉनीटर करना भी अब AI की वजह से आसान हो गया है। इसने डॉक्टरों का कार्यभार कम किया है, लाखों लोगों की जान बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मशीन के द्वारा जो सर्जरी की जाती है वो सटीक कट के द्वारा की जाती है जिससे कम ब्लड लॉस होता है जिससे मरीज के बचने की संभावना अधिक बढ़ जाती है एवं मरीज जल्दी ठीक हो जाता है। ऑनलाईन हेल्थ जानकारी देने में भी AI उपयोगी है। बीमारी का पता लगाने में भी AI का उपयोग किया जाता है, अगर हम AI को अपने बीमारी के लक्षण बताएँगे तो वह हमें कौन सी बीमारी है यह भी बता देगा।

2 - शिक्षा के क्षेत्र में AI का महत्व:- शिक्षा जगत में एक वास्तविक गुरु की तरह काम कर रहा है। जो हर बच्चे की जरूरत के अनुसार पढ़ाता है। यह छात्र की कमज़ोरियों और क्षमताओं का विश्लेषण करके उसी के स्तर के अनुसार अध्ययन सामग्री तैयार करता है। ऑनलाईन शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाने के लिए AI चैट बॉट टीचर भी प्रदान करता है। उससे कोई भी छात्र, चाहे शहर में हो या गांव में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सकता है। AI ने सीखने की प्रक्रिया को न केवल आसान बल्कि रोचक भी बनाया है।

इससे विद्यार्थी जीवन में भाषा से उत्पन्न होने वाली कठिनाईयों को बड़ी असानी के साथ दूर किया जा सकता है। अब विद्यार्थी किसी भी देश की भाषा को जानकर अपनी पढ़ाई किसी भी भाषा व देश में कर सकता है।

3- राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से:- सुरक्षा की दृष्टि से भी AI प्रोग्राम बहुत उपयोगी है। दुश्मन देश से आने वाली मिसाइलों को संचालित प्रोग्राम Detect करके Self mode on करते

बालाङण



ही दुश्मन की मिसाईल को Shoot कर देंगी। जिससे हमारा देश बच जाएगा। यह AI प्रोग्राम हमें साईंवर सुरक्षा भी प्रदान करेंगे जो हमारे देश की महत्वपूर्ण सूचनाओं को चोरी होने से बचाएगा।

1- AI हेकिंग को रोकता है, वायरस, फ़ॉड को जल्दी पकड़ता है।

2-प्राकृतिक आपदा चेतावनी भी देता है। जैसे बाढ़ तूफान भूकंप प्रोग्राम हमें पहले ही संकेत दे देते हैं, जिससे लाखों लोगों की जान बच सकती है।

4- कृषि में AI का महत्व :- AI प्रोग्राम हमें मौसम की, मिट्टी की, पानी की पूरी जानकारी देता है।

1-फसल की बीमारी की पहचान करने के लिए उपयोगी है, मोबाईल कैमरे से फोटो खींच कर AI से पूछने पर AI प्रोग्राम फसल की बीमारी को भी बता देगा व इसके बचाव भी बता देगा।

2-यह किसान को मौसम भविष्यवाणी के बारे में भी बता देना। जिससे किसान सही समय पर अपनी फसल बेच सकेगा।

3- AI प्रोग्राम सभी के लिए उपयोगी होगा इससे किसानों की फसल में बढ़ोतरी होगी।

5- रोजगार में सहायक:- AI प्रोग्राम इंसानों को रोजगार भी प्रदान कर रहे हैं, AI प्रोग्राम मनुष्य के Creativity में भी सहायता दे रहे हैं जैसे चित्रकारी करना व बताना कि चित्रकारी कैसे करें।

1-संगीत को कैसे बनाया जाये।

2-लेखन कार्य में सहायता।

3-डिजाइन बनाना।

4-Logo Design करना व पोस्टर बनाना।

6-परिवहन को सुरक्षित और उन्नत बनाना:- AI ने परिवहन व्यवस्था में ऐसे बदलाव किये हैं, जिनसे यात्रा पहले से कहीं अधिक सुरक्षित और आरामदायक हो गई है। सेल्फ-ड्राइविंग करें, जो Testing Company के द्वारा लॉन्च की जा चुकी है जो बिना ड्राइवर के चलती है। स्वचालित ब्रेकिंग सिस्टम और स्मार्ट ट्रैफिक मेनेजमेंट के ही प्रयोग हैं। यह सड़क दुर्घटनाओं को रोकने, ट्रैफिक जॉम कम करने और यात्रा समय घटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

7-बुजुर्गों में मदद और लोगों की जान बचाना :- AI प्राकृतिक आपदाओं से बचाता है एवं AI बुजुर्ग लोगों की दवाईयां और स्वास्थ्य की देखभाल में मदद करता है। कई जगह रोबोट साथी की तरह बुजुर्गों से बात करते हैं और उन्हे रोज के छोटे-छोटे काम याद दिलाते हैं। यह दिल की धड़कन और स्वास्थ्य रिपोर्ट भी खुद मॉनिटर कर लेता है। जिससे घर बैठे इलाज आसान होता है।

AI के अभिशाप:-

1- AI इंसानों की नौकरियां स्वयं खत्म कर सकता है:- AI की सबसे बड़ी चिंता यही है कि मशीनें इंसानों के काम धीरे-धीरे छीन रही हैं। फैक्टरी में मशीनें, ऑफिस में ऑटोमेशन और दुकानों में डिजिटल सिस्टम इतने तेजी से बढ़ रहे हैं कि पहले जो काम इंसान करते थे वही अब AI प्रोग्राम कर रहा है। इससे लाखों लोगों के बेरोजगार होने का खतरा बढ़ जाता है और लोगों को अपने करियर को लेकर असुरक्षा महसूस होती है।

2- AI इंसानों की सोचने की क्षमता को कम कर देता है:- जब हर सवाल का जबाब, हर गणना, और हर प्लानिंग AI



कर देता है तो, इंसान खुद मेहनत करना छोड़ दता ह। लाग दिमाग लगाने के बजाय सीधे AI से पूछ लेते हैं। लंबे समय तक यही करते रहने से, मानव स्वयं सोचने की क्षमता को खोता चला जा रहा है, जो उसके सोचने की क्षमता को कम करता चला जाता है।

3- AI के कारण गलत जानकारी बहुत तेजी से फैलती है:- AI ने नकली तस्वीरें, झूठी खबरें और Deepfake वीडियो इतनी सच्ची लगती हैं, कि असली, नकली पहचानना मुश्किल हो जाता है। इससे समाज में भ्रम, डर और गलत फहमी पैदा होती है कई बार लोग फेकन्यूज पर भरोसा कर लेते हैं और गलत फैसले ले बैठते हैं।

4- AI हमारे निजी डाटा को खतरे में डाल सकता है:- AI सिस्टम लोगों की आवाज, फोटो, लोकेशन, चैट और पर्सनल डेटा लीक कर सकता है। अगर यह डेटा लीक हो जाये या गलत हाँथों तक पहुंच जाये तो यह बहुत बड़ा खतरा बन सकता है। निजता खत्म होने का डर हमेशा बना रहता है।

5- AI इंसानों की सोच को कंट्रोल कर सकता है:- AI हमारे सोशल मीडिया पर वही चीजें दिखाता है जो हमें रोककर

रखा धार धोरे हमारी पसंद, नापसंद, राय और सोच मशीनें तय करने लगती हैं। इससे लोगों की स्वतंत्र सोच और निर्णय लेने की क्षमता पर असर पड़ सकता है। जो समाज के लिये बहुत बड़ा खतरा है।

6- AI का गलत इस्तेमाल बड़ा खतरा बन सकता है:- अगर AI गलत हाथों में चला जाये तो इसका इस्तेमाल अपराध, धोखाधड़ी, हैकिंग, जासूसी और गलत प्रचार के लिये किया जा सकता है अपराधी AI को हथियार की तरह इस्तेमाल करके वाँइस बदल सकते, चैट बना सकते हैं। लोगों को धोखा दे सकते हैं यहां तक की मनुष्य को डरा कर उसकी जान तक ले सकते हैं, इससे मनुष्य आत्महत्या तक कर सकता है।

7- प्रोग्राम में खराबी के नुकसान:- AI प्रोग्राम में खराबी होने से मनुष्य तक सूचनाएँ भ्रमपूर्ण जा सकती हैं एवं मशीनों में खराबी आने से मनुष्य की जान भी जा सकती है जैसे सर्जरी के दौरान प्रोग्राम में आई खराबी से ऑपरेशन का बिंगड़ जाने से मनुष्य की जान पर आ सकती है।

AI मानव के लिए वरदान है बशर्ते उसकी सीमाएँ समझदारी से तय की जाए।



प्रेम और सौंदर्य:- “‘गुणों के आकर्षण से उत्पन्न प्रेम चिरस्थायी तो अवश्य होता है किंतु गुणों को पहचानने में समय लगता है। इसीलिए वह प्रेम एकाएक घनिष्ठ नहीं होता - धरि-धरि संचारित होता है। किंतु सौंदर्य से उत्पन्न मोह एकदम पूर्ण रूप से प्रबल हो जाता है’”।

- बंकिम चंद्र चट्टर्जी

बालाकृष्ण



पोर्टफोलियो प्रोजेक्ट डी.पी.एस.ई. प्रशिक्षणार्थी



राज्य स्तरीय पर्यावरण पुरस्कार 2022



झलकियाँ (अकादमिक गतिविधियाँ)



डी.पी.एस.ई. प्रशिक्षणार्थियों
द्वारा व्यवहारिक अध्यापन

चित्रकला प्रतियोगिता
प्राथमिक संघर्ष



प्रशिक्षणार्थियों द्वारा संस्थान की बाल कक्षाओं का अवलोकन



जस्टिस तन्हा मैमोरियल स्कूल का अवलोकन



सांसद महोदय द्वारा स्मार्ट क्लास का लोकार्पण



विजडम पब्लिक स्कूल राईट टाउन का अवलोकन



प्रशिक्षणार्थियों द्वारा कैशिक प्रदर्शनी



शिक्षक दिवस पर आयोजित सम्मान समारोह में पुरुस्कार प्राप्त करते हुए
श्रीमती बरखा और प्रशिक्षण छात्राओं द्वारा बाल कक्षाओं का संचालन व दृश्य



आर एस के यूट्यूब चैनल पर श्रीमती श्रीबा खान

दायर शिक्षा केंद्र
मुख्य विद्यालय
जबलपुर

निषा FLN 3.0 कोर्ट 5
विद्या प्रवेश एवं
बालवादिका की
समझ

झलकियाँ (साहित्यिक, सांस्कृतिक, क्रीड़ा गतिविधियाँ)



राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा पर आधारित राज्य स्तरीय रोल
प्ले प्रतियोगिता 2024-25



डी.पी.एस.ई. प्रशिक्षण छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुति



डी.पी.एस.ई. प्रशिक्षण छात्राओं द्वारा नुकङ्ग नाटक की प्रस्तुति



संस्थान में गणेशोत्सव-2025



जन्माष्टमी - 2025



वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि श्री प्राचीश जैन
भूतपूर्व जे. डी. जबलपुर



रानी दुर्गावती के योग विभाग के विद्यार्थियों द्वारा संस्थान में
इंटर्नशिप के अन्तर्गत योगाभ्यास



सत्र 2025-26 वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता में विजेता छात्राएँ व
प्राचार्य डॉ. राममोहन तिवारी

संस्थान में अतिथि



गणतंत्र दिवस 2026 पर संस्थान में आयोजित विशेष भोज कार्यक्रम में माननीय कलेक्टर जबलपुर व प्राचार्य



संस्थान में गणतंत्र दिवस पर आयोजित विशेष भोज में म.प्र. शासन की कैबिनेट मंत्री श्रीमती संपत्तिया उड़के व अन्य अतिथि 26.1.2026



क्षेत्रीय विधायक श्री अभिलाष पाण्डेय जी प्रशिक्षणार्थियों से मुलाकात करते हुए



माननीय श्री आशीष दुबे जी, सांसद (जबलपुर लोकसभा) का संस्थान में आगमन

झलकियाँ (बाह्य गतिविधियाँ)



यूनीसेफ भोपाल में आयोजित ईसीसीई कार्यशाला



आर.एस.के. व यूनीसेफ द्वारा टी.एल.एम. निर्माण कार्यशाला



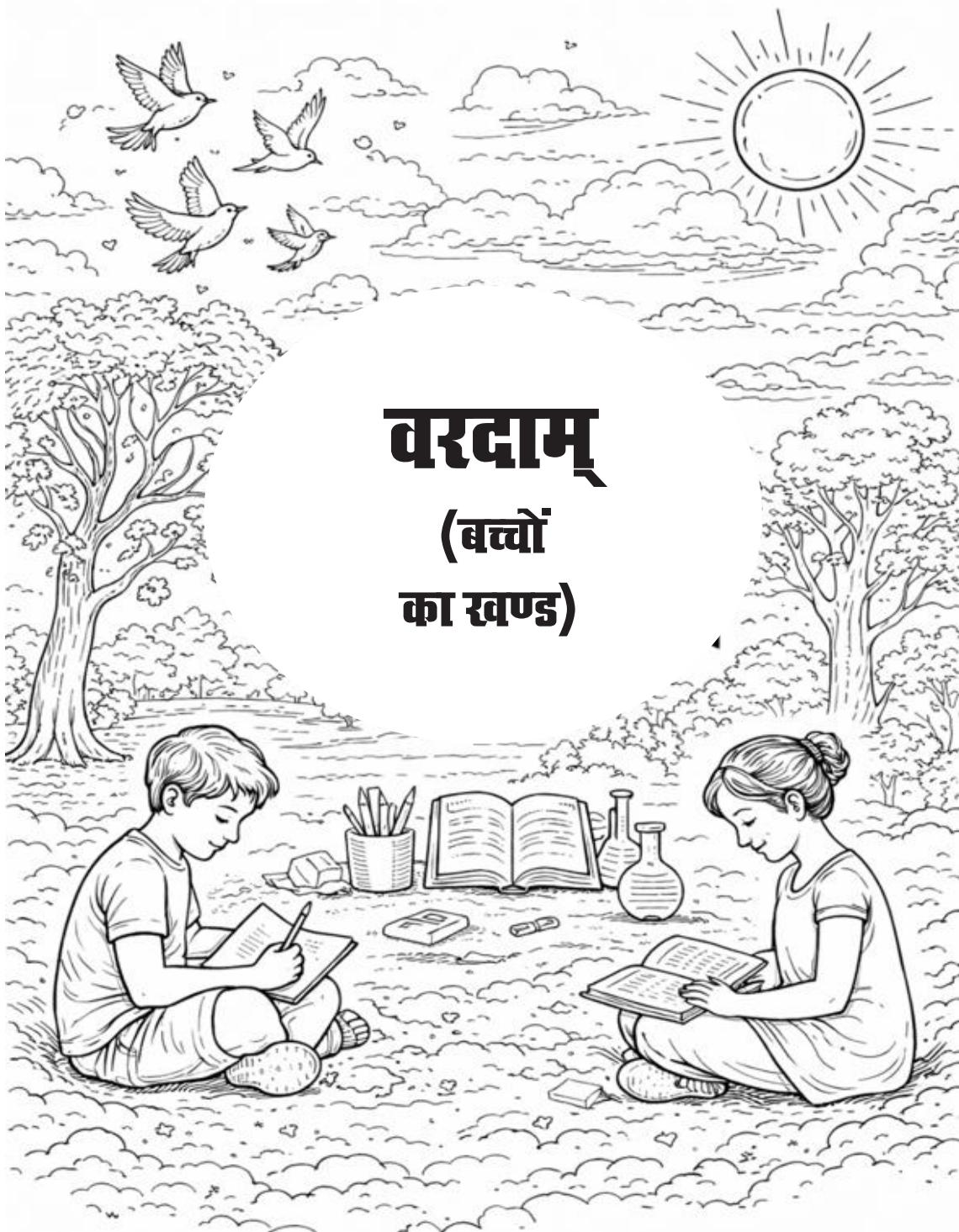
माध्यमिक शिक्षा मण्डल म.प्र. भोपाल में आयोजित कार्यशाला में उपस्थित प्रशिक्षण स्टाफ



भोपाल में प्रोसीजर इलेटिड कोर्ट केसेज कार्यक्रम में संस्थान प्राचार्य की सहभागिता दि. 2.2.2026-6.2.2026

वरदाम्

(बच्चों
का स्पष्ट)



बालाङ्गण



मेरी माँ

निकिता परस्ते, कक्षा- पहली

मेरी माँ हैं सबसे प्यारी,
सारे घर को लगती न्यारी।
सारे घर का काम है करती,
स्वादिष्ट खाना बनाकर देती।
रोज सबरे हमें उठाती,
मुझे पढ़ती और लिखाती।
जब करती है कोई गलती,
सदा सही मुझे बतलाती।



तिरंगा झंडा

आरोही दुबे, कक्षा- तीसरी

तीन रंग का झंडा मेरा
लहर-लहर लहराता है।
केसरिया सफेद और हरा
बीच में नीला चक्र बनाता है।
तीन रंग का ये झंडा
एकता का प्रतीक कहलाता है।
15 अगस्त 26 जनवरी जैसे
पर्वों में लहराता है।
तीन रंग का झंडा मेरा
लहर-लहर लहराता है।



गुड़िया रानी

आरोही पटेल, कक्षा-पहली

मैं एक छोटी गुड़िया रानी
रोना मुझको आता नहीं।
मैं हूँ सुन्दर राजकुमारी
रोना मुझको आता नहीं।
खेलूँ-कूदूँ सबके साथ
अकेले रहना आता नहीं।



बादल राजा

नव्या चौधरी, कक्षा-पहली

बादल राजा, बादल राजा
जल्दी से पानी बरसा जा।
नन्हे-मुन्ने झुलस रहे हैं,
धरती की तू प्यास बुझा जा।



मेरी प्यारी माँ

अहाना अधव, कक्षा-दूसरी

मेरी माँ प्यारी है, दुनिया से निराली है।
प्यार मुझे वो करती है, हरदम ध्यान रखती है।
मुझे कुछ न हो जाए इसलिए वह डरती है।
तैयार कराकर मुझे रोज स्कूल भेजती है।
पढ़-लिखकर अच्छा काम करो, यह कहती है।
जीवन को सफल बनाने का संदेश वह देती है।
माँ-पापा और शिक्षक का नाम रोशन करो कहती है।
जब मैं स्कूल आती हूँ अपनी माँ को शिक्षक में पाती हूँ।
मेरी माँ प्यारी है, दुनिया से निराली है।



बालाकृष्ण

सूरज

रोही समद, कक्षा- पहली

सुबह सबेरे सूरज आता
किरणें सारे जग में फैलाता।
सूरज की है छटा निराली
हमको धूप है लगती प्यारी।



शेर और खरगोश की कहानी

आरोही जायसवाल, कक्षा-दूसरी

एक जंगल में एक शेर रहता था। एक दिन उसे रास्ते में खरगोश मिला, तो शेर बहुत खुश हुआ, क्योंकि शेर बहुत दिन से भूखा था। शेर ने जल्दी से भाग कर खरगोश को झटक लिया। खरगोश बहुत चतुर था। खरगोश ने एक तरकीब लगाई। उसने शेर से कहा कि मैं अपने बहुत सारे दोस्तों को बुलाता हूँ। इससे आपके बहुत सारे दिनों के खाने का इंतजाम हो जाएगा। शेर लालच में आ गया। उसने खरगोश को जाने दिया। खरगोश मौका पाकर भाग गया। शेर हाथ मलता रह गया। इससे हमें यह शिक्षा मिलती है, कि हमें कभी लालच नहीं करना चाहिए और विपत्ति आने पर चतुराई से काम लेना चाहिए।

पेड़ लगाओ

सृष्टि ठाकुर, कक्षा-दूसरी

पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ,
हरा-भरा जीवन बनाओ।
छाया यह हमको हैं देते,
फल-फूल से यह सुन्दर लगते।
लकड़ी, औषधि सब हम पाते,
सदा हमारे काम ये आते।



मोर



समर रैकवार, कक्षा-पहली

नाच मोर का सबको भाता
जब वह पंखों को फैलाता।
पिहू-पिहू का शोर मचाता
झूम-झूम कर नाच दिखाता।



मिष्टी चौरसिया, कक्षा-दूसरी

अच्छी बातें

अच्छी-अच्छी बातें सुन।
टिक, टिक, टिक, टिक, दुन-दुन-दुन।
अच्छी-अच्छी बातें सुन।
जो बच्चे पढ़ते हैं भैया।
आगे ही बढ़ते हैं भैया।
वही सदा रहते हैं पीछे।
जो सबसे लड़ते हैं भैया।
बात है सच्ची, इसको गुन।
टिक, टिक, टिक, टिक, दुन-दुन-दुन।
अच्छी-अच्छी बातें सुन।
क,ख,ग,घ बोलो जी, खेलो कूदो डोलो जी।
रोज सुबह जल्दी उठ जाओ,
रात को जल्दी सोलो जी।
देखो कहता है चुन-मुन।
टिक, टिक, टिक, टिक, दुन-दुन-दुन।
अच्छी-अच्छी बातें सुन।

बालाकृष्ण



हम नन्हे-मुन्ने बच्चे हैं

शिवांशी शुक्ला, कक्षा-चौथी

हम नन्हे-मुन्ने बच्चे हैं।
 अकल के थोड़े कच्चे हैं।
 पर दिलके बहुत ही सच्चे हैं।
 हम न समझे झूठा और सच्चा,
 न हम जाने बुरा और अच्छा,
 केवल लगे हमें मुस्कान अच्छी।
 लगती हैं हमें सभी बातें सच्ची।
 हम नन्हे-मुन्ने बच्चे हैं।
 अकल के थोड़े कच्चे हैं।
 धर्म का नहीं कोई ज्ञान हमें।
 सभी लोग लगते समान हमें।
 कौन अमीर है, कौन गरीब है।
 इस बात का तो नहीं ध्यान हमें।
 हम नन्हे-मुन्ने बच्चे हैं।
 अकल के थोड़े कच्चे हैं।
 शकल से बहुत ही अच्छे हैं।



चूहा मामा

वृंशिका सोनकर, पहली

चूहा मामा क्या-क्या करता
 कुतर कुतर कर उधम मचाता।
 दांतों से है कुट - कुट करता।
 कूदता फांदता बिल में जाता।

मेरी शिक्षिका



वैष्णवी गुप्ता, कक्षा-चौथी

मेरी शिक्षिका जी रोज कुछ नया सिखाती हैं।
 खेल-खेल में ही अनमोल ज्ञान वो दे जाती हैं।
 अ अनाड़ी से ज्ञ ज्ञानी वो बनाती हैं।
 कठिन से कठिन सवाल को,
 क्षण भर में हल करा जाती है।
 मेरी शिक्षिका जी रोज कुछ नया सिखाती है।
 जीवन जीने के उचित मूल्य वह सिखलाती है।
 हों हम अर्जुन, लेकिन वह कृष्ण सी सारथी बन जाती है।
 हमें कुरुक्षेत्र पर विजयी होने का मंत्र सिखलाती है।
 मेरी शिक्षिका जी रोज कुछ नया सिखाती है।

कुछ कर दिखाऊँगा

करन जायसवाल, कक्षा-चौथी

आसमान को छूकर,
 कुछ कर दिखाऊँगा।
 रात दिन मेहनत करके,
 जीवन सफल बनाऊँगा।
 हौसले पस्त न होने दूँगा,
 जोश से स्वयं को भर लूँगा।
 अपने उच्च विचारों से,
 जीत मैं हासिल करूँगा।
 मुझको तुम कमजोर न समझना,
 दुनिया में अपना परचम लहराऊँगा।
 कुछ कर दिखाऊँगा, कुछ कर दिखाऊँगा।

बालाकृष्ण



माँ पर कविता

शिवांश गोंटिया, पाँचवी



सोनपुर गाव

नैन्सी दुबे, कक्षा-पाँचवी

एक गाँव था जिसका नाम सोनपुर था। सोनपुर गाँव की चर्चा दूर-दूर तक थी। गाँव को देखने जगह-जगह से लोग आते थे। एक दिन गाँव में कुछ लोग आये, जिन्होंने फैक्ट्री बनवाने की माँग की। पहले तो लोगों ने फैक्ट्री बनवाने के लिए मना किया, फिर जब उन्होंने समझाया और कहा कि फैक्ट्री से लोगों को रोजगार मिलेगा फिर सभी लोग मान गए और फैक्ट्री बन गई। सभी को रोजगार तो मिला पर फैक्ट्री से निकलने वाले धूएँ से वातावरण दूषित हो गया, जिससे जानवरों व मनुष्यों को परेशानी होने लगी। इसका गाँव वालों ने विरोध किया और कहा कि इससे हमारी और हमारे जानवरों की जान को खतरा है इसके निवारण के लिए आपलोगों को कुछ करना होगा। तो फैक्ट्री वालों ने इसके निवारण के लिए रास्ता निकाला। फैक्ट्री से निकलने वाले गंदे पानी को नदी में न बहाकर उसको बड़े नालों से जोड़ दिया तथा लकड़ी की जगह इलेक्ट्रिक मशीनों का उपयोग करने लगे। जिससे सोनपुर के वातावरण में काफी सुधार हुआ और सोनपुर के लोग खुशी से अपना जीवन व्यतीत करने लगे।

सीख-हमें अपने आसपास के वातावरण को साफ रखना चाहिए। यह हमारे जीवन का आधार है।

घुटनों से रेंगते रेंगते,
कब पैरों पर खड़ा हुआ,
तेरी ममता की छाँव में,
जाने कब बड़ा हुआ ॥
काला टीका दूध मलाई
आज भी सब कुछ वैसा है,
मैं ही मैं हूँ हर जगह,
माँ प्यार ये कैसा है,
सीधा-साधा भोला-भाला,
मैं ही सबसे अच्छा हूँ,
कितना भी हो जाऊँ बड़ा,
माँ! मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ ॥

बारिश आई! बारिश आई!

चिराग लखेरा, कक्षा-पाँचवी

काले-काले बदरा छाकर
बरस रहे हैं छम-छम-छम
बूँदे गिड़की के शीशों पर
बूँदे पेड़ों के पत्तों पर
टपक रही हैं छर-छर-छर
भीग रहे हम झर-झर-झर ।
कागज की कश्ती पानी पर
चिड़िया का झुंड है पेड़ों पर
मोर नाचता पंख फैलाकर
मेढ़क करते टर-टर-टर ।
बारिश की है छता मनोहर ।



लालची साँप और चींटी

लक्ष्य कलसा

एक समय की बात है। एक पेड़ पर बिल में एक साँप रहता था। वह रात में मेंढक और पक्षियों का शिकार करता तथा दिन में सोता। कुछ दिन बाद वह साँप बड़ा हो गया और उस बिल में जाना, उसके लिये कठिन हो गया। उसने सोचा कि अब वह अपना ठिकाना बदलेगा। वह अपने नए घर की तलाश करने लगा। उसे एक बरगद के पेड़ पर एक बड़ा सा बिल दिखा। उसी पेड़ के नीचे चीटियों की पहाड़ी थी। साँप पेड़ के पास आया और चीटियों से बोला आज से इस पेड़ पर मैं रहूँगा। तुम सबको इस जगह से तुरंत जाना पड़ेगा। आस पास रहने वाले सभी जानवर और पक्षी बहुत डर गए थे। मगर चीटियों को कुछ फर्क नहीं पड़ा था। वह पहाड़ी उन्होंने बहुत मेहनत से बनाई थी। सभी चीटियां एक जुट होकर आगे बढ़ीं और साँप को चारों तरफ से घेर लिया और उसे काटने लगीं। साँप को बहुत दर्द हुआ और चिल्लाता हुआ वहां से भाग गया। उसके बाद वह वहां कभी वापस नहीं आया। अब वहां सारे जानवर और पक्षी खुशी से रहने लगे। **शिक्षा :-** एकता में शक्ति होती है।

ईशा के सपने

अनुष्का लोधी, कक्षा-पाँचवीं



एक छोटा सा गांव था उसमें बहुत सारे लोग रहते थे। उन्हीं में से ईशा, उसकी मम्मी तुलसी और उसके पिता महेश रहते थे। वह एक गरीब परिवार था एक किराये के मकान में रहते थे। उसके पापा जूते पॉलिश का काम करते थे और उसकी मम्मी घरों में काम करती थी, ईशा गांव के पास सरकारी स्कूल में पढ़ती थी। उनके पड़ोस में उनके मकान मालिक रहते थे। वह लोग उसकी मम्मी से कहते थे कि आपकी लड़की कुछ नहीं कर पाएगी उसे बेकार में स्कूल भेज रहे हो, पर उसकी मम्मी को पूरा भरोसा था कि ईशा कुछ बन जायेगी। वह लोग ईशा से बहुत जलते थे उनका मानना था कि लड़कियों को स्कूल नहीं जाना चाहिये। समय बीत गया। अब ईशा पाँचवीं में आ गई उसकी पहली बोर्ड परीक्षा थी उसमें वह प्रथम आई। उसके मम्मी पापा दोनों बहुत खुश हुए, तुलसी ने घरों में मिठाई बांटी जब मोहल्ले वालों को ये बात पता चली तो मोहल्ले वाले चौंक गए। उन्हें यकीन नहीं हो रहा था। उसकी मम्मी जहां काम करती थी, वहां गई तो उसे बहुत सारा आशीर्वाद मिला। और उसके पास मेडल ट्राफी बहुत सारे जमा हो गए। समय बीत गया, ईशा अब कॉलेज में पहुंच गई। कॉलेज में वह अव्वल आती थी अब वह आई.पी.एस. बन गई। और अपने मम्मी का सपना पूरा किया और खुद का घर भी बना लिया।

शिक्षा:- हमें इससे यह शिक्षा मिलती है कि हमें कभी लड़कियों को कम नहीं समझना चाहिए।

नन्ही चिड़िया

अनुष्का पटेल, कक्षा - पाँचवीं



एक दिन की बात है।

एक चिड़िया अपनी बच्ची को उड़ना सिखा रही थी, पर बच्ची घबरा रही थी कि वह गिर जायेगी। माँ ने उसे कहा बार बार प्रयास करो जल्द ही तुम उड़ना सीख जाओगी। नन्ही चिड़िया के बार बार प्रयास करने से वह उड़ना सीख गई माँ बेटी खुशी खुशी उड़ने लगे।

साँप और गिलहरी की दोस्ती

शुभी सोंधिया, कक्षा- पांचवीं

एक पेड़ पर गिलहरी का धोंसला था उसके नीचे सांप का बिल था। एक दिन गिलहरी अपने बच्चों के लिये खाना लेने गई और तभी चील आ गई। चील गिलहरी के बच्चों को खाने आई तब साँप ने आगे आकर गिलहरी के बच्चों को बचा लिया और तब से जब गिलहरी खाना लेने जाती तब साँप उसके बच्चों का ध्यान रखता और जब साँप खाना लेने जाता तब गिलहरी उसके बच्चों का ध्यान रखती।

शिक्षा - हमें मिलजुल कर हर समस्या का ध्यान रखना चाहिए।

बालाङ्गन

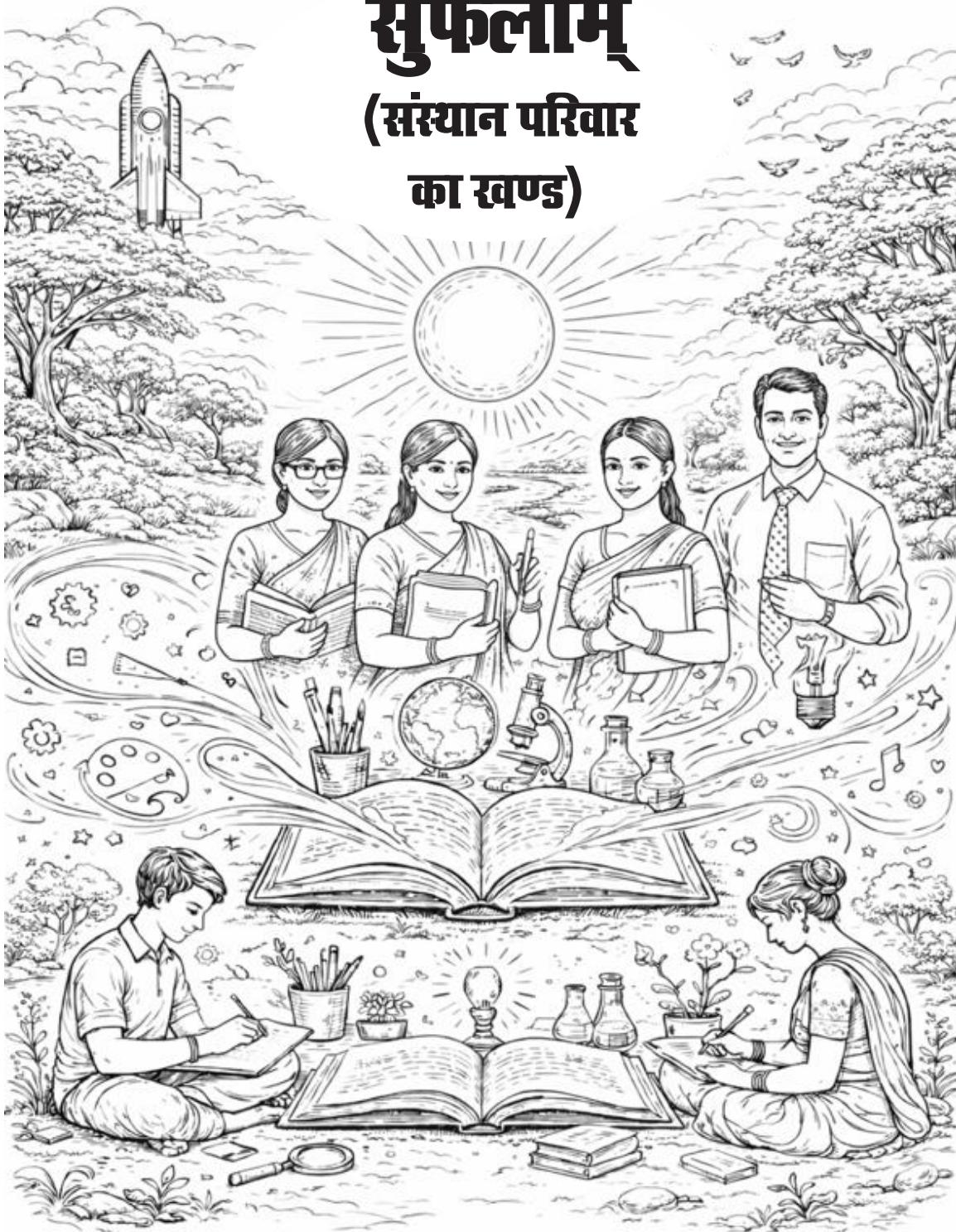
वरदान्

बाल कक्ष की चित्रकारी



सुफलाम्

(संरथान परिवार का खण्ड)



बालाकृष्ण

2003 से 2026 संस्थानगत महत्वपूर्ण कार्य

डॉ. राममोहन तिवारी, प्राचार्य /उपसंचालक सर्वांग



समय का प्रवाह निरंतर/
अनवरत युगों से चलता आया है।
वास्तव में तभी तो युग का सूजन हुआ।
मुझे स्मरण है कि समय के इसी प्रवाह
ने कई दिनों की सीमापार कर 25
अगस्त 2003 को इस राज्यस्तरीय
गौरवशाली संस्थान (शास.पूर्व
प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान (मानेसरी)

जबलपुर में प्राचार्य के पद पर आसीन रहते हुए सुकृत्य का
भागीदार बनने का सुअवसर प्रदान किया। सच कहूं तो इस
संस्थान का पूर्व अवलोकन करते हुये वे मय मन इस संस्थान
की ओर आकृष्ट हुआ था।

संस्थान का प्रभार सम्भालने से लेकर वर्तमान तक
संस्थान हित में कई कार्यों को पूर्णता प्रदान किया गया यथा-

- मुख्य प्रवेश द्वार पर सुरक्षा की दृष्टि से गेट का निर्माण।
- मुख्य प्रवेश द्वार से लगा प्रार्थना मंच एवं लघु मैदान का
चित्रकारी युक्त बाउण्डी वॉल के सहित निर्माण।
- सायकल/ स्कूटी स्टैण्ड का निर्माण।
- बालमंदिर/प्राथमिक (कक्ष 1 से 2) हेतु प्रार्थना
कक्ष/मध्यान्त भोजन कक्ष का जनभागीदारी योजना
अंतर्गत निर्माण।
- बाल कक्ष क्रीड़ा स्थल पर स्टेज व चित्रकारी बाउण्डी
वॉल का निर्माण।
- भूतल के बरामदों की फर्श का पुनर्निर्माण/ बालमंदिर के
कक्षों के शौचालयों की मरम्मत/ पानी सप्लाई हेतु नवीन
पाइप फिटिंग।
- प्रधानाध्यापक कक्ष/प्राचार्य कक्ष का फर्श एवं प्रसाधन
कक्षों की मरम्मत/नवीनीकरण।
- कार्यालय कक्ष की फर्श का नवीनीकरण मरम्मत
कम्प्यूटर कक्ष का निर्माण।
- सम्पूर्ण संस्थान भवन में नवीन विद्युत फिटिंग का कार्य।
- पेयजल कक्षों/एक्वागार्ड/ वाटर कूलर की व्यवस्था।
- सभागार का नवीनीकरण।
- नगर निगम जबलपुर के सहयोग से नवीन प्रसाधन कक्षों
का निर्माण।
- जल व्यवस्था हेतु संस्थान एवं छात्रावास में बोरिंग का
कार्य।
- जिला प्रशासन के सहयोग से कम्प्यूटर, प्रिंटर आदि की

व्यवस्था।

- अभिभावकों/भूतपूर्व विद्यार्थियों के सहयोग से संस्थान
हेतु संसाधन/धन राशि आदि का संग्रहण।
- जन सहयोग से बच्चों के लिये झूलों आदि की व्यवस्था।
- सम्पूर्ण संस्थान भवन के छप्पर मरम्मत एवं खपरैल
हटाकर प्रोफाइल शीट्स लगवाने का कार्य।
- पृथक पुस्तकालय/वाचनालय, स्टाफ कक्ष, ई.सी.सी.ई.
कक्ष इत्यादि की व्यवस्था।
- गोल ध्वजस्थल के चारों ओर पेवर ब्लाक लगवाना।
- संस्थान महिला छात्रावास का खपरैल हटाकर प्रोफाइल
शीट/सीलिंग लगवाने का कार्य।
- छात्रावास के कक्षों/बरामदे/प्रसाधन कक्षों में टाइल्स
लगवाने का कार्य।
- छात्रावास में बोरिंग जल व्यवस्था हेतु बोरिंग का कार्य/
शुद्ध शीतल पेय जल हेतु वाटर प्यूरीफायर/ एक्वागार्ड
एवं वाटर कूलर लगवाने का कार्य।
- जिला प्रशासन के सहयोग से संस्थान में कनेक्शन/टावर
लगवाने का कार्य।
- मान. सांसद महोदय जबलपुर के सहयोग से स्मार्ट क्लास
का शुभारंभ।
- मान. क्षेत्रीय पार्षद नगर निगम जबलपुर के सहयोग से
संस्थान के परिसर की सफाई का कार्य।
- संस्थान में मोलिंग कुर्सियां, पोडियम, टाटफट्टी, दरी,
टी.वी., फ्रिज आदि संसाधनों की व्यवस्था।
- संस्थान का अस्तित्व व अस्मिता बचाये रखने के लिये हर
संभव सफल प्रयास किया गया।

डीपीएसई का परीक्षाफल शत प्रतिशत रहना, म.प्र.
राज्य शासन द्वारा वार्षिक पर्यावरण पुरस्कार वर्ष 2021-22
प्राप्त होना, अनेकों राज्य स्तरीय कार्यशालाओं में सहभागिता
इत्यादि निश्चित ही प्रसन्नता एवं स्फूर्तिदायक प्रसंग रहे हैं।
इन सब उपलब्धियों में संस्थान का अनुशासित व समर्पित
स्टाफ एवं प्रशिक्षणार्थियों का हमें भरपूर सहयोग मिलता रहा
है। भूतपूर्व विद्यार्थियों, प्रशिक्षणार्थियों, अभिभावकों का भी
समय-समय पर हमें सार्थक सहयोग प्राप्त होता रहा है।
संस्थान संचालन में सभी सहयोगी इकाइयों के प्रति सादर
साधुवाद। आइये हम सब इस संस्थान के नवोत्थान में
सहभागी बनें।

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय

भारतीय राष्ट्रीय चेतना के अमर शिल्पी



भारतीय इतिहास में कुछ शब्द ऐसे शब्द हैं जो केवल शब्द नहीं, बल्कि युग परिवर्तन की घोषणा हैं। कुछ गीत ऐसे होते हैं जो राष्ट्र की आत्मा बन जाते हैं और कुछ रचनाएं ऐसी होती हैं। जो आने वाले सौ दो सौ वर्षों तक निरंतर प्रेरणा देती रहती हैं। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित वन्दे मातरम् ऐसा ही एक अमर गीत है- एक ऐसा चिरंजीवी मंत्र जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को धधकते ज्वालामुखी की तरह उभारा।

आज जब इस महान रचना के 150 वर्ष पूर्ण होने पर पूरे देश में पुनः उत्साह और सम्मान का वातावरण है तब इसके जनक बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय पर विचार करना स्वयं में राष्ट्रीय कृतज्ञता का प्रतीक है।

27 जून 1838 को कथालपाड़ा बंगाल में जन्मे बंकिमचंद्र बाल्यकाल से ही प्रतिभाशाली और संवेदनशील थे। संस्कृत, बंगला और अंग्रेजी तीनों भाषाओं में उनकी पकड़ गहरी थी। वे कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी.ए. की परीक्षा पास करने वाले प्रथम भारतीयों में से थे। सरकारी नौकरी में डिप्टी मजिस्ट्रेट के पद पर रहते हुए भी उनका मन समाज, साहित्य और राष्ट्र की नयी चेतना के निर्माण में लगा रहता था। उनके भीतर विचारों का एक उग्र प्रवाह लगातार सक्रिय था, जो आगे चलकर भारतीय राष्ट्रवाद का संस्कृतिक आधार बना।

बंकिमचंद्र को बंगाल उपन्यास का जनक कहा जाता है। उनके प्रमुख उपन्यास-आनन्दमठ, दुर्गेश नंदिनी, देवी चौधरानी कपालकुंडला और कृष्णकांत का वसीयत नामा ने बंगाली साहित्य को नई दिशा दी। उन्होंने उपन्यास को केवल मनोरंजन नहीं बल्कि राष्ट्रीय जागरण का साधन बनाया।

जब इस वर्ष वन्दे मातरम् की एक सौ पचासवीं वर्षगांठ मनाई जा रही है, तब उसका उद्भव, उसका प्रभाव और उसका सांस्कृतिक मनोवैज्ञानिक अर्थ समझना अत्यंत आवश्यक है।

जब “वन्दे मातरम्” उपन्यास आनंद मठ में पहली बार सबके सामने आया था तब भारतीय जनमानस राजनीतिक



श्रीमती अर्चना शर्मा, सहा.प्राध्यापक

गुलामी से घुट रहा था, आत्म विश्वास टूटने लगा था। ऐसे समय में यह गीत मातृ भूमि को देवी स्वरूप में स्थापित करता है।

वन्दे मातरम्, सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
ये पंक्तियां आत्म गौरव का पुर्ण जागरण हैं।

भारत में पहली बार किसी साहित्य कृति के भीतर मातृ भूमि को माँ के रूप में प्रकृति को राष्ट्र की समृद्धि के प्रतीक के रूप में और राष्ट्र भक्ति को अध्यात्मिक कर्तव्य के रूप में इस प्रकार जोड़कर प्रस्तुत किया गया।

वन्दे मातरम् ने क्रांतिकारियों की शक्ति को प्रज्जवलित किया, आंदोलनों को स्वर दिया, सभाओं में राष्ट्रवाद की ज्वाला को प्रबल किया और युवाओं में निःस्वार्थ त्याग की भावना जगाई। यह गीत इतना शक्तिशाली था कि अंग्रेजी सरकार ने कई बार इसे प्रतिबंधित करने की कोशिश की।

“वन्दे मातरम्” ने यह स्पष्ट कर दिया की राष्ट्रवाद संस्कृति, आस्था, भूमि, भाषा और इतिहास का संयुक्त सम्मान है। आज 150 वर्षों बाद भी वन्दे मातरम् की प्रारंभिकता वही है। आज भारत तेजी से प्रगति कर रहा है। लेकिन आत्मा वही है जो माँ भारती को प्रणाम् करती है, जो विविधता को एकता बनाती है और जो त्याग, करूणा और वीरता को मूल्य मानती है। वन्दे मातरम् इस आत्मा की शाश्वत ध्वनि है।

बंकिमचंद्र की साहित्यिक शैली विशिष्ट है। उनके साहित्य में गंभीरता और सरलता का अद्भुत संतुलन है, चरित्रों की जीवन्तता है और इतिहास और कल्पना का सुंदर संगम है। बंकिमचंद्र ने कपालकुंडला, देवी चौधरानी और अन्य उपन्यासों में स्त्रियों को शक्ति विवेक और नेतृत्व के रूप में चित्रित किया है। जो उस समय के लिये अत्यंत प्रगतिशील दृष्टि थी। बंकिमचंद्र ने भारतीय समाज में स्वाभिमान, सांस्कृतिक एकता, आत्मविश्वास, राष्ट्रप्रेम और आध्यात्मिक राष्ट्रीयता की नींव रखी है। उन्होंने भारतीयों को “राष्ट्र” शब्द का अर्थ सिखाया।

वन्दे मातरम् - यह केवल शब्द नहीं भारत की आत्मा की धड़कन है।

संवर्धित बचपन का आधार

खेल खेल में शिक्षा

श्रीमति बरखा खरे, प्राचार्य हाइस्कूल संवर्ग शा.पूर्व प्राथ. प्रशि.संस्थान,जबलपुर



राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारत सरकार के द्वारा 29 जुलाई 2020 को प्रस्तुत की गयी। मध्यप्रदेश सरकार ने इसे हर स्तर पर शीघ्रता से लागू किया। शासन द्वारा एन.ई.पी. 2020 की अनुसंसाओं के आधार विभिन्न कार्य

योजनाएँ तैयार कर कार्यक्रम आयोजित किये। इसी कड़ी में राज्य शिक्षा केन्द्र मध्य प्रदेश भोपाल ने एन.ई.पी. 2020 की मंशा के अनुरूप रिफलैक्टिव टीचर्स तैयार करने के उद्देश्य से शिक्षक सेमीनार आयोजित करने का निर्णय लिया। रा.शि.केन्द्र द्वारा प्रदेश भर के प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अकादमिक स्टाफ और शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों से शोधपत्र/शैक्षिक आलेख आमंत्रित किये। तत्पश्चात राज्य स्तर पर गठित चयन समिति द्वारा प्राप्त शैक्षिक आलेखों का चयन किया गया।

मेरे द्वारा शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षक संस्थान पी.पी.आई.टी. जबलपुर का प्रतिनिधित्व करते हुये शैक्षिक आलेख तैयार कर आर.एस.के. को प्रेषित किया गया जो कि राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा आवंटित विषय - “प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा” के अंतर्गत था, जिसका शीर्षक “बचपन का आधार खेल-खेल में शिक्षा” था। उक्त आलेख का चयन राज्य स्तरीय सेमीनार हेतु किया गया है। यहां मैं इसी लेख की महत्वपूर्ण बातें प्रस्तुत कर रही हूँ।

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा ई.सी.सी.ई. ने समय के साथ-साथ अनेकों बदलाव देखे किन्तु एन.ई.पी.2020 की घोषणा के बाद इस आयु 3-6 वर्ष की शिक्षा को औपचारिक शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ना अनूठी पहल है जिसकी आवश्यकता कई वर्षों से महसूस की जा रही थी यह वर्तमान समय की मांग है।

सुरक्षित और संवर्धित बचपन का आधार खेल-खेल में शिक्षा - सुरक्षित और संवर्धित बचपन मानव विकास की

नींव है। बाल्यावस्था के 3-6 वर्ष 6-12 वर्ष उत्तर बाल्यावस्था के होते हैं। यह आयु जीवन का निर्माणकाल होता है। बच्चे के मस्तिक का 85 प्रतिशत विकास 6 वर्ष तक हो जाता है अतः उसे गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा मिलना उसका अधिकार है और यदि शिक्षा का माध्यम खेल आधारित, गतिविधि आधारित हो तो और भी अच्छा होगा।

खेल बालक की स्वाभाविक जन्मजात प्रवृत्ति है इसके माध्यम से बालकों का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है। बाल्यावस्था में बालक न केवल अनुकरण द्वारा बल्कि खेलों, गीतों, कहानियों, पहेलियों द्वारा आनंद के साथ सीखते हैं। ई.सी.सी.ई. में मुख्य रूप से लचीली बहुस्तरीय, बहुआयामी व गतिविधि आधारित शिक्षा को शामिल किया गया है।

बाल्यावस्था में देखभाल से आशय- इसमें बालक के उत्तम स्वास्थ्य, पोषण, सुरक्षा व संरक्षण प्रदान करना है। खेल खेल में आरंभिक शिक्षा की व्यवहारिक तैयारी भी शामिल है। तीन वर्ष के बाद से उसके बहुआयामी विकास की प्रक्रिया आरंभ हो जाती है। **उदाहरण-**

(1) **खेल खेल में भाषायी विकास** - इस आयु में बालक केवल घर की भाषा से परिचित होता है।

- ◆ अधिक से अधिक बातें करें
- ◆ कहानी सुनाएँ
- ◆ अभिनय द्वारा गीत गाएँ
- ◆ कविता सुनाएँ
- ◆ पहेलियां सुनाएँ
- ◆ कठपुतली द्वारा थीम आधारित समझ विकसित करें
- ◆ सुनने बोलने से संबंधित खेलों में बालक की भागीदारी करें।
- ◆ संगीत के ऑडियो, वीडियो, मॉडल
- ◆ अभिव्यक्ति चार्ट द्वारा परस्पर संवाद स्थापित करें
- ◆ ध्वनि जागरूकता हेतु बालक की परिचित सामग्री का

बालाकण



प्रयोग करें।

(2) खेल खेल में संज्ञानात्मक विकास और संख्या पूर्व कौशलों का विकास

- 1- बालकों को उनके आस पास की दुनिया को समझने में मदद करें।
- 2- रंग व गंध की पहचान, आसपास उपलब्ध वस्तुओं से कराएँ।
- 3- भ्रमण के दौरान वस्तुओं के आकार,आकृति,गिनती हल्का,भारी,मोटा,पतला, कम, ज्यादा, चिकना, खुरदुरा, गरम,ठंडा इत्यादि का खेल कराएँ।

उपरोक्त खेल गतिविधियां बालक की खेल खेल मानसिक कुशलताओं के विकास में सहायक होगी।

(3) खेल खेल में शारीरिक विकास- स्थूल और सूक्ष्म माँसपेशीय कौशल

- 1- बच्चों को खेल खेल में पेपर फाड़ना, चिपकाना काटना सभी कार्य करने दें।
- 2- चलना, दौड़ना, कूदने को दिनचर्या में शामिल करें उपरोक्त खेल गतिविधियां बालक के उत्तम शारीरिक विकास में सहायक होगी जिससे बालक में गतिशीलता, संतुलन, और समन्वय का अभ्यास होगा।

(4) खेल खेल में सामाजिक विकास

- 1- बच्चों से स्वयं अभिवादन करें
- 2- परिवार, मित्रों के साथ स्वयं शिष्टाचार से मिलें
- 3- जन्मदिन, त्यौहारों में बालकों का सहयोग लेकर उत्सव मनाएँ
- 4- अपनी भवनाओं पर नियंत्रण रखें
- 5- दूसरे की मदद करें व बालकों से भी करायें

(5) खेल खेल में रचनात्मक अभिव्यक्ति और सौंदर्य बोध का विकास

- 1- मिट्टी से आकृतियां बनाना
- 2- नाटक, रोल प्ले, नृत्य करना।
- 3- रंगों का चयन कर आकृतियों में भरना
- 4- मॉडल बनाना, रेत पर खेलना
- 5- कोलाज बनाना, चित्रों में रंग भरना
- 6- फाड़ना काटना चिपकाना

बच्चों को स्वतंत्र रूप से कार्य करने दें व प्रत्येक बच्चे को अवसर दें विशेषकर शर्मिले बच्चों को अवश्य शामिल करें।

खेल खेल में शिक्षा की आवश्यकता-

भारत कृषि प्रधान देश है। देश की कुल जनसंख्या का लगभग चौथाई हिस्सा गावों में निवासरत है, माता-पिता अपने बच्चों को उस प्रकार का वातावरण नहीं दे पाते जिसकी इस आयु के बालकों के लिये आवश्यकता होती है। जबकि इस आयु में बालक का सर्वांगीण विकास करने का सबसे सरल तरीका खेल खेल में सिखाना है।

कहा गया है बालक की प्रथम गुरु माँ होती है व परिवार प्रथम पाठशाला, परिवार में इस प्रकार की खेल गतिविधियों द्वारा माता पिता बालक के बचपन को संवर्धित कर सकते हैं।

“शिक्षा बच्चों का अधिकार ।

मजबूत राष्ट्र का यही आधार ।।

शिक्षा ऐसी है जो मन को भाए।

खेल खेल में सब समझ आए ।।

शिक्षा सजा न भार हो ।।

खेल का ही एक प्रकार हो ।।”

जब तक कोई मुँह पर बात न कहे,
यही समझना चाहिए कि उसने कुछ नहीं कहा। - प्रेमचंद

डिजिटल युग में शिक्षकों की भूमिका

डॉ. समीहा तिवारी, ड.मा.शि.



डिजिटल युग वह समय है, जिसमें जीवन की अधिकांश गतिविधियाँ इंटरनेट, डिजिटल उपकरणों, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और ऑनलाइन माध्यम से संचालित होती हैं। जीवन के हर क्षेत्र में जहां तकनीकों का उपयोग हो रहा है, वहां शिक्षा जगत भी इससे अब अचूता नहीं है। शिक्षा अब किताबों या ब्लैक बोर्ड तक सीमित नहीं है, बल्कि इंटरनेट, मोबाइल, स्मार्ट क्लास, वर्चुअल लर्निंग, डिजिटल उपकरण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से शिक्षा का स्वरूप तेजी से परिवर्तित हो रहा है।

इस बदलते समय में शिक्षक की भूमिका भी पूरी तरह बदल गई है। शिक्षक को केवल अब ज्ञान प्राप्त करने वाला नहीं, अपितु उसे ऑनलाइन प्लेटफार्म के सही व सार्थक प्रयोग की जानकारी होना भी आवश्यक है।

इस बात को हम नकार नहीं सकते कि इंटरनेट सुगम ज्ञान का भंडार है, जिसने पूरी दुनिया को एक किलक-एक स्क्रीन की तर्ज पर सर्वसुलभ करा दिया है। डिजिटलीकरण ने शिक्षा के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन किए हैं। वर्चुअल कक्षाओं, वेबिनार, ई-किताबों को आकर्षक व सरल बना दिया है। ऐसे में अब प्रश्न यह उठता है कि इन सबमें अब शिक्षक की भूमिका क्या है और वे किस प्रकार इस बदलते समय में स्वयं को डिजिटल तकनीकों के समक्ष खड़ा रखेंगे।

डिजिटल युग में अब शिक्षकों के उत्तरदायित्व पहले से भी अधिक बढ़ गए हैं क्योंकि शिक्षक का कार्य केवल विषय का ज्ञान देना नहीं है, बल्कि उन्हें सही राह दिखाना भी है। विद्यार्थी को केवल जानकारी नहीं बल्कि यह तय करना सिखाना

आवश्यक है कि ज्ञान और सीख का जीवन में अनुप्रयोग किस प्रकार किया जाए। इंटरनेट पर प्राप्त होने वाली जानकारी सही और विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हो ये आवश्यक नहीं है। इसीलिए शिक्षक का कर्तव्य है कि डिजिटल माध्यमों से परोसने वाले विषय की जाँच करें साथ ही विद्यार्थी में स्वनिर्देशन व समझ की दक्षता विकसित करें।

डिजिटल युग में अब वही शिक्षक सार्थक है जो इस तकनीकी युग को अपनाकर उसके साथ कदम से कदम मिलाकर चलें। उसे सृजनात्मक रूप से शिक्षा में प्रयोग करें और विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, सहयोग, नैतिक मूल्य, संवाद कौशल और डिजिटल साक्षरता का विकास करें। शिक्षक शिक्षा की आत्मा है। तकनीक भाग साधन है, लेकिन शिक्षक साधक है। इसीलिए डिजिटल युग में शिक्षक की भूमिका कम नहीं हुई है, बल्कि पहले से अधिक महत्वपूर्ण, सशक्त व प्रभावी हो गई है।



पिपलौदा के संस्मरण

सुश्री स्वर्णप्रीत कौर, ई.सी.सी.ई. शिक्षक



25 जुलाई 1988 को मेरे जीवन को एक खुशी का अवसर आया जिसमें मैं जबलपुर से दूर मंडला जिले के चिखलती टोला गांव में ई.सी.ई. शिक्षिका बनकर नह्ने-मुने बच्चों में अपनापन पाने के लिये पहुंच गई लगभग 5 वर्षों तक उनके बीच रहकर खट्टे मीठे अनुभव प्राप्त हुए।

अचानक 10 जुलाई 1993 की शाम मुझे पता चला कि मुझे इन नह्ने मुने बच्चों को छोड़कर रतलाम जिले के पिपलौदा डाइट में जाकर अपनी सेवाएँ देना है। मैं बहुत घबराई हुई अपनी माँ के साथ 12 जुलाई 1993 को पिपलौदा पहुंची। शाम का समय था दूर-दूर तक कोई नजर नहीं आ रहा था। अब क्या करेंगे यह सोचकर मैं रोने लगी। तभी मेरी माँ ने मेरा हाथ पकड़ कर कहा जब इतनी मुश्किलों का सामना करके यहां तक पहुंच गये हैं तो कोई रास्ता नजर जरूर आयेगा। अभी माँ की बात पूरी नहीं हुई थी कि एक व्यक्ति ने आकर कहा आप डाइट पिपलौदा में ज्वाइन करने आई है मैंने कहा हां तभी उसने कहा यहां से मेरे क्वार्टर में चलो क्योंकि पिपलौदा में साँपों और मोरों का साम्राज्य है। मैं और घबरा गई और हम उनके साथ उनके क्वार्टर में चले गए किसी तरह रात बिताने के बाद सुबह 13 जुलाई को अपनी ज्वाइनिंग दी। डाइट का पूरा स्टॉफ अपने अनुभव बताने और मेरे बारे में जानने के लिए उत्सुक था। बातों बातों में पता चलो कि यहां बहुत संभलकर रहना पड़ेगा। डाइट के रास्ते घर का आंगन सभी जगह कभी भी, कहीं भी सांप के दर्शन हो जाते हैं।

समय बीतता गया, कई बार मुझे साँपों के दर्शन हुए। 7 मई 1994 को मैं सैलाना से आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं

के प्रशिक्षण को संपन्न कराकर करीब शाम 5 बजे बस से उत्तरकर जैसे ही मैं अपने क्वाटर की ओर बढ़ी अचानक मेरे पैर पर सांप ने डसा, क्योंकि मैंने जूते पहने थे तो मेरी जान बच गई। अथवा परिश्रम और संघर्ष के बाद मेरा स्थानांतरण अक्टूबर 1994 को सीधी डाइट के लिये हुआ। लगभग 38 वर्षों की शास्कीय सेवा में आज भी पिपलौदा डाइट के उन भयानक डरावने अनुभवों को याद करके मन सिहर जाता है। परंतु फिर विचार आता है कि शास्कीय सेवक होता है जो विषम से विषम परिस्थितियों में भी सेवाएँ देता है। और मैं गर्व से भर जाती हूँ।



मेरी बेटी

सुश्री स्वर्णप्रीत कौर

मेरी बेटी बड़ी हठीली।
बेटी छैल छबीली है ॥।
नाजुक सा दिल है उसका ।
बेटी रंग रंगीली है ॥।
छुपना छुपाना उसका ।
मंद मंद मुस्काना उसका ॥।
अचानक घबरा जाना उसका ।
आंखे बंद कर लेना उसका ॥।
वो एक दिया बाती है ।
जिससे जिंदगी जगमगाती है ॥।
मन को चैन आ जाता है ।
जब बेटी गले लग जाती है ॥।

वर्तमान भारत और योग की भूमिका

श्रीमती नीतू जैन, माध्य. शिक्षक



योगःचित्त वृत्ति निरोधः:

पतंजलि योग सूत्र का एक महत्वपूर्ण सूत्र है। जिसका अर्थ चित्त (मन) की वृत्तियों (उतार-चढ़ावों, विचलन) का निरोध (रोकना, शांत करना) ही योग है।

शरीर माद्यं खलु धर्म साधनम्

शरीर ही धर्म का प्रथम साधन यह बात बिल्कुल सत्य है। शरीर को स्वस्थ्य बनाएँ रखना, मन की चंचलता पर रोक एवं प्राण ऊर्जा के उधर्वारोहण में योग अत्यंत उपयोगी है।

योगेश्वर कृष्ण ने भगवद्गीता में अर्जुन से कहा था कि योग से मन को वश में करके इसे स्थिर आज्ञाकारी बनाया जा सकता है।

योग कर्मसुकौशलम्— कर्म में कुशलता या परिपूर्णता ही योग है। योग में सचेतन श्वास और सचेतन गति पर जोर, जागरूकता उपस्थिति की गहरी भावना को विकसित करता है। नियमित अभ्यास मन को शांत करने, चिंता कम करने और संज्ञानात्मक कार्य को करने में मदद करता है। जैसे जैसे मन अधिक केंद्रित और एकाग्र हो जाता है, व्यक्ति जीवन की चुनौतियों का अधिक लचीलेपन और स्पष्टता के साथ सामना कर पाता है। मन, वचन, काया तीनों पर आधारित यह वैज्ञानिक उपाय है जिसमें असीम शांति की प्राप्ति होती है।

हमारे ऋषि, मुनियों आचार्यों एवं योगाचार्यों ने योग के आठ भेद बताये हैं। जिसे अष्टांग योग कहते हैं।

1. यम : यम का तात्पर्य किसी नियम का संकल्पपूर्वक पालन करना। बुराइयों का त्याग करना। यम के माध्यम से (साधना) व्यक्ति पाँच समाजिक नैतिक नियम अहिंसा, सत्य अस्तेय, ब्रह्माचर्य एवं अपरिग्रह का पालन कर व्यक्ति अपने 93 प्रतिशत मस्तिष्क में पड़े सुप्त कोशों का ही उपयोग कर पाता है।

2 नियम : पाँच व्यक्तिगत नियम शौच (शुद्धि, शरीर, मन) अर्थात् शुद्धि, संतोष अर्थात् जो प्राप्त है वही पर्याप्त है। तप कष्टों को सहना, स्वअनुशासन में रहना स्वाध्याय करना एवं ईश्वर प्राणिधान।



3 - आसन : 84 आसनों के माध्यम से पुराने से पुराने रोग ठीक किये जा सकते हैं।

4 - प्राणायाम : अपनी सांसों को नियमित करने की क्रिया ही प्राणायाम है। इससे आत्म साक्षात्कार संभव होता है।

5 - धारणा : अर्थात् एक ही लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करना मन की गति प्रकाश की गति से (एक कण एक सेकेंड में 186000 मील) से भी तेज है। जिसे आज तक कोई नहीं माप सका। धारणा में मन की चंचलता को रोकने संबंधी अवधान होते हैं।

6 - प्रत्याहार : बाह्य विषयों से मन को हटाने के लिये शुद्ध आहार ग्रहण करना।

7 - ध्यान: ध्यान जिसपर केन्द्रित है उसका चिंतन करना। यह धारणा का परिष्कृत रूप है। इसमें चेष्टाएं समाप्त प्राय हो जाती हैं ध्यान के द्वारा दूरश्रवण, दूरदर्शन भविष्य ज्ञान आदि सिद्ध होते हैं।

8 - समाधि : समाधि से तात्पर्य आत्मानुभव अर्थात् ध्यान को चेतन्य में विलय करना। इससे अतीन्द्रिय आनंद की अनुभूति होती है सारे अंतः और बाह्य के विकल्प पूर्णतया नष्ट हो जाते हैं तब समाधि नामक योग साधना प्रगट होती है।
शिव प्रथम योगी— योग विद्या में शिव को प्रथम योगी, आदि गुरु के रूप में माना जाता है। आदि गुरु ने सप्तऋषियों के माध्यम से विश्व के कोने कोने तक इस विज्ञान को पहुँचाया। यह हमारे संस्कारों की विरासत, अमूल्य अध्यात्मिक वैज्ञानिक निधि है। आज वर्तमान समय में हम इसे भूलकर



केवल प्रतिस्पर्धा में लगे हुये हैं। और तीव्र गति से अपने लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहते हैं। होड़ की इस दौड़ में जब हम असफल होते हैं तो स्वयं की हानि कर लेते हैं।

हमें योग को अंगीकार करते हुए जीवन जीने की अद्भुत कला को सीखना होगा। जब योग साधना से हमारे ऋषि मुनि योगी मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं तो निश्चित ही हम भी जीवन के अमूल्य लक्ष्यों को सहजता के साथ प्राप्त कर सकते हैं।

वर्तमान युग चुनौतियों से भरा हूआ है। अर्थात कुत्रिम बुद्धिमता टेक्नोलॉजी युग में योग हमारे लिये एक मार्गदर्शक, हमेशा हमारा सभी प्रकार से ध्यान रखने वाले अभिन्न मित्र है, जो हमारी अनंत जिज्ञासाओं को सहज ही शांत कर देता है। कम्प्यूटर से भी तेज हमारी मानसिक,

वाचिक और कायिक क्षमताओं को प्रगट करता है। यह स्वयं से स्वयं को और स्वयं को विश्व के ब्रह्मांड के अनंत कणों से जोड़ता हुआ हमें सकारात्मकता के रास्तों पर ले जाता है। जीवन एवं जीवन से परे आयामों से जोड़ता है। और हमारी स्वयं की सत्ता स्थापित करता है।

इसलिए हमें स्वयं से स्वयं की ओर लौटना है। भारत को भारत के अमूल्य ज्ञान की ओर लौटना है। हमारा कर्तव्य है कि हमें जो वरदान के रूप में प्राप्त हुआ है उसे ग्रहण कर आत्मसात करें, अपने अंदर सोई हुई अनंत शक्तियों को उद्घाटित करें। इस रीढ़ को और मजबूत बनायें भारत का मान बढ़ायें भारत विश्वगुरु है सदा रहेगा इसमें अपना भी एक कदम बढ़ायें और ऑलराउण्डर बन जायें, सभी कर्तव्यों को दूढ़ता से निभायें, भारतमाता के सच्चे सपूत कहलायें।



शिक्षाप्रद दोहे

डॉ समीहा तिवारी, ड.मा.शि.

1. आलस कभी न कीजिये, आलस से हो नाश।
विद्या धन और कीर्ति, कभी न फटके पास।।
2. खाना हो या बोलना, जीभ लगाओ लगाम।
वर्ना पेट हो या रिश्ते, सदा करें नुकसान।।
3. मन की सदा न मानिये, सोचें बुरा और कभी भला।
निर्णय करती बुद्धि सही, बुद्धि का उपयोग कला।।
4. माता पिता से बड़ा ना कोई, हम सबके भगवान।
इनकी छाया मैं सुख सारे, छोटे दीन या बड़े महान।।

5. सत्य सदा ही बोलिये, चाहे सुख हो चाहे दुख।
मानव की पहचान सच्चाई, इससे कभी न मोड़े मुख।।
6. असफलता में छुपी सफलता, असफलता से डरें नहीं हम।
ठोकर लगती ताकि संभलें, ठोकर से न कभी गिरें हम।।
7. घर से बड़ा समाज हमारा, उससे बड़ा राष्ट्र प्यारा।
आओ मिलके विश्वगुरु बनाएँ, महिमा गाए जग सारा।।
8. मेहनत बुद्धि सूझबूझ और, तत्परता से बनें सफल।
सीधी नजर लक्ष्य पर होवे, आज का काम न करना कल।।
9. कष्टों से और दुष्टों से, जीवन में न डरे कभी।
करें सामना हार न माने, सहज पायेंगे जीत तभी।।
10. दोस्त साथ तो हिम्मत बढ़ती, दोस्त से सुख है दोस्त सहारा।
बाकि मिलते काम स्वार्थ से, दोस्त सहायक दोस्त है न्यारा।।



राष्ट्रीय ध्वज ‘‘तिरंगा’’

डॉ. शशि सराफ, प्राथमिक प्रभारी

भारत की शान तिरंगा

भारत की जान तिरंगा

भारत की पहचान तिरंगा

भारतीय राष्ट्रीय ध्वज

“तिरंगा” हमारी स्वतंत्रता, आत्म सम्मान और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। यह केवल एक झंडा नहीं बल्कि उन असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग साहस और संघर्ष की याद दिलाता है जिन्होंने देश के गौरव के लिये अपने प्राण न्योछावर कर दिए।

भारतीय झंडे को वर्तमान स्वरूप में 22 जुलाई सन् 1947 को स्वतंत्रता के कुछ दिन पूर्व आयोजित भारतीय संविधान सभा की बैठक में अपनाया गया।

तिरंगे झंडे में समय-समय पर कई बदलाव किये गये। पहला ध्वज सन् 1904 में स्वामी विवेकानन्द की शिष्या भगिनी निवेदिता द्वारा बनाया गया था जो 7 अगस्त 1906 को पारसी बागान चौक कलकत्ता में कांग्रेस अधिवेशन में फहराया गया। इस ध्वज को लाल, पीले, हरे रंग की क्षेत्रिय पट्टियों से बनाया गया था। ऊपर की ओर हरी पट्टी में आठ कमल के फूल और नीचे की लाल पट्टी में सूरज चांद बनाए गये थे। बीच की पीली पट्टी में वंदे मातरम् लिखा गया था।

1907 में मैडम भीखा जी कामा ने विदेश में बर्लिन के स्टटगर्ड में तिरंगा फहराया जिस पर वंदे मातरम् लिखा था। यह झंडा ब्रिटिश शासन के खिलाफ आवाज बना।

डिजाइन:- आंध्रप्रदेश के पिंगली वैंकया ने ध्वज डिजाइन किया जिसे सन् 1921 में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के अधिवेशन में प्रस्तुत किया गया। जिसमें दो रंग थे लाल और हरा। परन्तु सन् 1931 में कुछ बदलावों के साथ इस ध्वज को भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप अपनाने के लिये एक प्रस्ताव पारित किया और इसे राष्ट्र ध्वज के रूप में मान्यता मिली। तिरंगे के तीन रंगों को मूल्यों से जोड़ा गया। बीच में राष्ट्र की प्रगति का संकेत देने के लिये चरखा बनाया गया।

स्वतंत्रता से 23 दिन पहले 22 जुलाई सन् 1947 को संविधान सभा ने वर्तमान ध्वज को राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया। केवल ध्वज में चलते हुये चरखे के स्थान पर चक्र को अंकित किया गया। यह धर्म चक्र सम्राट अशोक के सारनाथ स्तंभ से लिया गया। इसमें 24 तीलियाँ हैं, जो धर्म, न्याय और निरंतर प्रगति का प्रतीक है। इस तिरंगे झंडे का अनुपात 3:2 रखा गया गया। पहली बार 15 अगस्त सन् 1947 को लाल किले पर यह झंडा फहराया गया।

कपड़ा:- सन् 1968 में (बी.एस.आई.) भारतीय मानक ब्यूरो ने राष्ट्रध्वज को तैयार करने के लिये तीन दस्तावेज तैयार किए इसमें कहा गया कि सभी झंडे खादी, सिल्क या काटन के होंगे। कर्नाटक के हुगली जिले के खादी ग्रामोद्योग केन्द्र में कपड़े को काता और बुना जाता है। इसके तीन अलग अलग लॉट बनाये जाते हैं, इनको तीन अलग-अलग रंगों में डाई किया जाता है। फिर तीन साइजों में काटा जाता है, कटे हुये सफेद कपड़े पर चक्र प्रिंट किया जाता है। इसके बाद तिरंगे के तीनों रंग के कपड़े की सिलाई की जाती है विशेष ध्यान इस बात पर दिया जाता है कि चक्र अच्छी तरह मिलता हो और दोनों तरफ ठीक से दिखाई देता हो। भारतीय मानक ब्यूरो ठीक से इसकी जांच करता है। तभी वह बेचा जाता है। तिरंगे का सम्मान करना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है।

अनुभव ही आपका सर्वोत्तम

शिक्षक है, जब तक जीवन है,

सीखते रहो।

- रवीम विवेकानंद



लक्ष्य निर्धारण

डॉ. शशि सराफ, प्राथमिक प्रभारी



कभी – कभी जीवन में कुछ घटनायें स्मृति पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं। ऐसी ही एक घटना मेरे विद्यार्थी जीवन में भी घटित हुई।

बात उन दिनों की है जब मुझे पढ़ने का जुनून सवार था। मेरी प्राथमिक शिक्षा ग्रामीण क्षेत्र की शासकीय शालाओं में हुई। मैंने कक्षा ग्यारहवीं तक नियमित अध्ययन किया। उच्च शिक्षा की पढ़ाई हेतु मुझे गांव से बाहर जाना पड़ता, परन्तु गांव की बंदिशें होने के कारण मुझे बाहर जाकर पढ़ाई करने की अनुमति नहीं थी। अतः मैंने आगे की शिक्षा स्वाध्यायी छात्र के रूप में प्राप्त की (एम.ए., बी.एड, एम.एड. तक)। परन्तु मुझे पी.एच.डी. करना थी इसके लिये मैं लगातार प्रयास कर रही थी। मैंने कई बार रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जाकर वहां के प्राध्यापकों से बात की परन्तु उन्होंने मुझे यह कह कर मना कर दिया कि मैंने स्वाध्यायी छात्र के रूप में पढ़ाई की है। पी.एच.डी. करना मेरे बस की बात नहीं है। उनकी इस बात से मेरे मन में और भी अधिक दृढ़ता आ गई कि मुझे अब अपने लक्ष्य हेतु हर सम्भव प्रयास करना है।

अन्ततः: विश्वविद्यालय के नापित सर (इतिहास विभाग) ने मुझे एक प्राध्यापक का नंबर दिया मैंने उनसे बात की ओर वो मुझे पी.एच.डी. करवाने के लिये तैयार हो गई। मैंने अपना रजिस्ट्रेशन करवाया। उन्होंने मुझे “प्राचीन शिक्षा पद्धति और वर्तमान शिक्षा पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन” टॉपिक दिया। जब इस टॉपिक पर संक्षेपिका तैयार कर मैं आर.डी.सी. के वायवा में उपस्थित हुई, वहां कमेटी के सदस्य कुलपति, विभागाध्यक्ष एवं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से आई मैडम शर्मा और वरिष्ठ प्राध्यापकों ने मेरे उक्त विषय को यह कहकर मना कर दिया कि इस पर तो बहुत काम हो चुका है। अतः इस विषय को हम अनुमोदित नहीं करेंगे।

परन्तु मैं निश्चय कर चुकी थी कि चाहिए जितनी भी विषय परिस्थिति आ जाए मुझे तो पी.एच.डी. करना ही है। मैंने रिसर्च कमेटी के समक्ष विनप्रता पूर्वक अपना कथन प्रस्तुत किया कि आप ही मुझे रिसर्च का विषय दें ताकि मैं अपने लक्ष्य को पूर्ण कर सकूँ। कमेटी के सभी सदस्यों ने विचार विमर्श के उपरन्त मुझे टॉपिक दिया जिस पर न तो कोई शोध प्रबन्ध लिखा गया और न ही ज्यादा शोध सामग्री उपलब्ध थी।

टॉपिक था “सागर नर्मदा प्रान्त की जनजातियों का सामाजिक एवं आर्थिक अध्ययन सन् 1820 से 1861 तक” (इतिहास विभाग) मैंने सहर्ष ही उक्त विषय को स्वीकार कर लिया। शोध करने हेतु मुझे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

मेरा शोध अध्ययन पारिवारिक जिम्मेदारियाँ जिनमें मेरे तीनों बच्चों का पालन पोषण शिक्षा आदि के साथ-साथ ही चला, इन्हीं कारणों से मेरा शैक्षणिक कार्य प्रभावित रहा और वो कहते हैं न कि पढ़ने की कोई उम्र नहीं होती बस उसी बात को चरितार्थ करते हुए मैंने सन् 2014 में अपना शोध प्रबन्ध पूर्ण किया।

अतः कहा जा सकता है कि अपने अध्ययन काल में ही अपने लक्ष्य का निर्धारण कर लेना चाहिए और उसे पूर्ण समर्पण भाव से पूर्ण करना चाहिए। सफलता अवश्य मिलेगी चाहे कैसी भी परिस्थितियाँ आ जाएं।

“दृष्टि साथे लक्ष्य को, मछली की जो आंख / भटके मन जो और में, सफल न होवे तात”



बालाङ्गण



बच्चे मन के सच्चे

श्रीमती रिश्मि श्रीवास्तव
प्राथमिक शिक्षिका

बच्चे होते हैं सदा ही अच्छे।
रहते हैं ये मन के सच्चे ॥
कहते हैं, उनको भगवान का रूप।
रचा ऐसा ईश्वर ने उनका स्वरूप ॥
आपस में लड़ते-झगड़ते, रुठते-मनाते।
करते हैं मीठी, ढेर सारी प्यारी बातें ॥
उनकी मुस्कान रहती हैं सदा ही निश्छल ।
कर देते हैं अपनी बातों से घायल ॥
मोह लेती हैं, उनकी प्यारी बोली ।
बना लेती है सबको अपना हमजोली ॥



शिक्षा का महत्व



श्रीमती संगीता श्रीवास्तव
सहायक शिक्षिका
शा. पू. प्राथ. प्रशि. संस्थान
जबलपुर

शिक्षा दुनिया का सर्वशक्तिमान शस्त्र व ढाल है।
किसी के बुझाये कभी न बुझे ऐसी मशाल है ॥
ये अंधेरों से भरी दुनिया में उजियारा करती है ।
समस्त संसार के घर-घर में चिराग रोशन करती है ।
यह छात्र-छात्रा को मानसिक, चारित्रिक बल प्रदान करती है ।
यह मां बनकर उसके दोषों को, गुणों में परिवर्तित करती है ॥
शिक्षा समस्त मानव जाति के विकास का आधार है।
यह न केवल घटक अपितु जीवन का उपसंहार है ॥
जो इसमें डूब गया, वही होता भवसागर पार है।
शिक्षा के बिना मानव जाति का अस्तित्व ही बेकार है ॥
उठो जागो एवं अपने जीवन के अंतिम क्षण तक इसके लिए
प्रयत्नशील रहो ॥
क्योंकि यही तुम्हारी उन्नति का आधार है ॥



मरती वाले बच्चे

श्रीमती किरण महोबिया
सहायक शिक्षक

कूदते-फांदते आते सब
जैसे हो बादल छाएँ।
दौड़ लगाकर खेल शुरू,
टीचर भी मुस्काएँ।
टिफिन खोलें धम से सब
खुशबू उड़ती जाएँ।
हँसते-खिलखिलाते बच्चे,
क्लास में उधम मचाएँ।

मॉन्टेसरी का बैण्ड दल

धम-धम बच्चे ढोल बजाएँ,
पौँ - पौँ करके बिगुल बजायें।
छन-छन थाल सब बजती जाएँ,
युग सीटी लेकर पी-पी सुनाएँ।
विरच्चात ताली ठोक, चलते जाएँ,
सबको ताल मिलाना सिखलाएँ।
सब बच्चे हँसते गीत सुनाएँ,
मॉन्टेसरी में धूम मचाएँ।

बालाङ्ग



बाज से प्रेरणा



श्रीमती कुसुम पासी, सहायक शिक्षक

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि बाज़ सभी पक्षियों का राजा होता है। जिसकी उम्र लगभग 70 वर्ष की होती है, लेकिन बाज के जीवन में एक ऐसा समय आता है जब उसका जीवन दांव पर लगा होता है! जब बाज 40 साल का हो जाता है तब उसके पंख काम करने बंद कर देते हैं। जिससे वह उड़ नहीं पाता उसके नाखून कमजोर पड़ जाते हैं, जिससे वह शिकार को पकड़ भी नहीं पाता और उसकी चोंच भी कमजोर पड़ जाती है। वो शिकार को मुँह में भी नहीं दबा पाता।

वह वक्त बाज़ के जीवन का सबसे बुरा वक्त होता है, बाज के पास दो रास्ते होते हैं। पहला कि बाज अपने को बूढ़ा घोषित कर दे और अपने मरने का इंतजार करें। दूसरा रास्ता, ये कि वह अपने पंख, चोंच और नाखून को तोड़ दे ताकि कुदरत उसे दोबारा नए पंख, चोंच और नाखून दे सके। आपको जानकर हैरानी होगी बाज दूसरे रास्ते को चुनता है। बाज अपनी चोंच और नाखून को पत्थर से मार-मार कर तोड़ देता है और जब कुदरत उसे दोबारा नई चोंच और नाखून देती है तो वह अपने नाखूनों से अपने दोनों पंखों को तोड़ देता है ताकि उसे नये पंख मिल सकें।

छह महीने दर्द सहने के बाद प्रकृति उसे नये पंख चोंच और नाखून देती है जिससे वह अब बचे हुए 30 साल फिर से नया जीवन शुरू करता है। इन 6 महीनों में बाज को बेहद तकलीफ होती है उसके शरीर से खून आने लगता है लेकिन वह हिम्मत नहीं हारता। क्योंकि वह जानता है कि 6 महीने का दर्द आने वाले 30 साल तक उसकी ताकत बन कर उसके साथ रहेगा।

बाज के जीवन से हमें दो सीख मिलती है – पहली सीख – यदि जीवन में खराब समय आ गया है सब कुछ बरबाद हो चुका है तो उसके लिए रोने का कोई अर्थ नहीं है। अपनी खराब स्थिति को स्वीकार कीजिए और पूरी जान लगा कर कोई दूसरी शुरूआत कीजिए। दूसरी सीख – एक बार यदि आप अपने काम में कुछ वर्ष मेहनत करके दर्द सह लोगे तो आने वाले समय में वही दर्द आपकी सबसे बड़ी ताकत बनेगा।



**स्वस्थ युवा-सशक्त राष्ट्र ।
शालीन युवा - श्रेष्ठ राष्ट्र ।
स्वावलंबी युवा - संपन्न राष्ट्र ।
सेवाभावी युवा सुखी राष्ट्र ।**

**निज भाषा उन्नति और
सब उन्नति को मूल
- मारतेदु हरिशंद्र**



मानव धर्म



श्रीमती शीबा खान, सहायक शिक्षक

मानव धर्म वह व्यवहार है

जो मानव जगत में परस्पर प्रेम, सहानुभूति, एक दूसरे का सम्मान करना आदि सिखाकर हमें श्रेष्ठ आदर्शों की ओर ले जाता है। मानव

धर्म का वास्तविक स्वरूप केवल बाहरी आडंबरों में नहीं, आचरण, विचार और व्यवहार में प्रकट होता है। यद्यपि मनुष्य के लिए मानव धर्म सरल और स्वाभाविक धर्म है, फिर भी उस पर जानबूझकर अन्य कृत्रिम आस्थाओं को थोपने के परिणामस्वरूप मानव अपने स्वयं के विकसित सरल और स्वाभाविक धर्म से भटक रहा है।

वास्तव में यदि हम प्रत्येक धर्म की मुख्य बातों को ध्यान दें तो हम पाते हैं कि वह मानवता के मुख्य मूलभूत सिद्धांतों का ही अनुसरण करती है। जैसा कि -

- एक ईश्वर की सत्ता में विश्वास करना ।
- सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलना ।
- बुरे कार्यों से दूर रहना तथा ईमानदारी पूर्वक आजीविका अर्जित करना ।
- गरीब और असहाय की सहायता करना ।
- कोई बाह्य आडम्बर न करना ।

विशेष रूप से एक शिक्षक होने के नाते हमारा दायित्व और बढ़ जाता है। हमारे हाथ में बच्चों का भविष्य है। हम अपने कार्यकाल में कम से कम दो पीढ़ियों को तैयार

कर रहे हैं। अब हमारे हाथ में है कि हम इनमें ऐसे संस्कार विकसित कर दें जो इन्हें मानव धर्म की मूलभूत सिद्धांतों का पालन करने के लिए प्रेरित करें। जब हम बच्चों को शिक्षा दे रहे होते हैं तो हमें ऐसा लगता है कि उनके मन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। हमारे बार-बार बोलने पर भी वह हमारी बातों का अनुसरण नहीं कर रहे हैं। मुझे इस संबंध में एक दोहा याद आता है - “रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान” इसका अर्थ है कि बार-बार रस्सी के आने-जाने से पत्थर (सिल) पर निशान पड़ जाते हैं। इसी प्रकार मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि बच्चों के मस्तिष्क पर भी आपकी बातों के बार-बार बोलने से असर पड़ता है। वह वर्तमान में दिखाई दे या नहीं दे, भविष्य में उसके लक्षण अवश्य नजर आते हैं।

आवश्यकता है मन के नकारात्मक विचारों पर ध्यान न देते हुए सकारात्मक रूप से सतत प्रयास करने की। उन्हें हिंसा, द्वेष, छल, कपट, असत्य, अन्याय से परे रहने की शिक्षा दें। उन्हें सिखाएं कि मन, वाणी और कर्म से किसी को दुखी न करें तथा अन्याय के विरोध में खड़े रहें।

वास्तविकता यह है कि हम सभी धर्मों की मूलभूत बातों को अपनाते हुए उनका अनुसरण करें एवं मानव धर्म को अपना लें और बिना कुछ की आशा किये बस दूसरों के लिए कुछ करें तो हमें आत्मसंतुष्टि के साथ-साथ आत्मिक प्रसन्नता भी मिलेगी। इसके लिए आवश्यकता है तो बस अपनी तरफ से एक क़दम बढ़ाने की !

Genius is 1% talent...
and 99% hard
work.

Albert Einstein

अगर तुम सूरज की तरह चमकना
चाहते हो तो पहले सूरज की तरह
जलना सीखो।

Abdul Kalam



पूर्व प्राथमिक कक्षाओं में भाषा कौशल का विकास



श्रीमती रश्मि दवे
सहा. शिक्षक

नन्हा शिशु माँ की गोद से ही भाषा सुनना, समझना व दोहराना शुरू कर देता है। अर्थात् नन्हे बच्चों के लिए भाषा विकास माँ की गोद से ही आरंभ हो जाता है। 3 से 6 वर्ष की आयु बच्चों के संपूर्ण विकास का महत्वपूर्ण चरण होता है। इस आयु में बालक तेजी से भाषा सीखता है। इस आयु में बालक आवश्यक बातें सुनकर समझकर बोलने लगता है। शब्दावली बढ़ती है, बातचीत की क्षमता का विकास होता है। यह उम्र भाषा विकास की स्वर्णिम अवधि मानी जाती है।

भाषा कौशल उन क्षमताओं का समूह है, जिनमें बच्चा शब्दों को समझता है, स्वयं बोलकर अभिव्यक्त करता है। 3 से 6 वर्ष की आयु में बालक में शब्द भंडार में वृद्धि होने लगती है। बच्चे छोटे-छोटे वाक्य स्पष्ट रूप से बोलना प्रारंभ कर देते हैं। उच्चारण में भी सुधार आने लगता है।

भाषा विकास में शिक्षक व माता-पिता की भूमिका:-

1. बच्चों से सामान्य दैनिक जीवन की बातें करें। रोजमर्रा की बातें सामान्य वार्तालाप में शामिल करें, जैसे शाला आते समय रास्ते में क्या-क्या देखा? साथियों से सहज वातावरण में चर्चा करने का मौका देना।
2. रंगीन चित्रकथा पढ़कर सुनाना, चित्र दिखाकर चित्र पर चर्चा करना। देखी हुई घटना पर चर्चा भाषा की समझ को बढ़ाता है।
3. हाव-भाव के साथ कहानी सुनाना, कहानी सुनाते

समय प्रश्न पूछना जैसे कि शेर ने क्या किया? पतंग कैसे रंग की थी? आदि। प्रश्न पूछना, कहानी को नाटक के रूप में प्रस्तुत करना।

4. गीत, कविता, अभिनय गीत, बड़बड़ गीत आदि लयबद्ध गतिविधियां कराकर बच्चों की ध्वनि पहचान, शब्दावली बढ़ाना।
5. खेलों के माध्यम से रंगों के नाम, गिनती आकार आदि सिखाना।
6. दुकान-दुकान, डॉक्टर-डॉक्टर, टीचर-टीचर जैसे खेल भाषा विकास का प्रभावी तरीका है।
7. अधिक स्क्रीन टाइप भाषा विकास को धीमा करते हैं।

भाषा विशेषज्ञ की सलाह:-

यदि 3 से 6 वर्ष का बालक कम या अस्पष्ट बोलता है, सरल निर्देश नहीं समझ पाता, शब्द जोड़कर वाक्य नहीं बोल पाता, बातचीत में शामिल नहीं होता, सुनने या उच्चारण संबंधी कठिनाई है तो भाषा विशेषज्ञ से सलाह लेनी चाहिए।

निष्कर्ष :-

3 से 6 वर्ष की आयु भाषा विकास का सबसे महत्वपूर्ण चरण है। इस दौरान बच्चे अपने पूरे जीवन की संचार क्षमता की नींव रखते हैं। यदि शिक्षक माता-पिता और वातावरण सही अवसर दें जैसे बातचीत, खेल, पढ़ना, सकारात्मक संवाद तो बच्चा तेजी से आत्मविश्वास के साथ भाषा सीखता है।

बालाकृष्ण



खेलों से लाभ



विनोद पोददार
कार्यालय सहायक

खेल स्वास्थ्य के लिए क्यों आवश्यक हैं?

आज के समय में मनुष्य की जीवनशैली बहुत बदल गई है। लोग ज्यादातर समय मोबाइल, कंप्यूटर और टीवी के सामने बैठे रहते हैं। इससे शरीर में आलस्य, मोटापा और कई बीमारियाँ बढ़ रही हैं। ऐसे समय में खेल और शारीरिक गतिविधियाँ हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत ज़रूरी हो गई हैं। खेल न केवल शरीर को स्वस्थ रखते हैं, बल्कि मन और व्यक्तित्व को भी मजबूत बनाते हैं।

1. शारीरिक स्वास्थ्य के लिए लाभ

खेलने से शरीर की मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं और हड्डियाँ ताकतवर बनती हैं। दौड़ना, कूदना, क्रिकेट, फुटबॉल, कबड्डी खो-खो जैसे खेल शरीर को पूरी तरह सक्रिय रखते हैं। इससे रक्त संचार अच्छा होता है, फेफड़े और दिल मजबूत होते हैं, और शरीर में फुर्ती बनी रहती है। जो लोग नियमित खेलते हैं, वे जल्दी थकते नहीं और उनका शरीर ज्यादा फिट रहता है।

2. बीमारियों से बचाव

नियमित रूप से खेल खेलने से मोटापा, डायबिटीज, ब्लड प्रेशर और दिल की बीमारियाँ होने का खतरा कम हो जाता है। खेल शरीर की इम्यूनिटी (रोग प्रतिरोधक क्षमता) बढ़ाते हैं, जिससे हम छोटी-बड़ी बीमारियों से आसानी से लड़ पाते हैं। यानी खेल हमें स्वस्थ रहने में मदद करते हैं।

3. मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभ

खेल सिर्फ शरीर के लिए ही नहीं, बल्कि दिमाग के लिए भी बहुत फायदेमंद होते हैं। खेलने से तनाव, चिंता और थकान कम होती है। जब हम खेलते हैं तो मन खुश रहता है और दिमाग तरोताज़ा महसूस करता है। इससे पढ़ाई और काम में ध्यान लगाने की क्षमता भी बढ़ती है।

4. अनुशासन और अच्छे गुणों का विकास

खेल हमें अनुशासन, समय की पाबंदी, मेहनत और

नियमों का पालन करना सिखाते हैं। टीम गेम्स से हमें टीमवर्क, सहयोग और एक-दूसरे की मदद करना सीखने को मिलता है। जीत-हार को स्वीकार करना भी खेल हमें सिखाते हैं, जिससे हमारा चरित्र मजबूत बनता है।

5. आत्मविश्वास और व्यक्तित्व विकास

खेलने से व्यक्ति में आत्मविश्वास बढ़ता है। जब हम अच्छा प्रदर्शन करते हैं या किसी कठिन स्थिति का सामना करते हैं, तो हमें खुद पर भरोसा होने लगता है। इससे हमारा व्यक्तित्व निखरता है और हम जीवन की चुनौतियों का सामना बेहतर तरीके से कर पाते हैं।

6. ऊर्जा और सक्रिय जीवन

जो लोग रोज़ खेलते हैं या व्यायाम करते हैं, वे ज्यादा ऊर्जावान, चुस्त और फुर्तीले रहते हैं। वे पूरे दिन खुद को एकिट्व महसूस करते हैं और उनका जीवन ज्यादा स्वस्थ और खुशहाल होता है।

निष्कर्ष

खेल स्वास्थ्य के लिए बहुत आवश्यक हैं क्योंकि वे हमारे शरीर, मन और चरित्र तीनों को मजबूत बनाते हैं। स्वस्थ जीवन जीने के लिए हमें रोज़ थोड़ा समय खेल या व्यायाम के लिए जरूर निकालना चाहिए। सच में कहा जाए तो “स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन” रहता है।

आदमी, पैसा और चीजों की बढ़ौलत ही सिर्फ जीत या आजादी नहीं हासिल की जा सकती है। हमारे अंदर मजबूत इच्छाशक्ति होनी चाहिए जो हमें बहादुरीभरे कारनामे के लिए प्रेरित करेगी।

- नेताजी सुभाषचंद्र बोस



संस्मरण

आशा विश्वकर्मा

मां नर्मदा के तट पर प्रतिदिन शाम को दर्शन के लिये जाना और तट पर एक फूल वाली माँ से शाम को एक दीपक लेना, तट पर प्रज्जवलित करना, मेरी दिनचर्या है।

दिसम्बर की तेज कड़ाके की ठंड, एक दिन मन में विचार आया कि घर पर कुछ पुराने शॉल रखे हैं जो फूल वाली माँ को दिये जा सकते हैं। दूसरे दिन मैं घर से एक दो पुराने शॉल लेकर तट पर गई और फूल वाली माँ को शॉल दे दिये। मन ही मन सोच रही थी कि कभी एक नया शॉल भी इनको दूंगी। इसी सोच के साथ मैंने अपनी स्कूटी स्टार्ट की, घर बापसी के लिये। उसी वक्त एक महिला जो पूरी गीली और रंग से बेहद साँवली, आसमानी रंग की चमकीली साड़ी पहनी थी उसने मुझे रोका -बोली “हमको मेट्रो बस स्टैण्ड तक छोड़ दो” मैंने उसे देखा और सोचा-इतनी तेज ठंड में शाम को 07 बजे अंधेरा भी हो गया और ये पूरी गीली? “उसके पास एक थैली भी थी। पूछने पर उसने बताया थैली में पूरे गीले कपड़े हैं! मैं बोली ठीक है, छोड़ देते हैं। मेट्रो स्टैंड आया तो वो बोली “हम यहां नहीं उतरेंगे-आगे ले चलो- मैं थोड़ी डरी पर क्या करती! वो मेरी गाड़ी में पीछे जो बैठी थी। रास्ते में मैंने उससे पूछा-इतनी तेज ठंड में नहाई क्यों? ठण्डी नहीं लग रही क्या? वो कुछ नहीं बोली। मैं भी सोच में थी कि ये कहाँ उतरेगी? उतरेगी कि नहीं?

जब हम बिग बाजार के पास पहुंचे तो वो एक शॉल



की दुकान के सामने बोली “रोको-हमें अपनी पसंद का शॉल खरीद कर दो-अभी इस दुकान से” और दौड़कर वो दुकान की ओर भागी। मैं गाड़ी खड़ी भी नहीं कर पाई और वो शॉल पसंद करने लगी, मैंने सोचा पैसे तो मेरे पास हैं नहीं नहीं पर गाड़ी की डिक्की में देखा तो इत्तेफाक से पैसे रखे थे।

मैं भी दुकान पहुंची और उससे कहा- कि अपनी पसंद का शॉल खरीद लो दुकान वाले ने भी हमसे आश्चर्य से पूछा कौन है ये? कहां से आपके साथ? मैंने कहा ग्वारीघाट से साथ आई है। दुकान वाला भी उसे देखता रह गया “गीले कपड़े पहनी, बेहद साँवली सी आसमानी रंग की चमकीली साड़ी” उसने शॉल पसंद किया एक बैगनी रंग का, तुरन्त ओढ़ लिया और खुश हो गई। उसकी निश्चल हंसी उसे ये भी नहीं लगा कि इसके पास पैसे हैं कि नहीं, वो तो शॉल ओढ़कर स्कूटी के पास खड़ी हो गई, बोली “चलो” अब तो मैं सच में अन्दर से डर गयी थी लेकिन फिर चल दी। छोटी लाईन के पहुंचने पर वो बोली - हमको यहीं उतार दो। मैं रुक गयी वो उतर गई। मैं उससे पूछने ही जा रही थी कि अब यहां से कहाँ जाओगी? पीछे मुड़कर उसे मैंने बहुत इधर उधर देखा, लेकिन वो नहीं दिखी।

मैं भी वापस अपने घर चल दी। मेरा मन रास्ते भर एक प्रसन्नता और संतुष्टि से भरा हुआ था कि कौन रही होंगी वो? कोई और? या फिर “मां नर्मदा”।

लक्ष्य और काम : “मुझे पता है कि मुझे अपने सपनों को वास्तविकता में बदलने के लिए कितने समय तक काम करने की आवश्यकता है”।

- बंकिम चंद्र चट्टर्जी

नारी शक्ति: “स्त्री ईश्वर की सृष्टि की सर्वोच्च कृति है, देवताओं की परछाई है। पुरुष केवल ईश्वर की रचना है। स्त्री प्रकाश है, पुरुष परछाई है”।

- बंकिम चंद्र चट्टर्जी

ବାଲୋକଣ

संस्थान अतिथियों की नजर से...



आज दिनांक 24/01/2026 के अनुसार दिव्य दे अमरावती पर संचयन
में दोस्रे ते चौथे भेदभाव बतेंगे इन अवसर प्राप्त हुआ। यह संक्षेप
दर्शक युक्ता के तृतीय लेखन नाम लानावर एकल नामिं दिया
गया है। अंतिम दिव्य दे अधिक जुलूसकारी, नियतों लाईड
में भी उपलब्ध आगे गठनात् रो पर्याप्ता के बाहे नि-
र्माण। युक्तावाप्ति।

२५/१/२०२४
सम्पादित दर्शन
संस्कृत संस्कृत
लोक साहस्रधारा प्रसारण
(प्राप्त)

१९८५/१२५ का दिन भी इसके विवरणों के लिए गहरा वार्ता का अनुभव हो गया। इसके बाद उन्होंने अपने विवरणों के लिए अपनी जानकारी का अधिक विस्तृत विवरण दिया।

मुंबई प्रांगण, महाराष्ट्र वानवर्तन विभाग प्रशिक्षण कार्यालय
तेलुगु शिक्षक ४, हॉट एल्को ओ वानवर्तन महाराष्ट्र
द्वारा प्राप्तिप्रद तेलुगु शिक्षकीय प्रशिक्षण, उचिती ओ
प्रशिक्षणात्मक वानवर्तन द्वारा ग्रन्थालय, बंदर विद्या
गृह वानवर्तन वानवर्तन द्वारा ग्रन्थालय, बंदर विद्या
गृह द्वारा NEP 2020 की अनुसारी विधि के अनुसार
वानवर्तन द्वारा दीर्घ दैर्घ्य NEP 2020 के सुनिश्चित
प्रशिक्षण के लिए वानवर्तन द्वारा दीर्घ दैर्घ्य

ପ୍ରାଚୀନ ନାମ
କୁରୁକ୍ଷତିର ନାମ
ଅନେକ ପରିଷକ
ଏହାକୁ

ਮੈਂ ਇਸ ਵਿਚ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤੇ ਗਏ ਹਨ ਅਤੇ ਜਿਥੋਂ ਵਿਚ ਲੋਕ ਵਿਚ ਇਸ ਦੀ ਸ਼ਾਮਲੀ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਚ ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਟੋਕੇ ਵਿਚ ਆਪਣੇ ਸਾਡੇ ਅਤੇ ਸ਼ਾਹੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤੇ ਗਏ ਹਨ।

21/12/2023

ବ୍ୟାକ୍ ପାଇଁ କିମ୍ବା
ଦେଖିଲୁମ୍ବ କିମ୍ବା କିମ୍ବା

श्रीमति नितारंग द्वारा - २०२४
 को
 असराम के बाल उत्तरीय उल्लंघन चैरिटी द्वारा
 लोक जन के कर्मण्यों में सामूहिक होने का जीवन
 प्राप्त हुआ। इस असराम का कर्मण्य उल्लंघन विवरण के ताता
 नेपद हुआ। यह प्रैरागीजी जीवन भूमिकों को बदल
 -मनवीन विवरण यात्रे की रूप-मनवीन को लेकर उल्लंघन आदर्शीय
 हुई है। इस जीवन भूमिका का असराम अद्वितीय स्तरीय ही जी-री-
 फिरनी का जीवन गिरा। लोक असराम अमृतगता के साथ

7183 Apr 2005

105.
After Billings 7/2

परमाणु रिट्रॉक्स वेल-स्प्रे ग्रैड ब्रोडबैंड
प्रॉफेरल.

三國志

१० अप्रैल १९५४
काशी विहार के द्वारा लिखा गया एक अधिकारी का अनुवान है।
इसमें उनकी विवरणों का वर्णन है और उनकी विवरणों का वर्णन है।
उनकी विवरणों का वर्णन है।

સાધુવિ -
અનુભૂતિ -
અનુભૂતિ -
અનુભૂતિ -
અનુભૂતિ -
અનુભૂતિ -

60

मंथन परिवार



बुर्जी पर बैठे हुए - बांये से दायें- श्री विनोद पोदलार, श्रीमती नीतू जैन, सुश्री स्वप्नप्रीत कौर, डॉ. श्रीमती समीहा तिवारी, श्रीमती बरखा खरे, डॉ. राममोहन तिवारी (प्राचार्य), श्रीमती अर्चना शर्मा, श्रीमती अंजली सवसेना, डॉ. श्रीमती शशि सराफ, श्रीमती श्रद्धा शुक्ला, खड़े हुए - बांये से दायें - श्रीमती विद्या कोला, श्री आनंद दुबे, श्रीमती शीबा खान, श्रीमती किरण महोबिया, श्रीमती रश्मि श्रीवास्तव, श्रीमती संगीता श्रीवास्तव, श्रीमती करुमुम पासी, श्रीमती रश्मि दर्वे, श्रीमती सावित्री चक्रवर्ती

**"To stimulate life, leaving it free, however,
to unfold itself, that is the first duty of the
educator."**

- Maria Montessori



◀ scan the QR code for e-balarun

एम.पी.प्रिंटिंग प्रेस, औद्योगिक सहकारी समिति मर्या. जबलपुर : 2409509